CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

स	चं	मं	बु	बृ	शु	र	दिनकावेला	
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३॥	१
कालवे	कालवे	उद्वेगवे	अमृतवे	रोगवे	लाभ	शुभवे	३॥	२
लाभवे	शुभवे	चरवेला	कालवे	उद्वेगवे	अमृत	रोगवे	३॥	३
अमृत	रोगवे	लाभवे	शुभवे	चरवेला	काल	उद्वेगवे	३॥	४
कालवे	उद्वेगवे	अमृतवे	रोगवे	लाभवे	चरवे	शुभवे	३॥	५
शुभवे	चरवेला	कालवे	उद्वे[illegible]	अमृतवे	रोगवे	लाभवे	[illegible]	६
रोगवे	लाभवे	शुभवे	चरवे	कालवे	उद्वेग	अमृत	३॥	७
उद्वेगवे	अमृतवे	रोगवे	ला[illegible]	शुभवे	चरवे	कालवे	३॥	
स	चं	मं	बु	बृ	शु	र	रात्रि	
शुभरा	चररात्री	कालरात्री	उद्वेगरा	अमृतरा	रोगरा	लाभरा	३॥	१
[illegible]मृत	रोगरा	लाभरा	शुभरा	चररा	कील	उद्वेग	३॥	२
[illegible]रा	कालरा	उद्वेगरा	[illegible]	रोगरा	लाभ	शुभरा	३॥	३
रोगरा	लाभरा	शुभरा	चररा	कालरा	उद्वेग	अमृतरा	३॥	४
कालवे	उद्वेगरा	अमृतरा	रोग	लाभ	शुभ	चर	३॥	५
		चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	३॥	६
				[illegible]भ	चर	काल	३॥	७
				शुभ	रोग	लाभ	३॥	८

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ शीघ्रबोध बालतिलक [illegible] लिक मूल
भासयंतं जगद्भासा नत्वा भास्वंतमव्ययं ॥ क्रियते का[illegible]
ग्रहः ॥ १ ॥ टीका ॥ काशीनाथ जो है सो चाहे ने सूर्य को [illegible]
है सूर्य जिनकी आभा जो है संसार सो प्रकाशित है वह कैसे
कहिये अविनाशी जिनको नाही है विनाशकाल ऐसे सू[illegible]
रि ॥ ज्योतिष शास्त्र के अनेक ग्रंथांतर न को [illegible] लिकार [illegible]
यह करते है ॥ १ ॥ मूल ॥ रोहिण्युत्तर रेवत्यो [illegible] स्वाती मृगो[illegible]
वहलम्ब वीवाहे मंगलप्रदा ॥ २ ॥ टीका ॥ [illegible] रोहिणी उत्तरा [illegible] नी
स्वाति मृगशिर मघा अनुराधा हस्त ये ग्यारह नक्षत्र विवा[ह] [illegible] मंगल के दा
ता है ॥ २ ॥ इति विवाह नक्षत्राणि ॥ मूल ॥ माघे धनवती कन्या फाल्गुने शुभगा
भवेत् ॥ वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यंत वल्लभा ॥ ३ ॥ टीका ॥ माघमास में वि
वाह करै तौ कन्या धनवती होइ ॥ फाल्गुन में सौभाग्यवती होइ वैशाख तथा
ज्येष्ठ में विवाह है तो ॥ अपने पति को अत्यंत प्यारी होइ ॥ ३ ॥ मूल ॥ आषाढे कु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

२

शी·टी॰ लवदिग्धाद्य्मेमासाश्चवर्जिताः॥ मार्गशीर्षमपि श्रेष्ठं ति विवाहे केपिकोवि
दा॥ ४॥ टीका॥ जो आषाढमासमें विवाह करै तो कुलकी वृद्धि होइ॥ अने
मासकाहियेः॥ और जो महीने है॥ विवाहमें वर्जित है॥ और मार्गशीर्ष जो है
अगहन सो कोउ एक दुई आचार्य विवाहको शुभ कहत है॥ ४॥ [illegible]
मास॥ मूल॥ आमावस्याचरिक्ताचवारवेला [illegible] स्मारा
श्ववर्जनीयाप्रयत्नतः॥ ५॥ टीका॥ अमा [illegible] और रिक्त [illegible] ४
।९।१४॥ वारवेला और जन्मको नक्षत्र औ [illegible] रवार॥ सां
र्गांडांतमूलये विवाहको यत्नपूर्वक वर्जि [illegible]
रिक्ताः पूर्णाश्च तिथयः क्रमात्॥ वारश्चयं समा [illegible]
है॥ टीका॥ नंदा भद्रा जया रिक्ता पूर्ण ये पांच नाम तिथि
कहिये॥ १।६।११॥ भद्रा काहिये॥ २।७।१२॥ जया [illegible]
५।१०।१५॥ प्रतिपदासे गनिये॥ इति तिथिनाम॥ मूल॥
योमामिनंदने॥ चंद्रपुत्रेपिवमश्च टेवा चार्येण तथा ह

लावकहतेहै रविवारकौ ४ याममें अर्द्धयाम श्रो॥ मूल॥

पगुरवारकौ ८ याम। र्द्ध ७॥ मूल॥ ईसप्रमत्नीयःका

हार्द्धं शुभेकार्येवा रवेलाचक्रख्याते॥ ४॥ [illegible] ॥ ंकौ

इसप्रकारसौ इनयामनकेअर्द्धयाममेंवाररवेलाः वक्रौ रके

अथवाररवेलाचक्रं							
·४	·७	·२	·५	·८	·३	·६	याम
३॥।	३॥।	३॥।	३॥।	३॥।	३॥।	३॥।	घटी
र॰	चं॰	मं॰	बु॰	बृ॰	शु॰	श॰	वार

तहै॥ ६ कामकोठकेचाले श्रेम

रवेला॥ मूल॥ मद्रा [illegible] लि [illegible]

द्राधातिथिंच [illegible] ॥ मीनं

का॥ मद्राशुक [illegible] ॥ वारमी

अत्यमघंटकयोग शुक्रदग्धातिथि अतनदा चक [illegible] अतकु

लिकयोग इतनेदोषयेविवाहमेंवर्जितहै॥ ९॥ मूल॥ दशम्यां च [illegible] या

[illegible] पत्तेपरेदले॥ सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिपूर्वे दले [illegible] ता॥ १०॥ एकादश्यां

चतुर्थ्यां च शुक्लेपक्षेपरे दले॥ अष्टम्यां पूर्णिमायां च विष्टिपूर्वेदलेस्मृताः

११॥ टीका॥ अबकृष्णपक्षशुक्लपक्षकी जोनसीतिथिनमें पूर्वेदलअथवा परदल

२

टी.टी. विषेविष्टीजाभद्राहोतीहै॥ सोचक्रमेंविषेंसमझलीजिये॥ १०।११॥ मूल॥

कृष्णशुक्लभद्रापर्वदलतिथिपत्र			
कृष्णपक्ष	३	१०	पराह्नतिथिः
कृष्णपक्ष	७	१४	पूर्वाह्नतिथिः
शुक्लपक्ष	४	११	पराह्नतिथिः
शुक्लपक्ष	८	१५	पूर्वाह्नतिथिः
इतिभद्रातिथिचक्रम्			

मेषवृषमकरधनकर्कटस्थोकंमाभिमुमकला[illegible]
नलागे॥ कुंभमीनस्थलिके[illegible] मसुविंशति भद्रावि
भुवनमध्ये॥ १२॥ टीका॥ येभद्रावगोले[illegible]स्व[illegible]म
स्वलोक[illegible]पाताल[illegible] मैं[illegible]निवासकरतीहै
मेषवृषकतमक[illegible] श्रीरवि[illegible]मांस्वर्ग
लोकमेंजानि[illegible] रवार॥ श्रा[illegible]
भद्रापाताललोकमैं स्वत्कुंभमीन वृश्चिकजे[illegible]
मैंवासकरतेजानिये॥ १२॥ मूल॥ स्वर्गेभद्रा[illegible]
स्वलोकेयदाविष्टिःसर्वकार्यविनाशिनी॥ स्पति[illegible]
तोशुभकार्यकोंकरे श्रीरपाताल मैंहोय[illegible]
कमेंहोयतोसर्वकार्यविनाशकरे॥ १३॥ मूल॥ [illegible]
स्वर्गेधोमत्ये॥ ऊर्ध्वस्थाखगोमाभद्रासन्मुखेनमशोभ[illegible] प२

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मत्र[illegible]

मथुन

लोकमैमद्राहोयतौसन्मुखकोहयै पातालमै औ[illegible]
इनमैजोसन्मुखमद्राहोयजोमत्सुकीदाताहै॥ य[illegible]
तौरात्रौमद्रायदादिने॥ तदाविष्टियदादोर्ष[illegible]॥ [illegible]कीन
जोकृस्नपक्षमैसप्तमीचौदशकी॥ औरशुक्लपक्ष[illegible]के
वेदलादिवासंज्ञकहै॥ सोरात्रिमैजानियेकेचाले [illegible]
मै॥३॥११॥ [illegible]परदलमद्रारात्रिसंज्ञकहै॥ सोदि[illegible]
येमद्रासुखकीदाताहै॥१५॥ इतिमद्रा[illegible]॥ मीन[illegible]
धौवृषकुंभयो॥ मेषकर्कटयोषष्टी[illegible]मी[illegible]मी[illegible] मिथुन २
केसिंहेद्वादशीमकरेतुले॥ एता[illegible]तिथयोदग्धाःस्युमे[illegible]येन॥१६
टीका॥ मीनकेअरुधनकेसूर्यनमेद्वितीया २ वृषकेकुंभकेसूर्यन [illegible]चौथ ४
मेषकर्ककेसूर्यनमेछठि६ [illegible] मिथुनकेसूर्यनमेअष्टमी[illegible]वृश्चिककेसिंहके
सूर्यनमेदशमी१०॥ मकरतुलकेरविमेद्वादशी१२ इनसंक्रांतिनमे॥ स्नाना
तिथैदग्धाजानिये॥ येसुभकर्मकेविषैवर्जितकरीहै॥१६॥ इतिदग्धातिथयः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूल॥ मासांते दिनमेकं तु तिथ्यंते घटिकाद्वयं॥ घटिकात्रयं च भांते च विवाहे परिवर्जयेत्॥१८॥ इति॥ टीका॥ मासांत कहिये संक्रांतके अंतका एक दिन तिथ्यंत कहते हैं तिथिके अंतकी द्वयं घरी भांत ... हैन नक्षत्रके ... इये विवाहमें वर्जित है॥१८॥ मूल॥ मासांते म्रियते कंन्या तिथ्यंते स्यात् दुश्चारिणी नक्षत्रांते च वैधव्यं विशेषो मृत्युदा भवेत्॥१९॥ टीका॥ मा... ... मास परैतो मास ... कहते हैं॥ कंन्या ... होई तिथ्यं... ... ई नक्षत्रके अंतमैं विधवा होई॥ नक्षत्र ... हहोय तो मृत्यु होय॥१९॥ मूल॥ सूर्ये च सप्तमी सोमे षष्ठी भौमे च ... दे वेदस्पतस्तीया भृगुनंदने॥२०॥ द्वितीया वर्जनीया ... का क्रोह्यिगो यं विवाहादौ न शस्यते॥२१॥ टीका॥ सि... सो चक्रमें समझ लीजियै॥ इन वारनको इन तिथिन कौ ... लिक योग होता है॥२१॥ इति कुलिकयोग॥ अथ वर्गोग... ... वेयो विडालस्याल कवर्गोक:॥ वर्गो ... हनामा स्यात् ...

सप्तमीरविवारे ... ... ने संवर्तक

... रे २

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोवृकरम्मता॥२२॥टीका॥ अवर्गादि अष्टवर्ग
है कौन कहत है जाके नामका जो अक्षर पहिलो कै
यै॥ तिनमे अइउए ये अक्षर चवर्ग है॥ सोगरु
ड ये बिलाव वर्ग॥ चछजझञ सिंहवर्ग॥ टठडढण
सर्पो थ्वतवर्ग पिपवर्गो मूषकस्मृतः॥ यशो
वर्गो मेष निष्ठितः॥२३॥टीका॥ तथदधन पिवर्गो
वर्गः॥ यरलव मृगवर्ग॥ शषसह मेष ३॥मूल॥
अत्र ये मित्रसंज्ञकः॥ उदासीनेतरा य अष्टवर्गो भेदात्
का॥ अपने वर्ग सों पांचई वर्ग तिसै जानिये चौथसों शत्रुता और तामरी
वर्गसों उदासीनता है॥२४॥ अथ एकवर्ग॥मूल॥ अश्विनी मृगरेवत्यो
हस्तपुष्यपुनर्वसू॥ अनराधा श्रुति स्वाति कथ्यते देवतागणः॥३५॥
टीका॥ अश्विनी मृगशिर रेवती हस्त पुष्य पुनर्वसु अनराधा श्रवण
शतभिषा ये देवतागण कहिये॥२५॥मूल॥ तिस्रः पूर्वा उत्तराचार्तिरोप्या

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी.बो. द्रोचरोहिणी ॥ भरणी च मनुष्याख्यो गणे शोकथितो बुधैः ॥ २६ ॥ टीका
पूर्वा तीनों ३ उत्तरा तीनों ३ आर्द्रा रोहिणी भरणी इनमें जन्म होय तो म
नुष्यगण जानिये ॥ २६ ॥ मूल ॥ कृत्तिका च मघा श्लेषा विशाखा शतता
रका ॥ चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृताः ॥ २७ ॥ टीका ॥ कृत्तिका
मघा श्लेषा विशाखा शतभिषा चित्रा धनिष्ठा ज्येष्ठा [illegible] राक्षसग
णहै ॥ २७ ॥ मूल ॥ स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमा[illegible]
योर्मृत्युः कलहो देवराक्षसे ॥ २८ ॥ टीका ॥ [illegible] स्वगुण [illegible]
तौ अधिक प्रीति होइ ॥ देवमनुष्य होय तौ [illegible] ध्यम प्री[illegible]
ह राक्षसगण सो मृत्यु होइ ॥ और देवगण अरु रा[illegible]
२८ ॥ मूल ॥ षष्ठे स्त्रीपुंसयोर्वैरं मृत्युस्स्याद्दशमे ध्रुवं ॥ त्रिक[illegible]
मे पंचमे कली ॥ ३० ॥ टीका ॥ स्त्री की रासि से पुरुष की रा[illegible]
जानिये ॥ और स्त्री पुरुष से आठवें राशि आवै तो मृत्यु [illegible]
ष होय तौ मृत्यु है और दशमें वा रहे होय तो ॥ दरिद्र होइ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंचवेपहोयतोकलहहोय॥३०॥इतिराशिमेलनं॥ म[illegible]
राविप्राःहाजिमेषोहरिर्धनुः॥शूद्रयुगंतुलाकुं[illegible]
३१॥टीका॥मीन वृश्चिक कर्क येरासैब्राह्मणवर्णजा[illegible]
त्रीवर्णहै मिथुन तुलाकुंभ येशूद्रवर्णहै कन्यावृष[illegible]
है॥३१॥मूल॥नौतमामुरहेत्कमाब्राह्मणीचविशे[illegible]
णिश्चब्राह्मणामहशोयदि॥३२॥विप्रवर्णे[illegible]योना[illegible]
भवंभवंतिवैधव्यंशुक्रमप्रदूषितायदि[illegible]॥टीका॥[illegible]
होयतो॥अनपहपहीनवर्णहोयतो [illegible]क॥निश्चे[illegible]ड्रमडम
वर्णकन्यातेविवाहवर्जितहः॥[illegible]ब्राह्मणीविशेष[illegible]हैः॥३२॥
अतजोब्राह्मणवर्णकन्यासे शूद्रवर्णवरकोविवाह[illegible]यतो ओशुकह
कीकंन्याहोयतो सोवीनिश्चयकरविधवाहोय॥३[illegible]॥मूल॥पोष्णादिकचतु
१२ स्पंविषवोमाद्रादिकंचोदशमध्यमांग॥पौरंदराद्यंनवकंकुभवत्रपंचमा
गंगणकोविदः॥३४॥टीका॥रेवतीनक्षत्रआदिदेचहहैनक्षत्रपूर्वभाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ काहियै औरसप्ताद्वादिश्टैकै १२ द्वादशनत्रमध्यभागकेहैं औरख्त्रादि दैकै
धनत्रत्रपरभागकहियेहै ॥ २४ ॥ मूल ॥ पूर्वभागेपति श्रेष्ठोमध्यभागेचकन्यका
परभागेचनष्टात्रे द्वयोप्रीतिर्भवेद्वसौ ॥ २५ ॥ टीका ॥ पूर्वभागीपतिहोई औरम
ध्यभागीस्त्रीहोइतौपतिश्रेष्टकहियै ॥ जोमध्यभागीस्त्री औरपरभागीपुरुष
होयतौस्त्रीश्रेष्टकहियै ॥ औरजो [illegible] दोनौपरभागीहो [illegible] तौ [illegible] यतमैं
प्राधिकप्रीतिहोय ॥ २५ ॥ मूल ॥ सिंहो [illegible] सर्वेद्विप [illegible] लख्यास ॥
मत्स्याजलचराल्लेयामयस्थानेसरीसृपाः ॥ २ [illegible] टीका ॥ सि [illegible] म
सबहैं ॥ औरजीवपरंतुएकसिंहनाहीहः ॥ द्विप [illegible] औरवन
नुष्यकेसबवनमहै ॥ औरजलकेजीवजोहः तेमनुष्यके
सर्पेविछूसोंढ्तीहै ॥ २७ ॥ मूल ॥ मकरस्यपूर्वभागोमेष
ठष्पदाःकीटसंज्ञाकर्केसर्पेश्चवृश्चिकः ॥ २८ ॥ तत्ता [illegible]
धनुषोच्यते ॥ द्विपदैतेमृगार्द्धंतुकुंभमीनौजलाश्रिते
शिकोपाहलाआधाभाग उत्तराषाढकेतीनिचरण [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ण पर्यंत को चंद्रमा: ॥ अथ मेष अथ सिंह ॥ अथ धनु आधी ध
न्ष्यद चौपाद् की संज्ञा जानिये ॥ श्री गरव [illegible] राशा की
संज्ञा है ॥ २४ ॥ श्री रतुला मिथुन कंन्या ॥ अथ आधा धन
र जानिये ॥ कुंभ मीन जलचर जानिये ॥ २५ ॥ इति राशिचक्र

अश्वि	रे.	पु.	रो.	श्रा	पूफा	स्वा	जे.	चि.	उफा	शा.	अभि	पुन	उफा	नक्ष
ध.	भ.	कृ.	मृ.	मृ.	उफा	ह.	अनु.	वि.	पूषा	उषा	जि	श्ले	अ[illegible]	[illegible]
०	०	०	०	०	म.	०	०	०	०	०	ल	०		
घोड़ा	गज	छेरी	नाग	श्वान	पूस	मेसा	हिंदुर	व्याघ्र	वानर	सिंह	[illegible]	बिलाव	गऊ	फ

नीवं [illegible]
रत्ने [illegible]
का [illegible]
मगा: ॥ [illegible] ज्ञा [illegible]

पिस्वान मूषक: फाल्गुनी मघा ॥ मार्जारो दितिरश्लेषा गो [illegible] उत्तरा चर्य
म ॥ महिषो स्वातिहस्तौ च [illegible] ज्येष्टानुराधिका ॥ व्याघ्रो चित्राविशाखा च
श्रुत्वा पाढौ च मर्कटौ ॥ २२ ॥ शतभिषा द्भूपदा सिंहो नकुलश्चा अभिजित्स्मृत: ॥
योनयः कीर्तिता [illegible] वैरं मैत्री विचार्यतां ॥ २३ ॥ टीका ॥ इन चारों प्रकार को ·
कार्थ्य योनिचक्र में सम फल लेना ॥ चौदह योनि को [illegible] ॥ अ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शो॰टी॰ पने अपने कोष्ट कलह होइ॥ इतियोनिविचारनिर्णय॥ अथयोनिवैरं
मूल॥ गौश्वाघ्रगजसिंहमूषकमाहिषंवैरंचवभ..........वैरवानरमेष
कंचरूममहतश्च...........॥ लोकानां.......
..........॥४४॥ टीका॥ गाई.......
वैर हाथी सिंह कौ वैर नवल........कौ वैर वानर मे..........
षकसोवैर ऐसे वैर भाव..........योनि विचार..........
स्त्री पुरुष॥ और स्वामी सेवक को॥ और.........लोकि.......
ल निर्वाह हेतु मं........है॥४४॥ इतियोनि..........
जो........नव पंचम॥ वरस्यपंचमे कन्या.......
त्रिकोण के या हं पुत्र पौत्र सुख.......॥ षडाष्टके.......
विचारयेत॥४६॥ टीका॥ जो पुरुष की राशि ते क.......
६।८ पती तिस वरके पिता की मृत्यु होई और जो.......
मा॰१ की राशि ५ पंचई होय तो ताकी माता की मृत्यु होय.......

न्यदापवस्ता न्याडपत्ता रिद २

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राशिते ५ पंचई राशिकन्याकोहोय ॥ कन्याकी राशितें ॥
यतो यह त्रिकोण शुभ है ॥ पुत्रपौत्रके शुभहै सबकी
आठवेंहोयतौमत्युहोय तातेयलकप्रविचारिये ॥ ४६
ल ॥ वरस्यमाकन्याबलंकन्यायांचगुरोर्बलं ॥ दयोश्चन्द्र
नान्यथा भवेत ॥ ४७ ॥ टीका ॥ वरकोसूर्यवल चाहिये
तिकावलचाहिये ॥ औरवरकन्याको चन्द्रमाकावल
अष्टमेचचतुर्थेच नाद्दश्चे द्दिवाकरे ॥ [illegible] तौवराम
शयः ॥ ४८ ॥ टीका ॥ जोवरकोसूर्य [illegible] होयतौ [illegible]
होय यामेंसंशयनाही ॥ मूल ॥ जन्मन्यथो तृतीयेवापंचम [illegible] मेपिवा
नवमेचदिवानाथेपूजयापाणिपीडनं ॥ ४९ ॥ एकादशेतृतीयेवाषष्ठे
वादशमेपिवा ॥ वरस्यशुभदोनित्यं विवाहेदिननायकः ॥ ५० ॥ [illegible] ॥
जोवरकीराशितेसूर्य ॥ १ ॥ ५ ॥ ९ ॥ होयतौयो [illegible] सो ॥ सूर्य
कीपूजादानजपादिक करकैविवाहशुभहै ॥ ५१ ॥ औरजो ॥ ११ ॥ ३ ॥ ६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०॥ रविहोयतौविवाहशुभकहियेकल्याणकोदाताहै॥५०॥ इतिरवि
बलं॥ मूलं॥ ग्रहमेषाद्येशेवापि चतुर्थेवाबृहस्पतौ॥ प्रजातनूनकते
कांविवाहेप्राणनाशकः॥५१॥ मूलं॥ षष्ठेजन्मनि[illegible]सप्तत्तीये दशमे
पिवा॥ भरिपज्ञाप्रजितस्या[illegible]प्रशुभकारकाः॥५४॥ टीका॥ जो
कन्याकोबृहस्पति॥ ॥४॥३॥१०॥ बड़ोप्रजादानहि देवा[illegible]कीजिये
तौशुभहः॥५५॥ मूलं॥ एकादशौ[illegible]पंचमे[illegible]नवमे
चप्राचार्येकन्यायाःशुभकारकः॥५३॥ टीका॥ जो [illegible]

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	[illegible]
लक्ष्मीप्राप्ति	मनसंतोष	धनसंपत्ति	कलहनाश	ज्ञानवृद्धि	संपत्ति	राजसन्मान	मृत्युभय	धर्मलाभ	मनवांछा	सर्वलाभ	हानिहोय	[illegible]

वोवर्षेहली॥ दशवर्षेभवेत्कन्याततऊर्ध्वंरजस्वल
वर्षमेंगौरीकीअवस्थाजानिये॥ औरनववर्षमेंरोहि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

संज्ञाज्ञानियै ॥ ताकेउपरांत रजवलाकहतेहै ॥ ५ [illegible]
रो वैलं[?]यं रोहिणी भाल्क रम्य च ॥ कंन्याचंद्रवलं [illegible]
५५ ॥ टीका ॥ गौरीकोव्रहस्पतिकावलदेवे रोहिणी [illegible]
यै ॥ श्रीरकंन्याकोचंद्रवल मत्यहः ॥ ५५ ॥ मूल ॥ मू [illegible]
त्मनं स्तोषं द्वितीयके ॥ तृतीये धनसंपत्ति चतुर्थे [illegible]
स्तानव क्षिप्रं षष्ठेसंपत्तिसत्तमे ॥ सप्तमे राजसन्मा [illegible] धं [illegible]
५७ ॥ नवमे धर्मलाभं च दशमे मानसं [illegible] ॥ एकाद [illegible]
हानिमेव च ॥ ५८ ॥ टीका ॥ ध्रुवकं [illegible] श्रीस्वरव [illegible] नकाहे
है ताको रस च क्रमैतमकल्लीजिये ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ अथान्यमतेन वि
शेषाणि ॥ मूल ॥ गुरु विंद्ववें लग्नौ रोहिणी विंदुवलश्री [illegible] लौ ॥ रविविंदु
वलजाकन्याश्रीटालनवला स्मृताः ॥ ५८ ॥ टीका ॥ गौरा जो है ताको व्र
हस्पति चंद्रमा ए तीन ग्रहको वल विचारियै तो शुभ है ॥ ५९ ॥ मूल ॥ जी
वौ जीवाय दातां चंद्रस्य रातां च चंद्रमाः ॥ तेजदाता भवेत्स्वयं[?] मित्रदाता

मर्क ४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰ टी॰ महीसुतः॥ ६५॥ जीवहीनस्ततो कन्या सूर्येहीनस्ततो वरः॥ चंद्रहीनगता
लक्ष्मी स्थानहानि कुजे विना॥ ६९॥ टीका॥ वृहस्पति जीव की रक्षा के
दाता है चंद्रमा धन के दाता है सूर्य तेज के दाता है मंगल भूमि के दाता है
६० वृहस्पति हीन होय तौ कन्या की मृत्यु होय॥ जो सूर्य हीन होय तौ वर
की मृत्यु होय चंद्रमा हीन होय तौ लक्ष्मी नाश होय मंगल हीन होय
तौ स्थान हानि करै॥ ६९॥ मूल॥ गौरीं [illegible] नागलोके [illegible] गौरी
ददेत॥ कन्यां दद्यान्मृत्युलोके सौख्यं [illegible] जस्वला [illegible] गौरी
दान करै तौ पाताल लोक के सुख को प्राप्त होय॥ [illegible]
वैकुंठवास पावै जो कन्या करै तौ मृत्युलोक के सुख [illegible]
मूल॥ संप्राप्ते द्वादशे वर्षे कन्या यो न विवाहिता॥ [illegible] मूल॥
तस्याः पिबति शोणितं ६२॥ टीका॥ जो बारह वर्ष [illegible] पिता
तौ महीना महीना प्रति जो रजस्वला होय उसका [illegible] मूल॥ [illegible]
ष्ट भ्राता को दान करना होता है॥ ६२॥ मूल॥ माता [illegible]

जातिद

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रुद्धिर्न जायते॥ पूजाभिः सकुनेवोपिनस्यात्सनंहयतिर्॥ गौम्र[illegible]
का॥ जो नारहै बारह बर्षकी कंन्याहोयतौ व[illegible]
लगनविचारकै पूजादानकरैं तौ विवाहकीजे॥ ९४॥ [illegible] वल
ताचैव ज्येष्ठमातातथैवच॥ त्रयश्चनयवं यांति[illegible]
९५॥ टीका॥ जो रजस्वला कन्याको देषै माता पिता[illegible]
नरकके अधिकारी होते हैं॥ ९५॥ अथनाडीविचार[illegible]
तके वापि अंतमध्यानि भानि च॥ अश्विन्या[illegible]
रेवत्[illegible]॥ ९६॥ ऊ ढंगावे दरे र[illegible]
ञ्नीनां नाडीचक्रं वदेद्बुधः॥ ९७॥ नाडीदोषस्तु विप्राणां[illegible]
यः॥ गणदोषस्य वैश्येषु योनि[illegible]पादजैः॥ ९८॥ टीका॥ आदिमध्य
त अंतमध्य आदि यापकार अश्विनीते रेवतीपर्यंत मानियै॥ ९९॥ चारर
रेवा वडी और दशरे वोति र[illegible] याही प्रकार सताईस को नाडीच[illegible]
पंडितजन कहते हैः॥ १००॥ नाडी को विचार ब्राह्मण[illegible]चाहियै क्षत्रीगण कौ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ वैश्यकोयोनि शूद्रकोविचारविशेषकरकैचाहियै ॥ ६८ ॥ मूल ॥ एकनाडी
५२ [illegible]नक्षत्रेदंपत्योर्मरणंध्रुवं ॥ सेवायांचभवेद्धानिर्विवाहेचाशुभंभवेत् ॥
६९ ॥ टीका ॥ जोवरकन्याएकनाडीकेनक्षत्रनविषै [illegible]नोकाजन्महोयतो
दोनोकीमृत्युहोय ॥ औरएकनाडीकेवेधमेसेवाचाकरीकरतोहानिहो
य ॥ ६९ ॥ मूल ॥ आदिनाडीवरंहंतिमध्यनाडीचकन्यका ॥ अंतनाडीद्वयो
मृत्युःनाडीदोषत्यजेद्बुधैः ॥ ७०

अ	आ	पु	उ	ह	ज्ये	[illegible]	श	[illegible]	आदि
म	मृ	पु	पू	चि	अनु	[illegible]	ध	उ	मध्य
कृ	रो	श्लो	म	स्वा	वि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अंत

टीका ॥ जोआदिनाडीकावेधहो
यतोवरकोआरिष्टकहै ॥ औरम
ध्यकोवेधहोयतोकन्याकोदूषि
तहै ॥ अंतनाडीकावेधलगैतोदोनोकीमृत्युहोय ॥ ७० ॥ [illegible] मूल ॥ एकन
क्षत्रजातानांनाडीदोषोनगण्यते ॥ अन्यदेपतिवेधे [illegible]
दा ॥ १ ॥ टीका ॥ जोवरकन्याएकहीनक्षत्रकोजन्म [illegible]
षमानियै ॥ औरहीऔरनक्षत्रजन्महोयहोतोविवाहसर्व [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७२ ॥ इति नाडीविनिर्णय ॥ मूल ॥ पंचोर्ध्वरेखाप्रथयेद्वृत्वा पंचतिर्य[illegible] ॥ गौरी[illegible]
द्वयोर्द्वयोः कोणयोर्द्वे द्वे चक्रं पंचशलाककं ॥ ७२ ॥ [illegible]
सादृग्मानि मानि च ॥ ग्रहालेपप्रदातव्याः ये च यत्र [illegible] वल [illegible]
सन्निकटे या वगता भवति प्राणिमा ॥ तत्र तत्र स्थितश्चं [illegible] ॥ [illegible]
कोत्र मेः ॥ ७४ ॥ टीका ॥ पांचरेखा ऊर्द्धकीजे आरु पांच रेखा [illegible] ॥ दयप्द
यरेखा कोननमै धरै तिसको पंचसलाका चक्र कहते हैं [illegible] दे
कै कृतिका आदिनक्षत्र धरिये क्रम सर्वसों ॥ ७४ ॥ जो
लग्नके निकट पर्नो होय ॥ तिस नक्षत्रपरै चंद्रमा च
दियै ॥ इस प्रकार उत्तम मार्ग लोक जो पंडित है सो कहते
हैं ॥ ७४ ॥ मूल ॥ लतापातौ युतिर्वेधो यामित्रं बुध
पंचकं ॥ एकार्गलोपग्रहौ च क्रांतिसाम्यं निगद्यते ॥
७५ ॥ दग्धा तिथिश्चाविचितियादशदोषा महाबला ॥ ए
एतान्दोषान्परित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः ॥ ७६ ॥

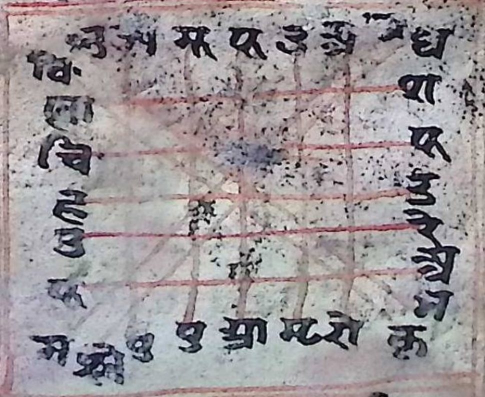

अथ पंचशलाकाचक्रं मू

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टीका॥ सुनदोषकहतेहै लत्ता१ पात२युति३वेध४यामित्र५बुधपंचक६
एकार्गल७उपग्रह८क्रांतिसाम्य९ दग्धातिथि१०येदशदोषमहाबलवान
है॥ इनमैवचाथकेलगनसोधिये॥७५॥मूल॥ नदग्धं [illegible]शंभानुः तृतीयंल
तया कुजः॥ षष्ठं जीवोऽष्टमं मंदो हंति द्वित्रिणनः सदा॥७६॥ वामेनसप्तमं चां
द्रो नवमं सिंहिकासुतः॥ हंति मंदं षष्टुक्रो [illegible]॥७७॥ टी
का॥ जोनक्षत्रकीलातनहोय तेहिनक्षत्रतेदाहिनेगने [illegible] सोम गुरु शनि
ये चारग्रहयाप्रकारलातमारतेहै ओर२३ [illegible] शनि [illegible]
है॥७८॥ ओरवामभागहोकेसातवेनक्षत्रकोबुधलात [illegible]
[illegible] पाछवेकोशुक्र ५ ओरबाईसनक्षत्रको २२ चंद्रमा [illegible]
मूल॥ रविलत्ताहरेद्वित्तंकु[illegible]जस्यकुरुतेमृतिं॥ बृहस्पते [illegible]॥मूल॥ [illegible]कुल
क्षयं॥७९॥ बुधस्यकुरुतेत्रासंलत्तासाहा विनाश [illegible]
नित्यंत्रासदासकलानिधे॥८०॥टीका॥ सूर्यकीलातस [illegible]
मकीलातलगतोमृत्युकरे॥ बृहस्पतिकीलातलगे [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शनिकीलातलगैतौकुलकौक्षयकरै। राहुकीलातलै [illegible] मग
लातदुखदायकहै। चंद्रमाकीलातत्रासदायकहै। [illegible]
है। ७८॥ [illegible]॥ मूल॥ मृगेंदुचित्राचनक्षत्रादि [illegible] ३। [illegible]
धाश्लेषाचित्राचस्वातिराधाचरेवती॥ ७९॥ [illegible]
[illegible]॥ अश्विनीमघाधिकल्याणम् लग्नभाता [illegible] रे। क्षय
के स्ये होई उसीनक्षत्रमेंफेरयानपरेतौ [illegible]
वा चित्रा स्वाती राधा रेवती [illegible] संयोग [illegible]
तिकेपातकहतेहै। [illegible] जैनक्षत्र
पातक हे है ते छोडि करिये। फिर अश्विनी आदि देके फे [illegible] लोगनि
यै॥ ८०॥ जो छोडि नक्षत्र मे [illegible] होय तौ पात दोष लगै॥ इति पात चक्रं
मूल॥ पावकःपवमानश्च विकारःकलहोपरः। [illegible] विशेयोपात
[illegible]॥ ८१॥ टीका॥ अथ छह भाँति के पात नाम लक्षण। पावक १ प
वमान २ विकार ३ कलह ४ [illegible] ५ [illegible] यै छहौ पात [illegible] करते है॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰री २१॥मूल॥पातेनपतितोब्रह्मापातेनपतितोहरिः॥पातेनपतितः
शंभुःतस्मात्पातंविवर्जयेत्॥२२॥टीका॥पातनेब्रह्माकोपतनकरी
औरविष्णुकोपतनकरी॥तातेविवाहमेंपातदोषविशेषकरकेवर्जे
है॥२२॥मूल॥चित्रांगतेपातविचित्रदेशेमेमध्यमालवकेनिषिद्धः
सौराष्ट्रतिचोत्तरदेशजातःसर्वत्रवर्ज्यैचभुजंगपातः॥२३॥टीका॥
चित्रानक्षत्रकोपातविचित्रदेशमेवर्जितहै॥श्रवणनक्षत्रकापातमा
लवदेशमेनिषिद्धहै॥श्लेषाकापातसर्वत्रनिषिद्धहै॥म [illegible]
सोमालवदेशमेवर्जितहै॥औरेवतीजोहैउत्तर [illegible]
लउत्तरमेनिषिद्धहै॥इतिपातनिर्णय॥मूल॥यत्रगृ [illegible] हीय [illegible] कवी
त्रयदाभवेत्॥पतिदोषलक्षणोयोविनाप्रश्नंप्रश्नमा [illegible] ौपरश
ङोहीननक्षत्रकाचंद्रमाहोय॥औरउसीनक्षत्रकी [illegible]
तौतिसकोपतिदोषकहतेहै॥अकेलेभुजंगनाशो [illegible]
शुभ॥२४॥मूल॥रविनाशयुतोह्यनिमौमेवदि [illegible] प

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूलनाशंच राज्ञकेलपनिष्टौ ॥ २५ ॥ टीका ॥ जो म[illegible] मल
यतो हानिकरै ॥ भौम होय तौ मस्तकौं और राज्ञके [illegible] न
लनाशकरै ॥ २५ ॥ मूल ॥ वर्गोत्तमगाते चंद्रे सोच्चे वा मि[illegible] ॥ १६ [illegible] ह होयतो
स्खलनभवेद्दोषो सोम्ययसीमदा ॥ २६ ॥ टीका ॥ जो चंद्रम[illegible] ॥ [illegible] जो वर्ग
वर्गोत्तमै होयतो अथवा उच्च का होय वा मित्र [illegible] धश्री ॥ २६ स
[illegible]कानाशकरै रवी पुत्र देनौ मासवी रहै ॥ इतियतन[illegible] मकाहे ॥
रेवो स्थितिर्वै धो द्विननाद्विमियहै ॥ चित्राहैन[illegible]मास[illegible]तेन[illegible]
यो ६ दाचनः ॥ २७ ॥ टीका ॥ जो नक्षत्र को लग्न है [illegible] और लग्न [illegible] वर्गमे
मर्यादादिकोई यह होयतौ [illegible] वेध कहिये ॥ तौ विवाह भये पीछे ए
कमहीनाके ॥ अंतमै मस्तुकरै ॥ २७ ॥ मूल ॥ अश्विनी रेवतीफाल्गुण्यो म
रणी चाश्लेषयोः ॥ अभिजित्पितोहिएपाकृतिका चविशाखया ॥ २८
[illegible]श्वोत्तरा [illegible]टेज रवोषाढत्तराफाद्र्या ॥ पुनर्वसुश्रवमूलेन लघ्याद्रुधा
स्वक्षेश्या ॥ २९ ॥ धनिष्ठायांत थाश्लेषामघापीपश्रवरोन च ॥ रेवपुतर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

शी.टी. फाल्गुनेपो ह्स्तेनोत्तरभाद्रपात् ॥ ५० ॥ वामाशल [illegible] चित्रायांपूर्वेभ
द्रपात् ॥ विवाहमेता निवर्जोनि विवाहे मान्कोविदै: ॥ ५१ ॥ टीका ॥ स्वाप्निनी
सेउरोरफवोफाल्गुनामेएकरेखाहै ऐसेजोदोनोंउरएकरेखाहोयतौवेध
कहियै ॥ ऐसेहीअठाईसनक्षत्रनकोजानियै येवेधपंचशलाकाचक्रमे
समझलेना ॥ २२ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ मूल ॥ रविर्वेधेचवैधव्यंकुजवेधेकुलक्षयम् ॥
बुधवेधेभवेद्वंध्या प्रव्रज्यागुरुवेधत: ॥ ५२ ॥ अपुत्रीभृगुवेधेच शौरेचंद्र
वेधत: विता ॥ परपुरुषरता राहोर्केतो: स्वच्छंदचारिणी ॥ ५३ ॥ टीका ॥ जो
सूर्यकोवेधलगेतौविधवाहोई ॥ मंगलकोवेधलगैतौ [illegible] यः
बुधकीलातलगैतौवंध्याहोय ॥ गुरुवेधलगैतौसन्[illegible]होय ॥ [illegible]कवी
लगैपुत्रनाशहोय ॥ शनिचंद्रमाकीलगैतौदुखीहोय ॥ [illegible]तौपरपु
रुषगामिनीहोई ॥ ५३ ॥ इतिवेधफलम् ॥ मूल ॥ शनि[illegible]दि[illegible]
जन्मदासंस्थिता: ॥ विवाहिताचयाकन्या मासार्कमादि[illegible]
का ॥ शनिराहुभौमसूर्यइनमैकोऊग्रहविवाहसमै [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तौकंन्या विधवा होय॥५४॥मूल॥ चन्द्रे शं च न दान्त्रेया [illegible] मस
शुभयुक्तं न दिष्टे तिपापयुक्तं च वर्जयेत्॥५५॥टीका॥ [illegible] दश
चौर हैं न दान्त्र परको ऊपर ग्रह होय तो या मित्र कहियै। जो [illegible] मग्रह होय तो
शुभ है ५५॥मूल॥ चंद्र चांद्री मंगु जी चो या मित्रं शुभ कारकाः॥ [illegible]
नर्मदाम्या मित्रेन शुभप्रदा॥५६॥टीका॥ जो चंद्र मास [illegible] बुध शुक्र [illegible] ग्रहस्प
ति शुक्र शुभ जे ग्रह लग्न के चौर हैं न दान्त्र पर [illegible] ग्रह होय तो शुभ कारक है।
शुक्र जो सूर्य शनि राहु केतु होय तो॥ [illegible] तो अशुभ है॥
५६॥मूल॥ चंद्रा हा लग्न तो वापि [illegible] स्त्रमे॥ तत्र स्थिता [illegible] हान्नं ग्र ८ ग्र
व्याधि वैधव्य कारकाः॥५७॥टीका॥ चंद्रमा ते वा लग्न [illegible] न दान्त्र ते सात वे को
ऊर ग्रह होय तो व्याधि करै॥ वि [illegible] रै॥५७॥इति [illegible] दोषाः॥मूल॥ था
[illegible] तिथि मास॥२५॥१२॥२०॥८॥४॥ दशा श्वेदा संक्रांति तौ याति दिनै श्रुव
ण्या ग्रह ही विभक्ताय दिपंचक स्या द्रोग [illegible] त्या गिन [illegible] चौर मृत्यु॥५८॥टीका॥
ग्रव पंचक कहते है तिथि कहियै २५ मास कहियै १२ दश २० ग्रान ८ वेद ४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

शी·टी· संक्रांतिके जो दिन गये होय ॥ तिनको युत करकै ९ नवको भाग दीजिये जो
पांच शेष बचै तो पंचक जानिये एसे ही पांचो चक्र विचारिये रोग पंचक है २५
अग्नि पंचक बारहमे १२ राज पंचक दशमे १० चोर पंचक ८मे मृत्यु पंचक
४मे ॥ ९८ ॥ मूल ॥ यदाके वारे [illegible] रोग पंचके सोम्य वा राजपंचक क्षितिजो अग्निदो
९ नि ४ षः ॥ शौरी च मृत्यु सुरमंत्रि चौरो विवाह काले परिवर्जनीया ॥ ९९ ॥ टीका ॥ र
विवारको जो रोग पंचक लगै तो सोमको राज पंचक लगै [illegible] मंगलको अग्नि
क शनिश्चरको मृत्यु पंचक गुरुवारको चोर पंचक ये [illegible] वर्जित है ॥
९९ ॥ मूल ॥ रोगं चौरं त्यजेद्रात्रौ दिवा राज्याग्नि पंचकं ॥ [illegible]
मृत्युकाले न निंदिताः ॥ १०० ॥ टीका ॥ रोग पंचक चोर ॥ रो[illegible] का है
शुभ है ॥ १०० ॥ और राज अग्नि पंचक दिन मे न कीजिये [illegible]
त्यु पंचक निंदित हैः ॥ और समे मै नहि वर्जित हैः ॥ [illegible]
मूल ॥ सूर्य भात्पंच मे विद्युन्नृत्तं च शूल महत्मे ॥ चतुर्थे [illegible]
दशे तथा ॥ १ ॥ ऊनविंशे भवेदुल्का निर्घातश्च द्विविंशतो ॥ [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंचविंशतिवज्रकः॥ २॥ टीका॥ सूर्यकन क्षत्रते प [illegible]
ईयह होयतौ विद्युदोषलगै औरं ८ आठवे भूल [illegible]
१४ समपातलगौ अठारहे पर १८ केतुकादोषलगौ [illegible]
सपरनिर्घात तेईसपरकंप पचीसपरवज्रदोषलगै॥ [illegible] शील
शक्री विद्युत्पत्सुफलौ विनाशकः॥ शनैःपातो [illegible]॥
कः॥ ३॥ कुलनाशकरी चोल्कानिर्घातो वधु [illegible]
वज्रे ही विभिचारिणी॥ ४॥ टीका॥ [illegible] निर्घा
त भ्राताको घातक है कंपनि [illegible] पावै॥ वज्रदोषलगै तौ ही विभिचारि
णी दोष॥ ५॥ मूल॥ [illegible] शतिसमे [illegible] कृत्वा
कुमीपदैमकर्मभ्रष्टं [illegible] यते॥ ५॥ टीका॥ जोयोगावे [illegible] विषम होय तौ ए
क जो मिये॥ और समसंक होय तौ अठाईस जो मिये तो आधे करिये औषि
[illegible] जो अंक होय सो [illegible] पर लिखिये॥ १५॥ मूल॥ विष्कुंभे चाष्टि
नी देया [illegible] निगद्यते॥ सौभाग्ये च विशा [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शा.टी. युत:॥ ६-६॥ शोभनेकृतिकादेया [illegible] न राधावांङके॥ रोहिणी च स्वकमो-
ख्यो यतौ जेष्ठा [illegible] कीर्तिता:॥ ७॥ गंडेमूलेमूगोमूलेवर्षौ चाद्रोनिगद्यते॥
पू [illegible] वेश्रोता का [illegible] यातेच पुनर्वसु॥ ८॥ [illegible] चोतरा षाढा वज्जेषु
[illegible] प्रकीर्तिता:॥ अभिजिच्चत [illegible] श्लेषा चक्षति [illegible] तके॥ ९॥ वसिया
[illegible] तिर्देयाधारिषेच मघातथा॥ [illegible] वेधनिषादा [illegible] सिद्धोपूर्वो च फा
ल्गुणी॥ १०॥ [illegible] भिषाद [illegible] चोत [illegible]॥ पूर्वो भाद्रपदा
शुतो हस्तो [illegible] कीर्तिता:॥ ११॥ उत्तरा भाद्रपद [illegible] चित्रा [illegible]
यतो॥ [illegible] चंद्रमसौ [illegible] कागे [illegible]॥ १२॥ [illegible]
कोया [illegible] मिस्मृतं॥ योगांके [illegible] यम [illegible] कादे
का॥ एकार्गल चक्रकी [illegible] तानि [illegible] का [illegible]
है॥ योगांके [illegible] जैन [illegible] क हेहे [illegible] चंद्र [illegible]
यतो एकार्गल [illegible] विष्कुंभयोग को [illegible]
[illegible] क मसो चक्र लिखिये योटीका [illegible] सातो [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०८॥१०९॥ ११०॥१११॥११२॥११२॥ इति स्वर्गलानिर्णयः॥ मूल॥ [illegible]
तिसो मध्यो मानलिलिबुधः॥ सूर्यचंद्रमसौ हि षौ क्रांति [illegible] ॥
मीनकन्यक यायुक्तौ मेषसिंहेन संगमः॥ मकरे [illegible]
नेनच॥ २३॥ कर्कनक्र वृश्चिकौ वधौ वघस्वतुल्लंकुंभट [illegible] शीत
होनजीवतिक दाचनः॥ २४॥ टीका॥ तीनरेखा उरवैसो [illegible] ॥
के मध्याकी रेखापर मीनकन्याति रकीपर [illegible]
कै क्रमसो सवलग्ननको धरिकै चक्रबनाइये [illegible] करेखापर [illegible]
यै पहेलो क्रांतिसाम्य दोषकहिये॥ [illegible] जानिये॥ एसे
ही सबराशिनसो वेधचक्रमे [illegible] जिये तुलकुंभसो कर्कवृश्चिकसो
मिथुनधनसो मकरवृषसो [illegible] सो॥ इनराशिनसो परस्पर समक्रक
रक्रांतिसाम्य दोष जिये॥ विवाहादिक [illegible] अनेककार्जवर्जेहै॥ २३॥ मूल॥ क्रांति
साम्यकृतोद्वाहो यदि पाणिग्रहोत्सवे॥ कन्यापै धवतांयाति ईशास्य दृ
हिमायदि॥ २५॥ टीका॥ जो क्रांतिसाम्यमे विवाह होयतो कन्याविधवा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होजाय॥ ईशकहियेमहादेव तिनकीपुत्री होयतोहं॥ १५॥ इतिक्रांतिसाम्य॥
मूल॥ मर्मवेधकंटकश्च शल्यंछिद्रं चलर्धकं॥ पातेभेध चलकं चपरिसाज्यंप्र
यत्नतः॥ १८॥ टीका॥ अबपांचदोषकहतेहै॥ मर्मवेधः १ कंटकः २ शल्य ३
छिद्र ४ इनदोषनकोयत्नकरके त्यागिये॥ यहां एककन्नकी त्रुटि है॥ १८
मूल॥ लग्नेपापेमर्मवेधः कंटकेनवपंचमे॥ चतुर्थे दशमेशल्यं छिद्रं न
वतिसप्तमे॥ १९॥ टीका॥ लग्नकोपापग्रहहोयतो मर्मवेधकहिये औ
रचौथे ४ दशमे १० पापग्रहहोयतो शल्यदोषकहिये॥ औ [illegible]
नमेपापग्रहहोयतो छिद्रदोषजाननानवम [illegible]
यतो कंटकदोषकहिये॥ मूल॥ मरणंमर्मवेधस्या [illegible] का दे
यं॥ शल्यंचनृपतेभीतिः पुत्रनाशश्चछिद्रके॥ २० [illegible] कलग्न में
मेविवाहहोयतोमृत्युजानो॥ औरकंटकमेहोय [illegible]
औरशल्यदोषलगेतो राजकाभय होय॥ जो [illegible]
नाशकरै॥ २०॥ इतिदोषः॥ मूल॥ जन्ममासेजन [illegible] वन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुच॥ ज्येष्टेनज्येष्टगर्भस्यविवाहंकारयेत्क्वचित्॥ २ [illegible]
मस्थराजन्मकानतत्र जन्मकादिन सोप्रथम [illegible] ॥ [illegible]
वाहविषेवर्जितकरैहः॥ २१॥ परंतुजोगर्भकेविषै [illegible]
कमतांतरतेणाधाम्हैहै॥ २१॥ मूल॥ नकन्यावरयो [illegible]
डतं॥ द्वयोरेकतरेज्येष्टेनज्येष्टदोषमावहेत्॥ २२॥ टी [illegible]
तौप्रथमगर्भहोयतौ ज्येष्टमासमें विवाहविशेषक [illegible]
एकज्येष्टाहोयएकनहिहोय॥ तौज्येष्टकेमहीनमें [illegible] हकी [illegible]
हः॥ २२॥ मूल॥ सिंहेगुरौगतेकार्येनविवाहंकदाचनः॥ मेषस्थितेद्विवानः
यौसिंहेज्येष्टशुभप्रदाः॥ २३॥ टीका॥ सिंहकीबृहस्पतिमेंविवाहनहिक
रना केवलमेषकेसूर्यमैंमांहि [illegible] तौशुभफलदायकहै॥ २३॥ मूल॥ रवौ
सार्द्धत्रयोभागाः पंचचंद्रेगुरौत्रयं॥ वेदेषुशुक्रेंदुपुत्रस्यादिक्ष्वाभाणाप्रदायिनी
२४॥ प्रत्येकंसार्द्धभागाश्चमंदमंगलराहुषु॥ ग्रहावलयुताविश्वाप्रयच्छंति
नदुर्वला॥ २५॥ टीका॥ सूर्यके ३॥ भाग॥ चंद्रकेपांचभाग ५॥ गुरुके ३॥ शुक्र

शी·टी· के ४॥ बुधके ४॥ येइनभागनके विषैअशुभहै॥२४॥ औरशनिमंगलराहुके
ल इनग्रहनको ३।६।११॥ ३।६ विषैभागपर्वक॥ जौलौवलिष्ट रहैतौलौअशु
भहै जवक्षीण होयतव निर्मल है॥२५॥ इतिविंशोपकफलं॥मूल॥ केंद्रे
सप्तमहानि चाष्टत्रिकोणे शुभाः शुभं॥ धनेशुभप्रदाः चंद्रपापाः षष्ठेच शोभने
रहै॥ तृतीयैकादशे सर्वे सौम्याः पापाः शुभप्रदाः॥ तेसर्वे सप्तमस्थानेरक्तदा
व रकनमयोः॥२६॥टीका॥ केंद्रस्थान [illegible] हियेलग्न चौथे॥१॥४॥७॥१०॥ लग्नच
तुर्थे सप्तमदशम॥ जो इनस्थानन विषैं शुभग्रह हो यतो [illegible] ष्टहै॥ सकेलेमा
तवें स्थान ३ अशुभ है शुभग्रहकारकै बुधशुक्र वृहस्पति [illegible]
कृष्णपक्षकी पंचमीपर्यंतका चंद्रका श्रेष्ठवली होता है [illegible]
र ४ शुभग्रह है औरसूर्यराहु शुक्लाद्वितीयातें १० प[illegible] का चंद्र [illegible]
यह जानिये॥ भौमशनिकेतु कृष्णपक्षमीते ३० लौ [illegible]
लग्नते २ स्थान चंद्रमा शुभ है पापग्रह लग्नतें २॥ [illegible]
और ३।११ तीसरे ग्यारहे स्थान सर्वे ग्रह शुभ है और [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थानने९है ॥ २८ ॥ इतिफल ग्राग्रह स्ति ॥ मूल ॥ शनि [illegible]
ड्लानेछमेरिपौ ॥ कुजेलानेछमेचाप्तेशुक्रेचकनेछ [illegible]
मैंहिकेघोलग्नेसूर्येचसप्तमे ॥ बुधेछमेचयामित्रेदिव [illegible]
२९ ॥ क्रूरयोरंतरेलग्नेचंद्रंचपरिवर्जयेत् ॥ चंद्रंति [illegible] शील [illegible]
श्वकमर्का ॥ ३० ॥ टीका ॥ शनिसूर्येजोसप्तमहोयसो [illegible]
औरभौम ॥ १ ॥ ८ ॥ ७ ॥ गुरुशुक्र ॥ ७ ॥ ८ ॥ ६ ॥ बृहस्पति ॥ २ ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ ६ ॥ [illegible]
बुध ॥ ८ ॥ ७ ॥ येग्रहइतनेस्थानमैंविवाहदिमैंप्राणनको [illegible] नाशकग्रहहारे
है ॥ क्रूरग्रहमध्यचंद्रमाहोयतो [illegible] हिलानक [illegible] पतीबकोनीकै
वरकोशाघ्रहीमृत्युकोदाताहै ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ इति [illegible] नग्रहस्थिति
यः ॥ मूल ॥ तुलाचमिथुनंकन्या [illegible] धनषोन [illegible] ॥ एतेलग्नशुभानि
तंमध्यमाश्चापरेस्मृताः ॥ ३१ ॥ टीका ॥ तुलामिथुनकन्यावधनकाए
वोहैइतनीलग्नशुभहै ॥ औरलग्नमध्यमहै ॥ ३१ ॥ मूल ॥ लग्नामालववके
देशेपानकृतुज्यांगले ॥ एकार्गलंचवाशमीवेधंसर्वेचवर्जयेत ॥ ३२ ॥ टी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

वी॰टी॰ का॥ त्रता दोष मालव देशमे वर्जनीक है॥ पाता दोष कुरु जांगल देशमे निषिद्ध है॥ एकार्गल दोष काश्मीर देशमे मने है॥ औरखेधघ्न दोष सब

१	म	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध
२	वृ	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं
३	मि	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि
४	क	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
५	सिं	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध
६	क	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं
७	तु	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि
८	वृ	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
९	ध	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध
१०	म	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	क
११	कुं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि
१२	मी	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी

देशमे वर्जित है॥ ३३॥ मूल॥ मेष नवांशमे [illegible] वृषे च मकरादि का॥ त्रता दोष [illegible] मे सब को [illegible]॥ ३४॥ गोलता [illegible] ता॥ घनखोघ्न [illegible] मेषं च मघ्य [illegible] राशि [illegible] [illegible] कोनवांश [illegible] ३४ नवांश [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिंह धन ॥ इन तीनोका पहिला नवांश मेषतें नवयें धन [illegible]
न्यामकर ॥ इन तीनका नवांशा मकर आदि दे कं[illegible] [illegible] ॥ [illegible]
तुला कुंभ ॥ इन तीनका नवांशा तुला आदि मिथुन पर्यंत [illegible] [illegible] ॥ [illegible]
क मीन ॥ इन तीनका नवांशा कर्क आदि पर्यंत मीन [illegible] ॥ [illegible]
ये ॥ मेष तुल मिथुन कंन्या इनका नवांशा शुभ है स्त्री [illegible] ॥ [illegible] अवस्
शुभा मिश्रित है ॥ स्त्री इन वांशा जो है ॥ विवाह मैं मध्यम है ॥ [illegible]
त्रं शस्य पति र शंस्य न्नमिश्रं दाश्रुभे पिवा ॥ [illegible] [illegible]
फला: ॥ ३६ ॥ त्रंशका पति जो ग्रह: नवांश [illegible] [illegible] ॥ [illegible] अवास्था
मीका मित्र हो य वा स्त्री रश्रुभ ग्रह हो य [illegible] ॥ अथवा इनकी दृष्टि
[illegible] हो य तो स्त्री दोष न [illegible] ॥ ३६ ॥ [illegible] ॥ शुक्लाष्टमी समारं
भ फाल्गुण्यस्य दिनाष्टकं ॥ [illegible] कुल [illegible] होलाष्टकं बुधैः ॥ ३७
शतद्रुइरावत्यां [illegible] होलाष्टकं विवाहादौ [illegible]
शोभने ॥ ३८ ॥ टीका ॥ फाल्गुण [illegible] शुक्ल पक्ष की अष्टमी तें [illegible] मात कहैला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिवांधलग्ने त्रिव ह्यापुगस्वोरात्रांधलग्नेत्रिधनायुगाणः शि
वधिरेचकुब्जपकिं इजिवेनाहि दाषज्ञा ता मुनयाविवाहं

शी·बी· ष्टकहीतेहै ॥३७॥ सोशतद्रुनदीकेतीर ॥ श्रीरपिपाशानदीकेतीर श्रीरावत
नदीकेतीर श्रीरपुष्करनदीकेतीर औदेशहैतिनदेशनविषे विवाहादिकजो·
उत्तमकार्यहेसोवर्जितहै ॥३८॥ [illegible] ॥ दिनेशदांधावृषमेष
सिंहाराचौचकन्यामिथुनंकुलीर मृगालितुलालिवांधरोपरान्हेसंध्यासुकु·
जाघटधनमीना ॥३९॥ टीका ॥ दिनमेंयेअंधेलग्नहैं वृषमेष [illegible] तह रात्रिको
अंधे कन्या मीन कर्क अपरान्हमें वहरे मकर [illegible]ल व[illegible] संध्यामें कुबरे
धन कुंभ मीन ॥३९॥ मूल ॥ दिवांधो वरहंमाच रात्र्यांध[illegible]नाशक ॥ कुब
रे वाधिरोलग्नं कुजोवंशविनाशकः ॥४०॥ टीका ॥ दिन [illegible]
होयकेतोवरकी हानिहोय ॥ रात्रिकेअंधेमें ग्रामरे होय [illegible]
और वहरेलग्नमें पाणिग्रह होयतो दुखदायक है ॥ [illegible]
यतौ वंशनाशहोय ॥४०॥ मूल ॥ पञ्चैवकादशोर्धं [illegible]
धूलिकः सविज्ञेयोशेषाधूलिमुखोस्मृताः ॥४१॥ टी [illegible]
माहोय अथवा हसरेतो ससरेहोय सोउत्तमगोधूलिका [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहते है ॥ ४१ ॥ मूल ॥ कुलिकांतस्थसाम्यंचलानेषष्ट...
कल्याज्यः पंचदोषेन दूषितः ॥ ४२ ॥ टीका ॥ कुलिक...
लानको श्रीसकट है श्राठवे चंद्रमा होय लोगोधूलि...
रना लग्न ५ दोषकर दूषित है ॥ ४२ ॥ मूल ॥ यद्वा नास्त...गोध...
लितंनमः ॥ सर्वेमंगलकार्येषुगोधूलिसप्रशस्यते ॥ ४... ॥ टी... अव...
सूर्यअस्तनाहोय ॥ श्रोरगायोकी खुरनकी धूरश्राकाश में... होय...
य ॥ सोवहघरी सकल उत्तम कार्य विषे मंगलकी दाता है ॥ तिसको गोधूली
कहते है ॥ ४३ ॥ मूल ॥ अष्टमेजीवभौमौचबुधार्... मे ॥ लग्नेषष्ठ
हमेचंद्रेतदागोधूलिनाशकः ॥ ४४ ॥ टीका ॥ जो लग्नते... श्राठये मे
भौमगुरु बुध शुक्र ये ग्रह होय श्रथवा लग्नको... श्राठवे ॥ १ ॥ ६ ॥ २ ॥
चंद्रमा होय तो ॥ वह गोधूली नाशक दोष है तामे सर्व कार्य वर्जित है ॥ ४४ ॥
इति गोधूली ॥ मूल ॥ लग्नादेका... लग्नयष्टकराग्रहाः ॥ तृतीयेचाष्ट
मे सूर्ये सूर्येपुत्र श्रश्रशोभने ॥ ४५ ॥ चंद्रे धने तृतीये च कुजषष्ठे तृतीयके ॥ ३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ धीजौ नवषट् द्वि त्रि चतुः पंच दशास्थितौ ॥ ६ ॥ शुक्रं द्वि त्रि चतुः पंच षष्ठमेकमे
तनुस्थिते ॥ राहुर्दैशाष्टषट्पंच त्रिनवस्थः शुभप्रदः ॥ ४७ ॥ टीका ॥ लग्नतें रा
शि स्थानमें ग्रह शुभप्रदः पृथकतौ हैं ॥ श्री १।२ सूर्य मंगल शनि ॥ ३।५ ॥ श्री च
न्द्रमा ॥ २॥३॥ श्री भौम ॥ ३॥६॥ श्री बुध बृहस्पति ॥ [illegible] ॥ २॥३ ॥ ५ ॥ १० ॥ श्री
शुक्र ॥ २॥३॥४॥५॥९॥१०॥११॥ इन स्थान मैं शुभप्रदः ॥ श्री राहु केतु ॥ १० ॥ ६ ॥
३॥५॥३॥९॥१२॥ इतने स्थानन मैं शुभ फलदायक हैं ॥ ६ ॥ इति ग्रहा
दौ शुभकरा ग्रहाः ॥ मूल ॥ छायापादैरसोपेतैः एकादिः शरामजेत् ॥ लब्धावे
घटिकाज्ञेया शेषांके च पलास्मृताः ॥ ४७ ॥ टीका ॥ अब दिन नापवे [illegible] कहै
तहैं ॥ अपनी छाया तीलकी अपने पाउकरना पिये ॥ [illegible] छाया है [illegible]
मे ६ श्री रमिलावे फिर एकसे इकईस में ॥ २१ तलन के [illegible]
ये सो घरी दिन जाने ॥ जो चटतहा यतो बटना जाने श्री [illegible]
बचै तिन भाग प्रमाण अंकन पर फैलाइ के पलक [illegible]
४८ ॥ इति दिन घटिका पला ज्ञान ॥ मूल ॥ [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रेवती। विशाखा च यदा मध्ये लदा पादं दृमोदय॥ ४८॥ [illegible]
एवं सप्तहीनं च शेषकं॥ द्विगुणं च द्विहीनं च गतानां [illegible]
के मृगशीर्षं च मूले च नवमोदयः॥ अनुराधं च यदा मध्ये [illegible]
४९॥ टीका॥ अब रात्रिगत शेष निर्णय प्रवीण [illegible]
ती। विशाखा। इन नक्षत्र मे कोउ नक्षत्र माथे पर होय तो [illegible] वे नक्षत्र [illegible]
य जानिये॥ ४५॥ और जो नेन नक्षत्र का समये होय [illegible] जो [illegible] शिप र होय ता
को गनि लीजे॥ पुनि सात का भाग दीजे शेष बचे [illegible] नामे [illegible] घड़ी
ये॥ जो रात्रिगत गत वा भोग्य जानिये॥ ४७॥ और [illegible] माथे पर होय तो
नवये नक्षत्र का उदय जानिये॥ और जो कहे तिन मे [illegible] के का कहिये॥ ५१॥ इति
रात्रिज्ञानं॥ मूल॥ किं कुर्वंति ग्रहाः सर्वे यस्य केंद्रे बृहस्पतिः॥ मत्तमातंगयूथानां
शतं हंति च केशरी॥ ५२॥ टीका॥ जो और सकल ग्रह अरिष्टक होय तो क्या कर
सके है॥ जो केंद्र स्थान बृहस्पति [illegible] होय॥ १। ४। ७। १०। इन भावन मे तो जै
से सैकडो हाथी का समूह मे॥ सिंह [illegible] सोह लिडार [illegible] ग्रह जनित अरिष्ट

शी॰टी॰ नकोनाशकरै ॥५२॥ मूल ॥ शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दश शतानि च ॥ लग्नमेकं
लदोषाणां गुरुर्लग्ने अपोहति ॥५३॥ टीका ॥ जो लग्नमें शुक्र होय दश हजार दो
षनको हनै ॥ श्री बुध तेहजा ग्रुरु तेल दोष हरै ॥५३॥ मूल ॥ परिघार्द्धं व्यती
पातं वैधृतं सकलं त्यजेत ॥ विष्कुंभे घटिकाः पंच शूले सप्त च कीर्तिता ॥५४॥ षट्गं
डे चातिगंडे च नव व्याघात वज्रयोः ॥ [illegible] जो लग्नमें सदा बुधैः ॥
टीका ॥ अब नव योग निषिद्ध है तिनको [illegible] जो है परिघ की घडी ३० व्य
तिपात वैधृत संपूर्ण त्याग करै विष्कुंभकी ५ शूलकी घडी ७ त्याज्य ये ६ गंड और
गंड अतिगंडकी घडी ६ व्याघातकी ८ वज्रकी ९ [illegible] शुभकार्यनमें ॥ [illegible] ॥
व्यतीपाते भवेन्मृत्युः गंडांते मरणं ध्रुवं ॥ अग्निदाघो भवे [illegible] गंडे च [illegible] ॥
के ॥५६॥ वैधृत्यां वैधृतौ चैव विष्कुंभे कामचारिणी ॥ [illegible]
मृतवत्सकः ॥ परिघे च भवेदासी मद्यमांसरतः सदा ॥५७॥ [illegible]
वाह करे तो मृत्यु होय ॥ अरु गंडांत मूलमें करै तो व्है [illegible]
गंडमें रोग होइ ॥५७॥ वैधृतमें वैधव्य होय विष्कुंभमें क [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धातक्षयहोय॥ आघातमें मृतवत्सा होय॥ बालकमा [illegible]
राई दासी होय॥ अतमांसमहिरादिकसेवन करै॥ ५८॥ [illegible]
पद्माकारं लिखेचक्रं मष्टकोणसमन्वितं॥ पश्चिमे दले [illegible]
मत्रयं॥ ५९॥ त्रयस्त्रयश्च सर्वत्र ततःपूर्वादितो लिखेत्॥ [illegible] स्तीथं॥ [illegible]
क्षयविनाशनं॥ ६०॥ पूर्वस्थाने भवेल्लक्ष्मी धनधान्यसम [illegible]॥ आग्नेय [illegible]
वेन्मृत्युः नारीकुलविनाशिनी॥ ६१॥ दक्षिणे दुर्भ [illegible] नारी दारिद्र्यं मृत्यु [illegible]
तु॥ नैरृते पुत्रलाभश्च सर्वसौभाग्य मेवच॥ ६२॥ पश्चिमे [illegible] धवा केन्याबायव्ये
व्याभिचारिणी॥ उत्तरे धनधान्यानां ईशाने [illegible] पदा॥ ६३॥ मंगलं सर्वकार्ये
षु पद्मचक्रं विचारयेत॥ गर्गाचार्येण [illegible] सर्वसिद्धिप्रदायकं॥ ६४॥ टीका
पद्माचक्रस्य ऐकेन तत्रते दिनके नक्षत्र लीगनियेउ नमध्य के कोठा मे ३ धरि
ये ऐसेक्रमतें पूर्वादि दिशानमें तीन ३ तीन ३ नक्षत्र आठौ दिशानमें धरिये
जोन दिशानमें दिनकान क्षत्रपरै ताको फलकहिये पूर्वेहोयतौ लक्ष्मी धन
धान्यहोय १ आग्निमें मृत्युकुलविनाश २ दक्षिण मेंगार्भिणीनारी मृत्युः ३ नै० पुत्रला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

२१

शी॰टी॰ नसौभाग्यसुख ४ पं॰वैधव्यहोय पंचा॰ व्यभिचारिणी ६ तु॰ धन धान्यसुख ७ ६॰

सुखसंपदा होय॥ ७॥ प॥६०॥६१॥६२॥६३॥६४॥ इतिश्रीकाशीनाथकृतौ शीघ्र

बोधविवाहप्रकरणं॥१॥ मूल॥ धान्यकुंभेहयाम्मेनंश्रुतियुग्मंकरत्रयं॥ पुन

र्वसुद्वयंपुष्यामूलंचाप्युत्तरात्रयं॥१ विष्णुमेनत्समेमासे सौम्येवफाल्गुणे॥ म

करेमिथुनेमानितुलानक मातुलाधनः॥ भौमार्कीवर्जितावाराः संतेचाद्विरा

गमेः॥२॥ षष्ठीरिक्तामादृशी वज्रमावास्या [illegible] वर्जिताः॥३॥ टीका॥ रो॰म॰श्रवि॰ड

नु॰श्रु॰ध॰ह॰चि॰स्वा॰पुन॰पुष्य॰मूल॰उ॰३ इतनेनक्षत्रद्विरागमनकोश्रेष्ठहै॥ जो

रविवाहतेऊनवर्षेमागाहनफाल्गुण॥ वैशाखयेमास हैं मकर मिथुन [illegible]

न्या तुला धन॥ येलग्नश्रेष्ठहै शुक्रमंगलशनिवार॥ रिक्ता [illegible] येवर्जि

तिद्विरागमनं॥ मूल॥ आर्द्रात्रयंमाद्वयुग्मंमघाः पूर्वाफा [illegible]॥ मूल॥

तःसूर्योभौमेरिक्ताविनातिथिः॥४॥ आदेवद्वये त्रयेमासेल [illegible] कौ

चापेपुंसवनंकुर्यात्सीमंतंचाष्टमेतथा॥५॥ टीका॥ आर्द्रा [illegible]

म॰रे॰ह॰मृ॰पु॰षा॰ उ॰षा॰ इतनेनक्षत्रनमेसीमंतजोसुन [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घातनयहोय व्याघातमेमनवस्सा होय वालकमहि...
रविमंगलवृहस्पतितिथेरिक्ता॥४।९।१४॥येवाजेलहै ...
३॥मासरुत्रीग॥२।५॥११॥१२॥येलग्नलीजे॥रुत्र्यगमें...
ननदानस्थिरनानिमितकीजे॥ ...मंत्र... कीजे॥५॥इ...
मवनसीमंतकर्मविरूध्प्रज्ञा॥मूल॥शुभेत्रिकोणेकेंद्र... येवहै त्रि
दे॥टीका॥जोत्रिकोण॥९।५॥केंद्र॥१।४॥७॥१०॥इनस्थानमेंसोम... २
२॥है॥११॥इनमेपापग्रहहोयतौ॥जोइन्हीसेप्रर्मनकरैतौसंतानन होई ५।
जीवीसंघीलनेवजोहै॥६॥इतिगर्भाधानम्॥मूल॥पुनर्वसुदवयेहस्तत्रयं
मैत्रेद्वयेमृगो॥मूलोग्निराधनिष्ठासु॥ःदाद्शेकादशेदिने॥७॥अन्नत्राधिप्रशुभे
योगेवारेवुधशशांकयोः॥भानौगुरोस्थिरेलग्ने वालनामकृतःशुभः॥८॥टी
का॥पुन॰पुष्य॰ह॰चित्रा॰स्वातिः॥अनु॰ज्ये॰मूल॰उत्तरा॰३ध॰येनक्षत्र चोर ११
१२॥दिन॥चं॰वु॰वृ॰र॰॥येवारस्थिरलग्नमेवालककोनामधरियै॥८॥इतिना
मकरणम्॥मूल॥मैत्रत्रयेहरिकेंद्रेचित्राधर्मेदेदितिद्वये॥स्वातिहस्तोत्तराषाढे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पक्षार्धे मह येष्वच॥ ९॥ सिंहत्रयेष्व [illegible] लग्ने मा[illegible] यो: स्व चलर्थयो:॥ यात्रा तिथौ
च निष्काम्य शिशु नैवा[illegible]के भौमयो:॥ १०॥ टीका॥ ऽन॰ ज्ये॰ मू॰ श्र॰ ध॰ रो॰ पु॰ पु
[illegible]॰ स्वा॰ ह॰ उ॰ षा॰ रे॰ मृ॰ षा गण्डे॥ इन नक्षत्रमें॥ सिंह कुंभा तुल कुंभ॥ श्रावस्ती
सरे चौथे मासमें शुभतिथि॥ येयात्रा [illegible] कहीहे॥ तिनमे बालकको नक्षत्र दर्शी
नकरावे भौम शनिवार वर्जितकरे हैं॥ [illegible] निवालनिष्कासनम्॥

पुनर्वसु हस्त येचित्रा विशाखा मरणीद्वयं॥ मूल आर्द्रा [illegible] याहेया श्रवणो दशाम
स्तथा॥ ११॥ सोमशुक्र बुधा रीश्च प्रशस्ता नानकर्मणि॥ [illegible] प्रतिपदा षष्ठी नवमा
व तिथिस्त्रय:॥ टीका॥ पु॰ पुष्य॰ चि॰ वि॰ भ॰ कृ॰ म॰ [illegible] येलग्नो श्र॰ ध॰ [illegible]
रे॰ श्र॰ येवर्जित हैं॥ श्री रसोम शुक्र बुध शनि येवर्जित [illegible]॥ [illegible]
विरुद्धहे॥ इनमे वस्त्रतिलोनन हिकरना॥ इति [illegible] नकरना [illegible]
स्तादि पंचके छिद्रमें धनिष्ठायां चरेवती॥ १३॥ [illegible] बुधे [illegible]
वर्ध॥ १४॥ लग्ने मीन श्चक न्यायां मिथुने च वृषभ [illegible]:॥ पुष्य [illegible]
रेमेशुभ॥ १५॥ टीका॥ ह॰ चि॰ स्वा॰ वि॰ ऽन॰ ऽश्वि॰ ध॰ रे॰ पु॰ [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध धन शुक्र लग्न मीन कन्या मिथुन वृष ॥ एतेमहूर्ते [illegible]
वधारणकरावै तौ श्रेष्ठ है ॥ २४ ॥ इति श्रीवस्त्रधारण [illegible]
रेवत्यो मूलं स्वातिमान राधयोः ॥ धनिष्ठा चत्रयोपूर्वो उ[illegible]
एतेयत्रागतामानि ग्रस्तवि स्नानकोविदैः ॥ वारे भौमार्के [illegible] मध्य
म देवहि ॥ २६ ॥ टीका ॥ अथ प्रसूति स्नान विशेषणं च पु[illegible] सूती [illegible] मूलेयो
हि पूजन महूर्त कहते हैं ॥ रे॰ उ॰ ३ रे॰ मू॰ स्वा॰ ऽ न॰ धन॰ उ॰ ३ [illegible] ॥ २५ ॥ [illegible]
त्रत्याणि के जे वा की रहे ते ली जिये ॥ और भौम शनि रवि गुरु ये वार शुभ है ॥ प्र
सूती स्नान कराइये ॥ विशेषक रवे शुभ है ॥ २६ ॥ इति प्रसूतीस्नान ॥ मूल ॥ म
लादितिध्रुवंयुग्मा सं श्रवणाश्व मृगाःक[illegible] ॥ [illegible] वेनेहि या शुक्रार्मदाकम
मि[illegible] ॥ २७ ॥ टीका ॥ मू॰ पु॰ पु॰ घ॰ अ॰ म॰ [illegible] ॥ धननक्षत्र [illegible] जो रहे सो नक्ष
त्र और शुक्र शनि भौमवार इन विषै प्रसूता स्त्री को कूपका पूजन उत्तम है ॥ २७ ॥ मू
ल ॥ नवान्नभोजने ग्राह्यं वस्त्रे प्रोक्तं मशेषतः ॥ वारा यद्वो सूर्य भौमौ नक्षत्र श्रव॰
सौम्याः ॥ २८ ॥ टीका ॥ नयेअन्नके भोजन [illegible] हि सो यवी ये शोनक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी.टी. विवाहकोवर्जैहः॥ श्रवण मृगशिर नक्षत्र रविसोमवारयेवस्त्रके मुहूर्तेतेन
वान्नभोजनकोअधिकलियेहै॥२८॥इतिनवान्नभोजनं॥ अथवस्त्रधारण
मुहूर्तम्॥मूल॥ आद्यान्नप्राशनेपूर्वोक्तंधिष्ण्यंवरणीयमः नक्षत्राणिपरित्य
ज्यवारेभौमार्कयोर्दिने॥२९॥ द्वादशीसप्तमींरिक्तापर्वनंदा चवर्जिता॥लग्नेवृच
ऋषेयाश्चवृषककन्याचमन्मथः॥३०॥ शुक्लपक्षेशुभेयोगेसंग्रहेशुभचंद्रमाः॥
मासेषष्ठाष्टमेपुंसांस्त्रीणांमासमपंचमे॥३१॥टीका॥ अथबालककेअन्नप्राशन
कामुहूर्त॥इतनेनक्षत्रादिकवर्जितकहेहै ए.३ पू.भ.श्र.श्ले.आ.श.ज्ये.मू. शनि भौमवार ४
९ श्रीम १२॥७॥८॥४॥१४॥३०॥१६॥११॥ येतिथैअतव्यतिपातयोग इतने [illegible]
मीन मिथुन वृष कन्या इतनेलग्नलीजे॥ औरशुक्लपक्ष [illegible] शुभमहो [illegible]
जै अनशुभचंद्रमाहोय पुत्रकूअन्नप्राशनछटेहै मास [illegible]॥ [illegible] कन्याकूं
पांचवेमहीनामेंकीजिये॥२९॥३०॥इतिप्रथमान्नप्राशन [illegible]
योऽज्येष्ठाम्रगौचश्रवणत्रये हस्तत्रयेचरेवत्यांशुक्लपक्षे [illegible]
गोस्त्रीधनःकुंभमकरेमन्मथस्तथा॥ सोमवारेशुभयोः [illegible]
[illegible] लग्नेषु [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२३॥टीका॥ श्रवणं इनको मुहूर्त कहते हैं॥ पुनर्वसु पुष्य मृ[illegible]
धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाति रेवती येनक्षत्र शुभ प्रशस्त पक्ष मे [illegible]॥ [illegible]
में॥२२॥ औ र वृष कन्या कुंभ धन मकर मिथुन येलग्न में [illegible]
र॥ इतने लग्न मे वस्त्र पहरे: औ जन्म को मास रिक्तातिथि [illegible]
वर्जे है:॥ छात्रचूडाकर्म॥ मूल॥ हस्तत्रये हरिद्वंद्वे पूर्वाण्के [illegible] चलेत॥ मूलेपौ
ष्णेचनक्षत्रे बुधेके गुरुशुक्रयो:॥२४॥ देवोत्थाने मीने चापे [illegible]
विद्यारंभे त्रिवर्गोश्च षष्ठिनाध्यायरिक्तका॥२५॥टीका॥ [illegible] द्यारंभ का मुहूर्त
कहते हैं॥ ह॰ चि॰ स्वा॰ श्र॰ ध॰ पू॰ ३ मू॰ श्ले॰ आ॰ पुन॰ पुष्य॰ [illegible] रे॰ वार॰ बु॰ गु॰ शु॰॥ ये
शुभ हैं॥ २५॥ मूल॥ रिक्तायांच अमावस्यां प्रतिपत्ख्यि विवर्जयेत्॥ बुधेर्के वासरे मृ
त्यौ शनिभौमे मतप्रद:॥२६॥टीका॥ ४॥ ३०॥ १॥ ९॥ ८॥ १४॥ ये तिथै वर्जित है॥
औ रवि बुधचंद्र वार मे विद्या करे तो मृत्यु होई॥ शनि भौम वार मे करे तो मत्यु होई
२६॥ मूल॥ विद्यारंभे गुरुश्रेष्ठो मध्यमौ रविभार्गवौ॥ बुधेंदुष्ठोपविद्याया शनि
भौमपरित्यजेत्॥टीका॥ विद्यारंभ को गुरुवार श्रेष्ठ है: शुक्र रवि वार मध्यम है:

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ बुधसोमगुरु विद्यारंभकोकहतेहैं शनिभौमवर्जै है ॥ २७ ॥ इतिविद्यारंभमु
हूर्त्त ॥ पूर्वाषाढाश्विनी हस्तत्रये च श्रवणत्रये ॥ ज्येष्ठामाघामृगो पुष्येरेवत्यांचो
त्तरायणे ॥ २८ ॥ द्वितीयायांतृतीयायांपंचम्यां दशमीत्रये ॥ सूर्येशुक्रगुराचार्ये
वारेचंद्रेतथासिते ॥ २९ ॥ लग्नेवृषधनुःसिंहेकन्यामिथुनयोरपि ॥ व्रतबंधश्च
मेयोगेब्रह्मदत्तविविशोभवेत् ॥ ३० ॥ पापो भौम शनि केतुः क्रूरग्रहः रविलया ॥
सौम्यसोमबुधश्चैवगुरुशुक्रौतथैवच ॥ ३१ ॥ टीका ॥ अबयज्ञोपवीतकामुहूर्त्त
कहतेहैं ॥ पू॰षा॰ अश्वि॰ ह॰ चित्रा॰ स्वा॰ श्र॰ ध॰ श॰ ज्ये॰ मा॰ मृ॰ पु॰ रे॰ ॥ उत्तरायणसूर्यमेंगुरुगुरु महः शुक्र ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ [illegible] तिथि [illegible] हैं सो
र रविगुरु शुक्र येवार शुभ है ॥ शुक्लपक्षश्रेष्ठ है ॥ सो रव [illegible] सौम्य
न येलग्न श्रेष्ठ है ॥ अन्न शुभयोग होइ इनमें ब्राह्मणचारि [illegible] लग्नकह
वर्णको यज्ञोपवीत दीजिये औ रवह [illegible] मेवारि है वेस्त [illegible]
रहे ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ इतियज्ञोपनयनं ॥ मुहूर्त्त ॥ श्रुतिस्वरे [illegible]
रे ॥ नगो विधियुगे मूलेपूर्वाश्वेषौ सौम्यवारके ॥ ३२ ॥ द्विलग्ने ॥ [illegible] तीसरे [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रशस्यते॥ चैत्रपौषहरिस्वापंवर्षेचयुगलंत्यजेत् ॥टीका॥ [illegible] ॥ [illegible]
अ·घ·श·पुन·पुष्य·चित्र·ह·उ·३ पू·मू·रे· येनक्षत्रशु·श्रो [illegible] पुष्य [illegible]
है॥ ओरमिथुन कर्क धन कुंभ मीन चैत्र ओर पौष आषाढ [illegible]
मेंहै॥ ३३॥ इतिकर्णवेधः॥ मूल॥ पूर्वाषाढोदितिर्हस्तचित्राः [illegible] ॥ [illegible]
फाल्गुनीहस्तत्रयंमूलंचरेवती॥ ३४॥ मैत्राश्विनी चलानीतिपि [illegible] टौवृष
मिथुनंमकरोयासोवालकर्मणिकोविदैः॥ ३५॥ श्रावणे [illegible] तिके
फाल्गुणेतथा॥ मासेषुमार्गशीर्षेषुवालकर्मणिशस्यते॥ ३ [illegible] वज्रव्याघातशूल
नित्यतिपातश्चगंडकैः॥ विष्कुंभपरिघोवज्रोवारैभौमशनीश्च [illegible] ॥ ३७॥ टीका॥ पू
र्वाषाढपुनर्वसु·रो·म·अ·ध·श·उत·फा·ह·चि·स्वा·मृ·रे·[illegible] शुभहै॥ सिंह
कन्या कुंभ वृश्चिक मिथुन मकर येलग्न॥ ३८॥ आषाढ वैशाख कार्तिक फाल्गुन
येमासशुभहै॥ ३९॥ वज्रव्याघात शूलव्यतिपात अतिगंड विष्कुंभ परिघयेयोगव
र्जितहै॥ मं·श·येवारवर्जेहैयामुहूर्तहैमें गर्वानकोनीउधारिये॥ ६॥ इतिवालकर्म
मे॥ मूल॥ आर्द्राशतभिषाश्लेषाविशारव्यामघाणिकयम्‌॥ स्याद्देपौचद्वादशीरिक्ताष

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ चंद्रतयोष्टमी ॥ ३८ ॥ इतिपञ्चतिथौवारे त्याज्यौशनिकुजौतथा ॥ मूर्तिदेवप्रतिष्ठायां
स्थिरलग्नोत्तरायणे ॥ ३९ ॥ टीका ॥ अववापीकूपतडाग बागकोमहूर्तकहतेहैः ॥
भौरहस्तकूपादिकनकीप्रतिष्ठाकोयहमुहूर्तहैः ॥ आ॰शा॰ज्ये॰ वि॰म॰कृ॰ येनक्षत्र
कार्यविषेवर्जेहैः ॥ ४ ॥ ९ ॥ १४ ॥ ६ ॥ ३० ॥ ८ ॥ १ ॥ येतिथवर्जेहैः ॥ शनिभौमवाररु
नमेंदेवालयादिकप्रतिष्ठामाहीकर्तव्यहै ॥ स्थिरलग्नमें औरउत्तरायणसूर्यमेंकी
प्रतीष्ठा जिये ॥ ३९ ॥ इतिदेवालयवापीकूपतडागादिप्रतिष्ठा ॥ मूल ॥ विशाखाभर
णी ज्येष्ठाश्लेषापंचमघातथा ॥ आमावास्याचरिक्ताचवारौभौमरवीतथा ॥ ४० ॥ ग्रह
प्रवेशेचैत्रस्यपर्वाषाढचकीर्तिताः ॥ आर्द्रानक्षत्र ॥ स्थिरलग्ने [illegible] पदेबुधैस्सितः ॥
टीका ॥ अबप्रवेशकोमहूर्तकहतेहैः ॥ वि॰भ॰ज्ये॰म॰ येनक्षत्र [illegible] हैः ॥ अमाव
स्यारिक्तातिथिमंगलरविवारयेदोऊवर्जितहैः ॥ [illegible] औरवृष
सिंहवृश्चिककुंभयेस्थिरलग्नमें औरशुक्लपक्षमेंउत्तमगो [illegible] कार्य
ग्रहप्रवेशः ॥ मूल ॥ अनुराधाचरुणंचमघादितिष्यौकरे [illegible]
त्यामनराविद्यं ॥ ४२ ॥ गोश्चीरुषिहलेकार्येहयाश्वेशनिकुजे [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वितीयाद्ययपर्वच ॥४३॥ त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिःपंचभिस्त्रिभिःपंचत्रिभिर्द्धयं ॥ सूर्यभात् [illegible]
र्भंजावृद्धानिवृद्धिहलचक्रमात् ॥४४॥ टीका ॥ स्व·उ·मृ·[illegible] म·पुन·पुष्य
श्रव·रो·म·रे·उ·२ येनक्षत्रहलकर्मकोश्रेष्ठहै ॥ श्रीरसूर्यके [illegible] दोजनेछिन्नके [illegible]

अथहलचक्रम्

३	३	२	
[illegible]	५	५	
	३	३	३

लोकमतेहलचक्रमेसमझलीजीये ॥ श्री [illegible] लिखागलनार
श्रीर ६ १ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥ १२ ॥ २ ॥ ३० ॥ ४३ ॥ ये [illegible] श्रीरव्यतिपात
योगइतनेसर्वेवर्जितहै प्रथमहानि [illegible] वृद्धि फिरहानि
याहीप्रकारगानिये ॥ ४४ ॥ अथहलप्रसवकामुहूर्त ॥ मल ॥ श्र
वणाधात्रयंहस्तह्यमास्त्रौचादितिद्वयं ॥ यात्रायांरेवतीनिं शास्ता
द्वाह्यामरणीद्वयं ॥ मघात्रयंविशाखाचसर्पोश्वाम्यचमध्यम ॥ षष्ठीरिक्ताद्वादशी
चपर्वणीचपर्ववर्जयेत् ॥ ४६ ॥ लग्नेकन्यामन्मथश्चमकरश्चतुलाधरः ॥ यात्राव
द्वलेकार्येशकुनंचविचारयेत् ॥ ४७ ॥ टीका ॥ अथयात्राकामुहूर्तकहतेहैं ॥
स्व·उ·मृ·ह·म·श्र·पु·पुष्य·रे· येनक्षत्रशुभहै श्रीर ६ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥ १२ ॥ ३० ॥ १५
येतिथवर्जितहै श्रीरव्यतिपातत्यागके ॥ क·मि·तु·म·येलग्नशुभहै चंद्रबलश्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ रसगुणविचारकै यात्राकरियै ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ अथदिशानिषेधं ॥ मूल ॥ शनौचं
द्रे समजेत्पूर्वं दक्षिणस्यां दिशं गुरौ ॥ सूर्ये शुक्रे पश्चिमायां बुधभौमेतथोत्तरे ॥ ४८ ॥
टीका ॥ शनिसोमवारकोपूर्वमें दिक्शूल है ॥ ताकालेन्न्यवन चलिये और गुरुवा
रकोदक्षिणमें रविशुक्रवारकोपश्चिममें और मंगलबुधवारकोउत्तरमें दिशाशू
लजानियै ॥ मूल ॥ सर्वादिग्गमनेहस्तश्च पुष्यश्रवणो म.ग ॥ सर्वेसिद्धिकरं पुष्या
विद्यार्थाचगुरौयथा ॥ ४९ ॥ टीका ॥ अवसर्वदिसनके चलिवे [illegible] सर्वदिशाकरक
हते हैं ॥ अश्वि॰श्र॰ह॰रे॰म॰पुष्य॰ येन त्रसकलासिद्धिदा
ता है जैसेविद्याकोवृहस्पतिसमानगुरुः ॥ ४९ ॥ इतिसर्व
दिग्गमननक्षत्राणि ॥ मूल ॥ प्रतिपत्सुनवम्यां चपूर्वस्यां
दिशियोगिनी ॥ आग्नेयकोणे तृतीयायां [illegible] कादशपात्रदास्म
ता ॥ ५० ॥ त्रयोदश्यांच पंचम्यां दक्षिणस्यां शिवप्रिया [illegible]
दश्यांच चतुर्थ्यां चनैरृतकोणगामिनी ॥ ५१ ॥ चतुर्दश्यां
षष्ठ्यांच [illegible] श्चिमायांच योगिनी ॥ पूर्णिमायांच सप्तम्यां वायु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोणे च पार्वती ॥ ५२ ॥ दशम्यां च द्वितीयायां [illegible] शि[illegible] चंद्र[illegible]
वाष्टम्यां योगिनी निऋदाहृता ॥ ५३ ॥ टीका ॥ योगिनी[illegible] दिक्कै[illegible]
आठें दिशान में वास होता है स चक्र में समझ लीजिये ॥ ५[illegible] ॥ ५[illegible] ॥
योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी ॥ दक्षिणे धनहन्त्री [illegible]
या ॥ ५४ ॥ टीका ॥ यात्रा में बाईं योगिनी शुभ है सुख करै [illegible] होय मन
वांछित पूरी करै ॥ जो दाहिने होय तो धन की हानि करै जो [illegible] होय तो मृत्यु
करै ॥ इति यात्रायां योगिनी फलम् ॥ मूल ॥ मासस्य प्रतिपत् श्रेष्ठा द्वितीया दा
कार्यकारिणी ॥ आरोग्यदा तृतीया च चतुर्थी कलहप्रदा ॥ [illegible]मी च प्रिया नित्यं
षष्ठी कलहकारिणी ॥ मद्यपानसमायुक्ता सप्तमी [illegible] सदा ॥ ५६ ॥ अष्टमी व्या
धिदा नित्यं नवमी मृत्युदा स्मृता ॥ दशमी [illegible] कादशी [illegible] सदा ॥
द्वादशी प्राणसंदेहा सर्वसिद्धा त्रयोदशी ॥ शुक्ला वा यदि वा [illegible] वर्जनीया
चतुर्दशी ॥ ५८ ॥ पौर्णमास्यां च मावस्या [illegible] नैव कारयेत् ॥ तिथि त्रये च मा
संते गृहाणां ते दिन त्रयम् ॥ ५९ ॥ टीका ॥ इस पांच श्लोक न वे [illegible] अर्थ सरल है ॥ ग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ मनकोअशुभपशुभतिथैक हीहै॥ दिनकाफलसमझलीजियै तिथिक्षयमे
मासांतमे औरसंलति रविचंद्रग्रहणमैतीनदिनमानियै॥ असेअशुभयो
गमेगमननकीजै॥५५॥५६॥५७॥५८॥५९॥ इतियात्रायांनिषेधः॥ मूल॥ अ

अथ...दिवासचतुर्थघटिकाराहुचक्रं								
दिशा	पू०	वा०	द०	ई०	प०	आ०	उ०	नै०
घटी	३॥	६॥	१५	१५	१८॥	२१॥	२६॥	३०
यावत्	यावत्	यावत्	याव	याव	यावत्	यावत्	याव	यावत्

[illegible]

...ष्टप्रहरार्धेषुप्रथमार्धं...ग्रांनिशं॥ पूर्वस्यावामतोराहु
तूर्यांशंदिशं व्रजेत्॥ या
म्यांदक्षिणोराहुर्योगिनीवा
मतःशुभः॥ इत्येतांद्वयमाख्या
तेचंद्रमासन्मुखेशुभः॥६१॥ टीका॥ अबचौघटीराहुकी[illegible]दिशाको
राहुदिनप्रतिचलतहै॥ इसीचक्रमेंस
मझलीजे॥ जोचारपहरदिनकाक्रम
है॥ सोईराहुकोजानियै॥६०॥ यात्रामे
राहुदाहिनेशुभहः॥ योगिनीबाईशुभ

अथरात्रौचतुर्थघटिकाराहु[illegible]चक्रं								
दिशा	पू०	वा०	द०	ई०	[illegible]	आ०	उ०	[illegible]
घटी	३३॥	३७॥	४१॥	४५	४८॥	५२॥	५६॥	[illegible]
यावत्	याव	याव	याव	याव	याव	याव	[illegible]	

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

हः॥ स्त्रीरपीठिदाहिनेकीप्रुभहः॥ युद्धादिककूरकर्मविषै स्रीरचंद्रप्रुभमोर
कर्मकेविषैसन्मुखदाहिनेप्रुभहः॥ ६३॥ मूल॥ चंद्रश्च संमुखो दिक्रमेण
चलत्यं॥ मेषादिकेषुयात्रायांसन्मुखेदक्षिणेप्रुभः॥ ६२॥ टीका॥ अबचंद्रमा

	पू॰	द॰	प॰	उ॰
मे॰ १	वृ॰ २	मि॰ ३	क ४	
सिं॰ ५	क॰ ६	तु॰ ७	वृ ८	
ध॰ ९	म॰ १०	कुं॰ ११	मी॰ १२	

चंद्रवासचक्रमिदं

जोहैचारौदिशाकुचलताहै मेषादिराशिको
सन्मुखदाहिनेसदाप्रुभहै॥ ६२॥ मूल॥ मेष
चसिंहेधनपूर्वभागेवृषेचकन्यामकरेतु
यामि॥ मिथुनेतुलेकुंभतपश्चिमायांकर्केश्च
लौमीनचउत्तरेषु॥ टीका॥ मेषकेचंद्रमापूर्व
दिशामैवसतहैं॥ वृषकेचंद्रमादक्षिणमैं मिथुनकेचंद्रमापश्चिममे कर्क
केचंद्रमाउत्तरमैवासकरतहै॥ याहीभांतिसौ नितानिआवतेफिरतेहै॥ इति
चंद्रवासचक्रोदाहरणं॥ मूल॥ सन्मुखेअर्थलाभायदक्षिणेसुखसंपदाः॥
पृष्ठतोमरणंचैववामेचंद्रोधनक्षयः॥ ६४॥ टीका॥ सन्मुखचंद्रमाधनलाभक
रे पीठपीछेमृत्युकरै॥ दाहिनेसुखकरै वायेधनकीहानकरै॥ ६४॥ मूल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यामयुग्मे च रात्रौ च वामे पूर्वादि गो रविः ॥ यात्रास्मिन् दक्षिणो वामे प्रवेशे एष्टके दर्यं ॥ ६५ ॥ टीका ॥ पहर रात्रि रहे तें १ पहर दिन चढे लौ सूर्य पूर्व दिशा रहता है ॥ पहर भर उपरांत दो पहर तक तीन पहर दिन चढे तलक दक्षिण दिशा में रहत हैः ॥ तीन पहर उपरांत २ पहर पश्चिम में रहत है फिर पाच पहर उपरांत वे पहर उत्तर दिशा में रहत है ॥ ऐसे प्रकार सूर्य चारौ दिशा मे चलत हैः ॥ यो यात्रा मे वाम दक्षिण शुभ हैः ॥ औ ग्रप्रवेश मे पीठ सन्मुख शुभ है ॥ इति रविविचार ॥ मूल ॥ मनुः १४ भानु १२ दिशा १० सर्प्पः ८ रस ६ वेदा ४ स्तन २ क्रमात् ॥ रविवारान्मुहूर्तोयं कुलिको निंदितः शुभः ॥ ६६ ॥ टीका ॥ अब कुलिक योग कहते है ॥ रविवार को चौदहो १४ मुहूर्त कुलिक [illegible] है सोमवार को वारहो १२ भौमवार को दशवो १० वुधवार को [illegible] यार कौ छटो ६ शुक्रवार को चौथे मे ४ शनिवर को २ दूसर [illegible] ये ॥ मुहूर्त प्रमाण दुई घडी को कहत हैः सो प्रात काल तें [illegible] शुभ कार्य मे वर्जित हैः ॥ ६७ ॥ मूल ॥ गताना ड्यो द्विगुणा [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शेषसाङ्कंयुतश्चैको सप्तशेषेप्रमस्थितं ॥ ६६ ॥ कालहो [illegible] मो

सौम्यफलप्रदः ॥ सूर्यशुक्रबुधश्चंद्रोमंदजीवबुधक्रमा [illegible] जस्य

ज्ञातव्यादिगणायेत् क्रमात् ॥ शुभग्रहस्य शुभदो मुहूर्तो निष्ट [illegible] ॥

का ॥ ग्रथसातवारजेहै सोएकहीवारमेभोग्यहोतहै ता [illegible] ल होरा कहि

तेहै ॥ सोजेसेशुभाशुभकार्यकोजोवारप्रसस्थहोइतिसका [illegible] दिलीजे

ये ॥ सूर्यउदयसोजेताघरीगतभईहोई तिनको द्विगुणीकीजे तामेपमागदी

जे शेषबचेतौघटाइकै तामेंएकओरमिलायवै ॥ फिरउसमै सातकोभागदीजि

ये ॥ जोसंकवाकीवचैतावर्तमान दिनसोसीघेक्रमसोंगनिये ॥ तौनहोरावर्ता

इयेजैसेरविवारकौएकवचैतौसूर्यकीचैरु ३ मं ४ वृ ५ च ६ शु शा ७ याहीप्रका

रवर्तमानदिनसोआदिदैकैगनिये याप्रकारकरिपहिलेसूर्योदयतेघरी २

पल २४ पर्यंतपहिलेवारकोफिरघड़ीचार ४ पल ८ यावत् क्रुठयेवारकोफि

रघरी ७ पल २० यावत् तासोक्रुटयेक्रमसो सू० शु० बु० चं० शा० बृ० मं० ऐसे भोग्य०

मानहोतहैः सोसमझलीजिये ॥ इतिमुहूर्तेदेवनाकालहोरानिर्णयः ॥ ६६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰ टी॰ ॥ ६९ ॥ इत्यथ ग्रहवारादि प्रयोजन सर्वांक मुहूर्तम् ॥ मूल ॥ तिथिवारं च न
क्षत्रं नामाक्षर समन्वितम् ॥ त्रिविचल मिश्रितं कृत्वा सप्त भाग भाजितम् ॥ द्वय
स्थान शून्ये भवे हानिम ध्य शून्ये रिपोर्भयं ॥ अंत शून्ये भवेन्मृत्युः सर्वांकेवि
जयी भवेत् ॥ ७० ॥ टीका ॥ पक्षकी परिवा से तिथि गानै जो तिथि होय ताको अंक
लीजिये ॥ और वार को अंक रव्यादि गनि के लीजिये और अश्विनी तें गनि के न
क्षत्रं लीजे और राजा को महूर्त विचारिये ॥ ताको पुकारने वाले प्रगट नाम के
अंक ले करि सब अंक एकत्र कीजे ॥ तेहि पिंड को त्रिगुणो करि के छह ह्के को
भाग दीजे ॥ और दूसरा पिंड को त्रिगुणो करिके सात को भाग कीजे ॥ और ताही पिंड
को चौगुणो करि कै ॥ आठ को भाग करे जो पहिले भाग मे [illegible] आवे तो शत्रु ते
अंक परे तो कछु हानि होई ॥ और मध्य पिंड मे भाग शून्य [illegible] तो शत्रु ते भय हो
य ॥ और अंत के पिंड मे भाग शून्य परे तो मृत्यु भय स्वप्न [illegible] होइ करे ॥ औ
र आदि मध्य अंत तीनो भागन मे शेष अंक बचे तो सिद्धि [illegible] जय [illegible]
को दाता है ॥ ७० ॥ इति सर्वांक निर्णयः ॥ मूल ॥ शशि [illegible] शेषादि [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

येप्रवाहे नहिकिंचनापि॥ प्रवुजीयस्पाद्दयमानमार्गे [illegible] प्रवाविं [illegible]
मतं॥ ७१॥ टीका॥ यात्रामेंचंद्रमाकास्वरहोयतौशुभहै [illegible] होई॥ औ
रसूर्यकोहोयतौविलंवहोयकार्यमें॥ औरदोनौस्वरहो [illegible] माव॥ होवै
तामेंकार्यनाहोय वार्यांस्वरचंद्रको दाहिनोसूर्यकोसोजोएक्व [illegible] औरसुं नास्वर
एकहोयतौचंद्रमाकोकार्यसिद्धिहोयशीघ्रही॥ औरजैसेसूर्य [illegible] रतौकार्यनाहो
य॥ औरएकुकपाठपीछेहोयकैजोपूछैतौशुभहै॥ औरदाहिनेंशुभहै॥ ७१
मूल॥ दक्षिणेदुखदाशुक्रोसंमुखेहंतिलोचने॥ वामेपृष्ठेशुभोनित्यंरोचयेचा
लगाशुभः॥ ७२॥ टीका॥ सुवशुक्रकाविचारकहतेहै॥ जा [illegible] केसमयेदाहि
नेशुक्रहोयतौदुखकादाताहै॥ समु॥ सन्मुखहोयतौनेत्रोमेंपीडाहोय॥ औरजो
वांयेशुक्रपीठपीछेहोयतौकार्यसिद्धिहोय॥ औरजोशुक्राकेउदयअस्तमेंयात्रा
करेतौशुभहै॥ ७३॥ इतियात्रायांविचार॥ मूल॥ पुष्येनादूपदायुग्ममैत्रश्र
वणाचाश्विनी॥ हस्तोत्तरामृगःस्वातीतथाश्लेषाचरेवती॥ ७४॥ ग्राह्याणिमा
निचैतानिक्रयविक्रयणेवुधैः॥ चंद्रमार्गवजीवाश्ववाराशकुनीमन्तमं॥ ७५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

शी॰ टी॰

टीका॥ पुष्य॰ पूर्वाभा॰ उत्तराभा॰ अनु॰ श्र॰ ह॰ मृ॰ रेवो॰ उत्तरा॰ अश्वि॰ श्ले॰ रे॰ येन
नक्षत्रवस्तु लेवेको पंडितन शुभ कहे है निश्चै करकै॥ औरसोमशुक्रगुरु और
उत्तम शकुनी विचारकै सकल वस्तु लीजे वे चिये गाई भैंस घोडा इत्यादि समे
त॥ ७४॥ इति क्रयविक्रयः॥ मूल॥ धनिष्ठा पंचके त्याज्य तृणकाष्ठादिसंग्रहे
याम्यादिशि गमनं दाह गृहाणां छादनं तथा॥ ७५॥ टीका॥ धनिष्ठा आदि दे
पाच नक्षत्र कौ पंचक होत है॥ तामें तृणकाष्ठादिकको संग्र [illegible] नाको जे॥ और
दक्षिण दिशाको ना चलिये ना घर बनावे न छावे॥ ७५॥ मूल॥ तैलाभ्यंगे रवौ
ताप सोमे सोभा कुजे मृती॥ बुधे धनं गुरौ हानि शुक्रे दुःख [illegible] नौ सदा॥ ७६॥ र
वौ पुष्पं शनौ पूर्वा भौमवारे च मृत्तिका॥ गोमयं शुक्रवारे च [illegible] गोन दोषभा
क्॥ ७७॥ टीका॥ जो रविवारको तेल लगावे तो संताप होय [illegible] को [illegible]
भौमको कष्ट होय बुधको धन लाभ होय शुक्रको दुख हो [illegible]
य पावे गुरुवारको हानि होय रविको तेल मे फूल डालिके [illegible]
मंगलको मृत्तिका शुक्रको गोबरके योग कर तेल लगा [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति तैलाभ्यंगः ॥ मल ॥ हस्तत्रये वृसयुगे मघार्यो पुष्ये ध्रु [illegible] वार २६ [illegible]
मलान्तराधाह्य रेवती वाश्विरे वल नेवुव धुप्रवेशः ॥ [illegible] ॥ २६ [illegible]
रो·म्र·म·पुष्य·ध·श्र·उ·३ मृ· ऽनु·श्वि·रे· इन नक्षत्रनमें [illegible]
शक रा इये स्थिर लग्न के विषै ॥ २८ ॥ इति वधूप्रवेशः ॥ मल [illegible]
तिरोहिणी च पुनर्वसुः ॥ रोहिणी ॥ रोगी स्नानं रेवती च वर्ज्यं [illegible] त्रयं ॥ ७९
रिक्तातिथौ चरलग्ने वारे च रवि भौमयोः ॥ स्नानं च रोगि [illegible] श्रान्त द्विज भोज
नं संयुतं ॥ ८० ॥ टीका ॥ श्ले·म·स्वा·रो·पुन·उ·३ इन नक्षत्रमें रोगीको स्नान व
र्जित करै ॥ ७९ ॥ और रिक्तातिथि और चर लग्न और रवि भौमवार ॥ ४ ॥ ८ ॥ १२
इन चंद्रमामें रोगीकों स्नान करावै तो वहुत श्रेष्ठ है ॥ ब्राह्मणोंको भोजन करावै
८० ॥ इन मुहूर्तेषु गनते सुधि कक रिलमनके यह दिखा रिये ॥ इति रोगी स्नानं
मल ॥ आनंदः कालदंडश्च धूम्रो धाता प्रजापतिः ॥ सौम्य ध्वांक्षो ध्वजश्चापि
श्रीवत्सो वज्र मुद्गरः ॥ ८१ ॥ छत्र मित्रं मानसाख्यं पद्मं लुम्बक स्तथा ॥ उ
त्पात मृत्यु काणाश्च सिद्धिश्चाथ शुभोऽमृतः ॥ ८२ ॥ मुसलं गद मातंग राक्षस्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चरस्थिरः॥ वर्द्धमानश्च विज्ञेया स्वराधं शतितिस्तमी॥ ८३॥ फलत्वनामस
दृशो योगो दैवज्ञ भाषिताः॥ अश्विनी रविवारे च योगो ह्यानंद संज्ञकः॥ ८
४॥ मृगशीर्षे शीतरश्मि श्लेषायां [illegible]तिनं दने॥ बुधे हस्तेन राधा च देवरा
ज गुरौ हितः॥ ८५॥ मर्णीवै चोत्तराषाढो शनौ शत भिषा तदा॥ तदानंदाख्ये
योगास्यात्कालदंडादयः क्रमात्॥ ८६॥ टीका॥ आनंदादि योगादिकक
हे है सो वार और नक्षत्र मिलकरके होत है॥ अश्विनी और रवि मिलके आ
नंद योग होते है॥ मृगशिर और सोमवार को श्लेषा और मंगलवार को हस्त
बुधवार को गुरुवार अनुराधा सो शुक्रवार उत्तराषाढ से और शतभिषा श
निवार को इसी भांत आनंद योग होत है॥ इसी रीत से सब [illegible] फल जो जैसा
नाम जिस योग हो तहै सोई फल जानिये॥ उत्तम मध्यम फल [illegible] ना है॥ अ
व आनंदादि योग संज्ञा॥ आनंद १ कालदंड २ धूम्र [illegible] तिः ६ सौ
म्य ५ ध्वांक्ष ६ ध्वज ७ श्रीवत्स ९ वज्र १० मुद्गर ११ छत्र १२ मित्र
१३ मानस १४ पद्म १५ लंबक १६ उत्पात १७ मृत्यु १८ काण १९ सिद्ध २०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आय २१ शुभ २२ अमृत २३ मुशल २४ गद २५ मातंग २६ चर २७ स्थिर २८
इन अठाईस जे विशेष कार्य प्रधान है सो कहत है ॥ २१ ॥ २२ ॥ [illegible] ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६

व वारे भौमे

॥ मूल ॥ हस्ते सूर्ये मृगो सोमे तथाश्विनी ॥ बुधे मैत्रे गुरौ पुष्ये [illegible] रेवती ॥
२७ ॥ रोहिणी रवि पुत्रश्च सर्वे सिद्धि प्रदायकः ॥ अमावमृता [illegible] योगाः
प्रोक्ताः पुरातने ॥ २८ ॥ टीका ॥ अब अमृत सिद्ध योग कहत है [illegible] काल कार्य विशेषी सिद्धि कारक कहे है पूर्वोक्त श्लोक की उक्ति माफिक वा चक्र में समझ लीजिये ॥ २७ ॥ २८ ॥ मूल ॥ मघा दित्ये विशाखेंदु भौमे चार्द्रानलं गुरौ ॥ बुधे मूले

र॰	चं॰	मं॰	बु॰	बृ॰	शु॰	श॰	वार
ह॰	मृ॰	श्वि॰	अनु॰	पु॰	रे॰	रो॰	नक्ष
अमृ॰	अमृ॰	अमृ॰	अमृ॰	अमृ॰	अमृ॰	अमृ॰	सिद्धि

विधे शुक्रे यमघंट शनैकरे ॥ २९ ॥ टीका ॥ रविवार को मघा नक्षत्र होय तो यमघंट योग कहिये ॥ सोम को विशाखा भौम को आर्द्रा बुध को मूल गुरु को कृतिका शुक्र को रोहिणी शनि को हस्त होय तो यमघंट योग कहिये नामें शुभ कार्य वर्जित है ॥ २९ ॥ मूल ॥ नंदा सूर्ये च भौमे च भद्रा भार्गव चंद्रयोः ॥ बुधे जया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰रा॰ गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदाः ॥ ५० ॥ टीका ॥ रवि भौमवारको नंदा तिथि होय तौ मृत्युयोग जानिये ॥ शुक्र सोमवारको भद्रा तिथि होय तौ मृत्युयोग कहे यता है ॥ बुधवारको जया तिथि गुरुवारको रिक्ता शनिवारको पूर्णा तिथि होय तौ मृत्युयोग जानिये ॥ शुभकार्यके विषै मृत्यु को दाता है ॥ ५० ॥ मूल ॥ अंधाक्षि चिपटाक्ष काणाक्ष दिव्यलोचन ॥ गणयेद्रोहिणी पूर्वाः सप्तवार मनुक्रमात ॥ ५१ ॥ मू ॥ टीका ॥ अंध चिपट काने सुलोचन चार भांतिके नक्षत्र होय है ॥ रोहिणी आदि दै क्रमतै सात्वार गानिये ॥ जो किसीकी वस्तु जाती रही है ताके विचारमें कहे है सो चक्र धरा है तामें समझ लीजिये ॥ ५ ॥ मूल

रो॰	पु॰	उ॰	वि॰	पू॰	ध॰	रे॰	अंधेलोचन
मृ॰	श्ले॰	ह॰	अनु॰	उ॰	श॰	अ॰	चिपट
आ॰	म॰	चि॰	ज्ये॰	अ॰	पू॰	भ॰	कानेलोचन
पु॰	पू॰	स्वा॰	मू॰	श्र॰	उ॰	कृ॰	सुलोचन

अंधे चलमते [illegible] मंदे चैव दिन त्रयम ॥ काणे [illegible] मासमेकं तु सु नेत्रे नैव दृश्यते ॥ ५२ ॥ टीका ॥ जो अंधे नक्षत्रमें वस्तु जाय तौ जल्दी मिले दिव्यलोचनमें जाय तौ उ[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमेमिले॥ स्तंभघादिनक्षत्राणां॥ जोकानेमेजायतो ३ दिनमेदिनमेमिले स

लोचनमेजायतोनाहीमिले॥ ९ ॥ मूल॥ पुनर्वसुमृगाश्वाद्राअष्टमेत्र्यक[illegible]

त्तथा॥ पूर्वाषाढोतथाद्र्यामूलंदक्षिणचारिणः॥ ५३॥ मू[illegible]कारोहिणीपुष्यो

चित्राश्लेषाचरेवती॥ शतंधनिष्ठाश्रवणोनवमध्यमचा[illegible]॥ ५३॥ श्रविष्ठ

नीभरणीस्वातीविशाखाफाल्गुनीद्वयम्॥ मघाभाद्रपदा[illegible]नवचोत्तरचा

रिणः॥ ५४॥ टीका॥ पुन·मृ·श्रा·ज्ये·अ·ह·पू·षा·उ·षा·मू· येनक्षत्रपू

र्वादिशातेदक्षिणकोचलतेहै॥ अश्वि·भ·स्वा·वि·पू·फा·उ·फा·म·पू·भा·उ·भा·

येनक्षत्रपूर्वतेउत्तरकोचलतेहः॥ ५५॥ इतिनक्षत्रप्रचारः॥ मूल॥ नभमतीन्द्रदिशो

वत्सोमासानांचत्रिकंत्रिकं॥ श्रावणोभाद्रपदेकृत्वात्सर्वतोदिक्चतुष्टयं॥ ५६॥

यात्राविवादसंबंधसंचारगृहमेयोः॥ [illegible]तेगेलनंपृष्ठंवत्सम्पामिमस्वंत्प

जेत्॥ ५७॥ टीका॥ इंद्रादिशाजोहैपूर्वतादिजादिदेवत्सकहतेहैः॥ वत्सके

रूपयोगतीनमहीनाएकदिशामेरहतेहैः॥ भादोकेमहीनेतेतीनमहीनापहि

लेपूर्वदिशामेरहतेहै॥ औसावनतेर्३महीनादक्षिणमेरहतेहै याभांतिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टी॰ टी॰ मसो विशाखा सजानिये॥ वत्सयोगके सन्मुख यात्रा औरविवाह संबंध घर
का घार आरोपण राजासे मलाकातकरनी और युद्ध इतने कार्य नाकीजे॥
जाये और पीठ परस्थ मदः॥ ५७॥ ५८॥ मूल॥ त्रयंयमेश्वदाने घटविधौ पंच
मर्गात्रयं॥ एकमार्द्रो चनतंत्रे चत्वारिच पुनर्वसौ॥ ५९॥ पुष्येत्रयं रसाः सार्पेम
घायांमानिपंचच॥ १॥ चित्रास्वातो रेकमेकं … चहि देवतं॥ त्रयंमैत्र नं
राधाचरुमेष्ठायां चत्रयमस्मृताः॥ २॥ मूलेहद्वाचलं षड्भंच … पाढेतत्थोत्तरे॥
त्रयंचाभिजितश्चोर्द्धं श्रवणेचत्रयेतथा॥ ३॥ धनिष्ठायांचचत्वारः शतंशततारि
कांम्हच॥ द्वयंद्वयंमाद्रयोश्च रावतिशेदृपि चोत्तके॥ ४॥ टीका॥ अश्विन्या दिसनक्ष
त्रजो जितनेजितने नक्षत्रके कुंड सो उदयस्थाकाशमे सो … जो समफलीजि

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	उ	[illegible]	श्र	ध	श	पू	उ	रे
२	३	६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	३	३	११	४	[illegible]	[illegible]	२	६	१००	२	२	३२

ये॥ ५॥ शीतनक्षत्र प्रचारः॥ मूल॥ लग्नेष्टमेव्ययेमृत्यै तेनपाप … गाः॥ आकाशा दे
वीचंद्रेलग्नेनषष्ठेष्टमेव्यये॥ ६॥ द्वादशी दशमेभौमे डाकिनी … स्मृताः॥ वजदोषे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भवद्दोषोद्वादशेसप्तमेबुधः ॥६॥ यामित्रेद्वादशेजीवे देवदे [illegible] निमा[illegible] ॥ [illegible]
व्यये देसपञ्जेजलदेव्याश्चदर्षणं ॥७॥ शनेश्चरेव्ययेचा[illegible] [illegible]मादामवातय:
यामित्रेद्वादशेराहौकुगातिज्ञातिदूषणं ॥८॥ पितृदोषोभ[illegible] [illegible]धाहानिति
वर्णितं ॥ वृषेगागानदेव्याश्चज्वरकुलक्षनेत्रलक् ॥९॥ मिथु[illegible] [illegible]हामायादो
षोवेलाज्वरोनिलः ॥ कर्कैचशाकिनीदोषोहास्यरोदनमे[illegible] ॥१०॥ सिंहेज
लेप्रेतदोषोदिवाशीतिज्वरोरुचिः ॥ ग्रहदोषश्चकंन्यायांतेधालस्यरुचीरप्य
था: ॥११॥ क्षेत्रपालभवेदोषोतुलेसंतानपीडनं ॥ वृश्चिकेनागदोषश्चज्वाला
देहेकुबुद्धिता: ॥१२॥ चापेदेहभवेदोषोज्वरशोकौशोको[illegible] ॥ मकरेचंडि
कादोषोदेहभंगोज्वरोनिलः ॥ मलिनप्रेत[illegible]कुंभेदेहस्यपीडनं ॥ मीने
चापिगानादोषोज्वरोर्जजालदर्शनं ॥१४॥ [illegible]मेतृतीयेचषष्टेपापग्रहेय
दा ॥ हतागारेजलशस्त्रागारेसर्वेस्ववंशजः ॥१५॥ शनौजलेकुजेशस्त्रेयुतेसर्वे
स्ववंशजः ॥ राहुविक्रमतोनष्टःशांतिप्रजाद्विजा[illegible]नैः ॥१६॥ [illegible]गोत्रदोषोपि
परदेवेपोजवः ॥ शत्रुक्षेत्रेशत्रुदोषोमित्रेजलसंभवः ॥१७॥ टीका ॥ जोम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

धेलग्नमेहोय अथवा॥८॥१२॥होयतौक्षेत्रपालकोदोषजानिये।जवशरी
रमेव्यथापावे तवक्षेत्रपालकापूजनकरैतौशांतहोय॥ औरजोजन्मकाल
मेंचंद्रमा॥१॥६॥८॥१२॥होयतौआकाशदेवीतेदोषकरिकहोय॥५॥ औरज
न्मकालविषेजोमंगल॥१०॥१२॥होयतौडाकिनीदोषकहिये औरजोवुध
७॥१२॥होयतौवनदेवीदोषजानिये॥१०॥६॥जोवृहस्पति॥ ७॥१२॥ होयतौ
देवदोषजानिये औरजोशुक्र॥७॥१२ होयतौजलदेवीकादोषहोय॥८॥जो
शनिश्चर॥७॥१२॥होयतौग्रामवामकोकरै औरजोराहु॥७॥१२॥ होयतौकु
गतिहोय अपनीजातहीसेदोषउपजे॥१०५॥ औरजोमेषलग्नमेजन्महोय
तौ अथवायवृधरै॥ औरमेसगरुहपरैतौपितृदोषहोय वि… होयकुरूप
औरजोवृषमेजन्महोयतौ आकाशदेवीतेदोषहोयज्वरहोय॥उलटीभया
नकस्वप्नहोइ॥जोककेलग्नमेजन्महोयतौ॥नेत्रमेपीडाकरै …युनलग्नमे
जन्महोयतौ जोनिविद्यरूपरैतौ महामायाकादोषहो… ज्वरहोय:
जोककेलग्नमेजन्महोयतौ शाकिनीदोषतेहंसरोवै॥ अरुमौनहूहै…

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो सिंहलग्नमेंजन्महोयतो प्रेतकीपीडाहोय दिनमें [illegible] रहोयरात्रीकौ [illegible]
जो कंन्यामेंजन्महोयतो देहदोषहोई॥ देहमेंपीडा॥ क्रोध [illegible] कौ
मथ्याहोई॥ ११॥ जो तुलामेंजन्महोयतो देत्रपालतेपीडाकरै॥ वृश्चिकमें
जन्महोयतो सर्पतेभयहोई॥ देहमेंपीडाज्वरनिउपजेकुंडलिहोय॥ १२॥ ध
नलग्नमेंजन्महोयतो देहदोषज्वरशोकपेटपीडाहोय॥ [illegible] लग्नमेंजन्म
होयतो चंडिकातेदोषहोई॥ अंगभंगहोई अमलज्वरहोई॥ कुंभलग्नमेंज
न्महोयतो प्रेतदोषकरै॥ मलीनशरीररहैपीडाकरै॥ अरु मीनमेंजन्महो
यतो योगनीतेदोषहोय महाज्वरहोय॥ १२४॥ अरु जो इनस्थाननमें १
०॥ ३॥ ६॥ पापग्रहहोयतो विषपीकेमरैकी [illegible] डमरैकी शस्त्रघातहो
ई याहीकुलवालेसें॥ १२५॥ जो इनहीस्थाननमें शनिहोयतो जलमेंडूबै
मंगलहोयतो हथियारनसेंमरै॥ अरु सूर्यहोयतो निजवंशवालेकेहाथ
को विषसोंमरै॥ अरु राहुहोयतो उलटीप्रकृतीव [illegible] उपजेचोरीअरु कु
मार्गा [illegible] कनक रै [illegible] खेले॥ जो [illegible] ग्रहहोयतो आसणकिपजाकरेतो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰ग्र॰ संतानक्षयरी होई ॥ ११६ ॥ जो खदेत्री आरिष्टग्रह होयतौ याके अथवा
गोत्रीजनतेदोषकरै ॥ जोपायेदेवमैंग्रहषितग्रहहोयतौ परमनुष्यजनित
दोषकरै ॥ जोशत्रुदेत्रीग्रहहोयतौ शत्रुजनजनितदोषहोई ॥ मित्रख
जनवांधवादिकनकौशत्रुकरिजानै ॥ १७ ॥ इतिदोषस्थान ॥ मूल ॥ आ
दित्ये चाश्विनीहस्तमूलंपुष्योत्तरात्रयं ॥ सिद्धियोगोधनिष्टा चतिथिय
ष्टमीतथा ॥ ११८ ॥ टीका ॥ रविवारकौ ॥ अ॰ह॰मू॰पुष्य॰उ॰३ध॰इनन
त्रनमैंकोईहोयतौ औरअष्टमीतिथिहोयतौसिद्धियोगहोय ॥ उत्तमकार्य
कीजे ॥ इतिसिद्धियोग ॥ मूल ॥ कृत्तिकाविशाखामघाश्लेषाभरणीतथा
चतुर्दशीद्वादशीचविवर्जिताःसप्तमीतिथौ ॥ ११९ ॥ इतिकु[illegible] ॥ [illegible] ॥ सोमे
पुष्यानुराधाचश्रवणोरोहिणीमृग ॥ नवमीद्वादशी[illegible]सिद्धियोग
एकीर्तिताः ॥ इतिसिद्धियोग ॥ मूल ॥ चंद्रेचित्राविशाखाचउत्तराषाढद्वयं
बुधैः ॥ एकादशीतथाषष्ठीवर्जनीयात्रयोदशी ॥ १२१ ॥ [illegible]का ॥ सोमकौ
चित्रा ॥ वि॰पू॰षा॰उ॰षा॰होयतौ औरा[illegible]द्दा ॥ [illegible] होयतौकुयोगहोई ॥ [illegible] ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतिकुयोगाः॥मूल॥भौमेमूलाश्विनीसार्पेमगोश्लेषाउत्तराभाद्रपात्॥षष्ठी
षष्टमीतृतीयाचसप्तमीचत्रयोदशी॥१२३॥टीका॥भौमवारदिन मू.अश्वि.
श्ले.म.उ.भा.॥८॥७॥३॥१३॥येतिथैहोयतोसिद्धियोगः॥मूल॥निषिद्धाश्लेषा
वाद्र्दीचधनिष्ठापूर्वभाद्रपात्॥मघाचोत्तराषाढचषष्ठी॥दशमीतृतीयाच२३
टीका॥मरालको॥शा.आ.ध.पू.भा.म.उ.षा.॥२॥१०॥येनक्षत्रऔरतिथि
होयतोकुयोगः॥१२३॥मूल॥बुधानुराधापुष्यश्रवणहस्तारोहिणीमृगाः
द्वादशीसिद्धियोगोवद्वितीयाशप्तमीतिथिः॥१२४॥टीका॥बुधको अ.पु.
श्र.रो.मृ.॥१२॥२॥७॥यतिथैसिद्धियोगः॥१२४॥मूल॥बुधेमूलेधनिष्ठा
चरेवतीचाश्विनीमृगाः॥तृतीयानवमीचाष्टमीएकादशीप्रतिपत्तिथिः॥१२५॥टी
का॥बुधको॥मू.ध.अश्वि.रे.मृ.॥३॥९॥१॥येतिथैहोयतोकुयोगः॥२५॥मूल
इतिकुयोगाः॥गुरोचदशमीपंचपौर्णमास्यांविशेषतः॥पौष्णाश्विन्यानुराधा
चासनोपुष्येपुनर्वसुः॥१२६॥टीका॥जोवृहस्पतिकोपूर्णातिथिहोयतो॥५॥
१०॥१५॥नक्षत्र॥अश्वि.अनु.पुष्य.रे.पुन.होयतोसिद्धियोगकोहिये॥१२६॥इतिसि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्धियोगः॥ मूल॥ जीवे शतभिषाद्रौ च कृत्तिकोत्तरफाल्गुनी॥ विशेषमृगोष्टमी
षष्ठी चतुर्थी च विवर्जिताः॥ १२७॥ टीका॥ जो गुरुवारको शतभिषा॥ आ॰ कृ॰
उ॰फा॰ रो॰ म॰॥ ७॥ ८॥ ४॥ ये तिथि होय तो कुयोग है॥ १२७॥ इति कुयोगः॥ मूल॥
शुक्रे चित्रार्यमाषाढाश्रवणाश्वपुनर्वसु॥ सिद्धा चैकादशी षष्ठी प्रतिपत्त्र
योदशी॥ १२८॥ टीका॥ शुक्रवारको चित्रा म॰ उ॰ फा॰ रे॰ श्र॰ अश्वि॰ पु॰॥ ११॥ ६
१॥ १३॥ ये तिथि होय तो सिद्धियोग है॥ १२८॥ इति सिद्धियोगः॥ मार्गेवे रोहि॰
णीपुष्यो ज्येष्ठाश्लेषा मघा तथा॥ द्वितीया सप्तमी चापि वर्जनीया सदा बुधैः
१२९॥ टीका॥ शुक्रको रो॰ पुन॰ ज्ये॰ श्ले॰ म॰॥ २॥ ७॥ ये तिथि होय तो कुयोग है॥
इति कुयोगः॥ मूल॥ शनौ च रोहिणी स्वाती श्रवणा पूर्वफाल्गुनी॥ मघा च न
वमी सिद्धा चतुर्थी च त्रयोदशी॥ १३०॥ टीका॥ शनिश्चरवारको रो॰ स्वा॰ श्र॰ पू॰फा॰
म॰॥ ९॥ ४॥ १३॥ ये तिथि होय तो सिद्धियोग कहिये॥ १३०॥ इति सिद्धियोगः॥
मूल॥ शनौ हस्तोत्तराषाढा चित्रा चोत्तरफाल्गुनी॥ रेवती च मघा श्रवणोति
पीषष्ठी च सप्तमी॥ १३१॥ टीका॥ शनिको ह॰ उ॰ षा॰ चि॰ उ॰फा॰ रे॰ श्रो॰॥ ६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

७॥ पेतिथिहोयतोकुयोगजानिये॥१३४॥ तामेंशुभकार्यनकीजिये॥ इति
नक्षत्रादितिथिवारशुभाशुभयोगाः॥ मूलम्॥ चरं चलं स्मृतं स्वा । तीपुनर्वसुः
श्रुतित्रयं॥ क्रूरसंयं मघापूर्वोत्तरतीयं भरणीतथा॥१३२॥ ध्रुवाख्यं स्थिरमिहैवं
रोहिणी चोत्तरात्रयं॥ तीक्ष्णो दारुणो ज्येष्ठाऽऽर्द्रा मूलमेव च॥ लघुक्षिप्रं
स्मृतं पुष्यो हस्तोऽश्विन्यभिजित्स्मृतं॥ मृदुमैत्रं स्मृतं चित्राऽनुराधा रेवती मृगः॥
१३४॥ मिश्रं साधारणं प्रोक्तं विशाखा कृत्तिका तथा॥ नक्षत्रेष्वेषु कर्माणि ना
मतुल्यानि कारयेत्॥१३५॥ टीका॥ अब अठाईसोंनक्षत्रकी सातसंज्ञा जानि
ये सोऊ दीजदी कहते हैं॥ तामे प्रथम स्वा॰ पुन॰ श्र॰ घ॰ श॰ इनकी चर चलसं
ज्ञा है॥ इनमाह चरकार्य सब कीजिये १ और पू॰ ३ म॰ भ॰ ये क्रूर उग्रसंज्ञक हैं॥
इनमे क्रूर कठिन कार्य कर्तव्य है॥ और रो॰ उ॰ ३ ये ध्रुव स्थिर संज्ञक है॥ इनमे
स्थिर कार्य कर्तव्य है॥ और ज्ये॰ मू॰ आ॰ म॰ ये तीक्ष्ण दारुण संज्ञक है॥ इनमें ती
क्ष्ण कार्य करिये ४ और ह॰ पुष्य॰ अश्वि॰ अभि॰ ये लघु क्षिप्र संज्ञक हैं॥ इनमें सो
सुखलभ्यप्रयोजनीक कार्य कर्तव्य है॥ और चि॰ अनु॰ र॰ मृ॰ ये मृदु मैत्र संज्ञक है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

इनमेंकोमलकार्यमित्रादिसंबंधकर्तव्यहै ६ और वि॰ कृ॰ ये मिश्र साधारण
संज्ञक है ॥ इनमें साधारण सामान्य कार्य करिये ॥ और ये सब संज्ञा ही क्रमते च

क्रमें समझ लीजिये ॥ जिसका जैसा नाम है तासमें
तैसो कार्य कीजि
ये ॥ इति नक्षत्रसं
ज्ञा ॥ १३२ ॥ १३३ ॥
१३४ ॥ मूल ॥
शनिचक्रं नराका

इति नक्षत्राणि मध्याः संज्ञाचक्रम्				
स्वा॰	पु॰	श्र॰	ध॰	लघुक्षिप्र॰ ५
म॰	पूफा॰	पूषा॰	[illegible]	[illegible]चल॰ १
रो॰	उफा॰	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श्ले॰	उषा॰	[illegible]	[illegible]	क्रूरस्थिर ३
ह॰	पुष्य॰	[illegible]	[illegible]	तीक्ष्णदारुण ४
चि॰	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]मैत्र ६
वि॰	कृ॰	[illegible]	०	[illegible]साधा॰ ७

रंलिखे यत्र शनि में वैत् ॥ तन्नक्षत्रं मुखे
दत्वा यावं नामन रसम्च ॥ १३५ ॥ तावद्विचार
येतत्र त्रेयं जन [illegible] ॥ एकं मुखे च नक्ष
त्रे चत्वारि दक्षिणे करे ॥ त्रयं त्रयं पादयोश्च वामहस्ते [illegible] ॥ [illegible] [illegible]योर्नि
त्रे हृदि पंच गुह्ये द्वयं ॥ ३८ ॥ मेकैकं दक्षिणे कुक्षौ नक्ष [illegible] [illegible] ॥ हानि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेदांतिएहस्तेलाभेवामेचरोगयता ॥ ३९ ॥ हृदिश्रीमत्त [illegible] मे
लं ॥ नेत्रेसुखंगुदेमृत्युःकुक्षौशोकविचिंतयेत् ॥ ४० ॥ अ [illegible] ःके
ल्याणेजायतेसदा ॥ अन्येष्वेवविचाराणिवाहनानिव [illegible] का ॥
अवशनिचक्रकाविचारकहतेहैः ॥ नरकेसाआकारख [illegible] ए
रशनिहोय तानक्षत्रमेजन्मकेनक्षत्रलेगनो ॥ फिरशनि [illegible] दे
गमेसवनक्षत्रस्थापितकरै ॥ जहांजाकेजन्मकानक्षत्रपरै तौ [illegible] नि
ये १ नक्षत्रमुखमेधरै ४ दाहिनेहाथमैतीन ३ तीन ३ दोनो [illegible] धरै
येहाथमैंचार ४ ललाटमैतीन ३ दोदो २२ नेत्रनमे हृदेमै ५ [illegible] मेदा
२ दाहिनेकूखमैएक क्रमपूर्वकधरिये जोमुखमेंजन्म आवेतोहानकरै ॥
दाहिनेहाथमेंपरैतौलाभहोय ॥ बायेहाथमैपरैतौ रोगीहोय हृदेमेंपरैतौ
लक्ष्मीप्राप्तहोय माथेमेंपरैतौराजपरीपाले ॥ पायमैपरैतौभ्रमताफिरै ॥ ने
त्रमेंपरैतौसुखपावे गुदामेंपरैतौमृत्युहोय कोषमैपरैतौशोक होय ताकेनि
मित्तजपरजाब्रह्मभोजदानपीपरसेवाकरै ॥ जबकल्याणसुखप्राप्तहोय थो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री·टी· रुअनेकविचारवारहमाहिकनकेचोरहै॥ तिनहीकाफलशुभाशुभहोतहै॥॥
१३६॥ १३७॥ १३८॥ १३९॥ १४०॥ १४१॥ इतिशनिचक्रनिर्णयः॥ मूल॥ मेषेश
नौगुर्जरेषुप्रमासेचार्बुदेवृषे॥ मिथुनेजायतेपीडास्थलेमूलस्थलीषुच
१४२॥ कर्केकाश्मीरेवाथाशक्रप्रस्थेमृगाधिपे॥ शनैश्चरेचकन्यायांमाल
वायांतिसंज्ञयं॥ १४३॥ तुलावृश्चिकचापेषुयाद्विजातिशनैश्चरः॥ नवर्षेति
तदामेघाःपृथ्वीदुर्भिक्षपीडिता॥ १४४॥ दुर्भिक्षंमकरेकुंभेजायतेवङ्गधा
शनौ॥ मीनेचसर्वलोकानांदुर्भिक्षंलक्षयोभवेत्॥ १४५॥ टीका॥ जबमेषरा
सिकाशनिश्चरहोयगुजरातदेशमैपीडाकरै॥ वृषकाहोयतो ... अनेल
वअर्बुददेशकोपीडाहोय॥ मिथुनकाहोयतोमूलस्थलीदे ... ...तै
कर्ककाकाश्मीरदेशमैंपीडाकरै॥ सिंहकाहोयतोइंद्रप्र... ...
रै॥ कन्याकाहोयतोमालवदेशमैपीडाकरै॥ वृश्चिक... ...॥ ...
मेघपीडावरषै॥ पृथ्वीदुर्भिक्षकरकैपीडितहोय॥ जो... नवीसडांगली
अन्नमत्तादिकै॥ मीनकाहोयतौसंपूर्णपृथ्वीमेंकाल... ...॥ १४६ग्रंथमुक्त पु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लो॥१४२श॥२५॥इति शनि वासर फलम्॥मूल॥यत्र मा[illegible]सो सावकाँ छाया
चसततं॥दुर्भिक्षं छत्रभंगं च तदा लं च भयङ्करं॥१४६॥टी[illegible]ल कार्ये स
चर विवार पर छत्रभंग होय महाभय होय॥१४६॥[illegible]
मूल॥सोमस्य पंच वारा स्युर्यत्र मासे निरंतरं॥धनधान्य स[illegible]
मेदिनी॥१४७॥टीका॥जो महीने में पांच सोमवार पर तो धन[illegible]
होय पृथ्वी आनंद करै॥१४७॥इति पंच चंद्रवार फलं॥मूल॥य[illegible]से मंग
लं च जायते पंच वासराः॥रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥१४८
टीका॥जिस महीने में पांच मंगलवार होय लोहूसे [illegible]जे और छ
त्रभंग होय॥१४८॥इति पंच भौम फलं॥मूल॥बुधस्य पंच वाराश्च जायते च नि
रंतरं॥प्रजानां सुखमुत्पन्नं दुर्भिक्षं च प्रजायते॥१५०॥जा मास में पांच बुध
होय प्रजा सुखी होय॥१४९॥इति बुध फलम्॥मूल॥यत्र वारे पंच वारा जा
यते च बृहस्पतौ॥विग्रहे पश्चिमे देशे पीडायुक्तं च जायते॥१५०॥इति॥टीका
जा मास में पांच गुरुवार होय तो पश्चिम दिशा में विग्रह होय व में पीडायुक्त होय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

शी॰टी॰ १५०॥इतिपंचगुरुवारफलम्॥मूल॥शुक्रश्च पंचवाराश्च यत्र मासे भवंति हि
प्रजावृद्धिरभिक्षं च सुभिक्षं तत्र प्रवर्तते॥१५१॥टीका॥जा मास मैं पांच शुक्रवा
र परै तौ प्रजा की वृद्धि होय अन्न उपजै॥१५२॥इतिपंचशुक्रफलं॥मूल॥श
नैश्चरे यदा पंच पाताले कंपते फणी॥ईशानदेशे भंगश्च वह्निदाहो महर्घ॰
ता॥१५३॥टीका॥जा मास मैं पांच शनिवार परै तौ पाताल विषै शेषनाग कां
पै ईशान देश भंग होय अग्निदाह दाह होय अन्न सकरा होय॥१५४॥इति
पंचशनिफलं॥द्वादशमासपंचपंचवारफलानि॥मूल॥अंगुल्यो विंशतिस्त
थैव शंकुसोमे च षोडश॥कुजे पंचदश प्रोक्ता बुधवारे त्रयोदश॥५३॥त्रयोद
श गुरौवारे दश शौक्रे ज भृगुकयोः॥शंकुमले यदा छाया मध्याह्ने च प्रजाय
ते॥५३॥तदा चाभिजित लोना घटिकैका स्मृता बुधैः॥ [illegible] सर्वे [illegible]
सिद्धियोति कृतानि च॥१५६॥जातोभिजित राज्यस्य व्यापारे सि[illegible]॥मूल
क्रूर वियोगेन सर्वमंगलदायकः॥१५७॥टीका॥रविवार [illegible] बीस ऊंगली
की सीक नापके छाया कीजै॥सोमवार कौ सोलै अंगुल [illegible]॥१५८॥मंगल कु

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धको १४ गुरुको १३ शुक्रको १२ शनि ११ जवपह रलो [illegible] सो कको छोयो
सीकके मूलमे तव अभिजित्‌ मूहूर्ते घरी १ एकका होत है [illegible] कालकार्ये सि
द्धि होय ॥ जवकार्ये आपा रूकू रकमोद् ॥ १३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ [illegible] जित मूहूर्ते
मूल ॥ अर्द्ध वृद्धिः फाल्गुणे स्याचैत्र स्य धनसंपदाः ॥ वैशाखे [illegible] राजाडे
वाश्चिश्च भूयसी ॥ १५६ ॥ आषाढे चोदिते शुक्रे जलं भवति दुर्लभं ॥ श्रावणे च प
शुपीडा भाद्रे धान्यसमुद्भवः ॥ १५७ ॥ आश्विने सर्व संपत्तिः शुभं कार्तिक मार्ग
योः ॥ पौषे माघे हिते शुक्रे तत्र भंगोय चुदेतः स्म गोमते: ॥ १५८ ॥ टीका ॥ जो शु
क्रका उदय फाल्गुणमे होय तो अन्न सला होय ॥ चैत्रमे होय तो मेघ नीका वर
षे ॥ चौपायन का सुख होय धनसंपदा अधिक होय वैशाखमे होय तो राजान
मे विग्रह होय ॥ जेठ मे उदय होय तो वर्षा नीका होय आषाढमे वर्षा थोडी होय ॥
श्रावणमे होय तो पशुवनको पीडा होय ॥ भादोमे होय तो अन्न बहुत उपजे
१५८ ॥ आश्विनमे होय तो संसारमे संपति की वृद्धि होय ॥ कार्तिक मार्गशिरमे शु
भ है ॥ पौषमाघमे उदय होय तो तत्र भंग होय देशपति को विध्वंस होय ॥ १५९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी·टी· इतिप्रश्नौदयफलं॥मूल॥ पूर्ववायुर्होलिकायां प्रजाःभूपालयोःसुखं॥प
लायनं च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवं॥१९०॥पश्चिमे तृणसंपत्तिः उत्तरे धान्य
संभवं॥यदि खे चाशुवा वृष्टिः दुर्गराज्ञोपि संचयेत॥१९१॥टीका॥जो होली के
दिन पूर्व की पवन चलै तो दहन समै राजा प्रजा को सुख होय दक्षिण की चलै
तो दुर्भिक्ष होय काल पडै॥१९०॥पश्चिम की चलै तो तृण की [illegible] होय॥उ चलै
तो अन्न बहुत उपजै॥जो पवन नहि चलै तो धूआं उडि के [illegible]पटसी धी आ
काश मै जाय तो राजा गढकोट का आसरा लेके बैठ रहै विग्र[illegible] होय॥इति मुहूर्ता
सनीय फलम्॥मूल॥एकादश्यां कार्तिकस्य यदि मेघ समी[illegible]॥आषाढे चत
दा वृष्टिः जायते नात्र संशयः॥१९२॥टीका॥जो कार्तिक की एकादशी कू बादल
होय तो मेघ थोडा बरसै॥तो आषाढ के महीने मै वर्षा अच्छी होय॥१९३॥मूल॥
कृष्णपक्षे दशम्यां च वृष्टिः पौषस्य जायते॥तदा भाद्रपदे [illegible] मे चतिमय
सी॥१९४॥टीका॥जो पौष की कृष्णपक्ष की दशमी को मेघ [illegible] भादो के मही
ने मै वर्षा अधिक होय॥१९५॥मूल॥वृष्टिश्चे न्माघ [illegible] इमलेन [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ते॥ नक्षत्रेवादिवाहस्तंतदान्नेष्यतिमही॥ १६४॥ टीका॥ [illegible] धकीसक्ष[illegible]
कोवरषै औरज्येष्टकेमूलनक्षत्रमेंवरषै॥ वर्षाकेनक्षत्रम[illegible] [illegible]पृथ्वीमरमें
अन्नउपजै॥ १६४॥ मूल॥ पंचम्यांप्रथमेपक्षेस्वावणेचश[illegible] [illegible]॥ पयोवाह
लदाधामेधरामान्नजलेरपि॥ १६५॥ मू॥ टीका॥ सावनवादप[illegible] [illegible]पंचमी
कोमेघवरषैतोवरषाविशेषहोय अन्नविशषहोय॥ १६५॥ [illegible]
य॥ मूल॥ आषाढपूर्णिमायांचयन्नक्षत्रंविचारयेत्॥ पूर्वाषाढेसुभिक्षंच
मूलेदुर्भिक्षमुच्यते॥ १६६॥ उत्राषाढकेक्षिमापीडाकर[illegible]संशतिं॥ टीका॥
आषाढकीपूर्णिमाकोजोनक्षत्रहोयताकोविचारिये॥ [illegible]षाढहोयतो
सुभिक्षहोय मूलहोयतोदुर्भिक्षहोय॥ औरजोउतराषाढ[illegible]यतोषोडानको
पीडाहोय॥ १६६॥ इत्याषाढपूर्णिमाफलं॥ मूल॥ ज्येष्टस्यप्रथमेपक्षेप्रतिप
च्चयदाभवेत्॥ रवौवारस्तदावायुःवानवर्षातकारकः॥ सर्पंतवियहेभौमे
वुधेदुर्भिक्षमुच्यते॥ १६८॥ अनावृष्टिशनैश्चरे जोलंकाधिनहस्पतौ॥ सोमश्च
कसेस्ज्यानांयद्दिवारप्रजायते॥ १६९॥ धनधान्यसतोत्पतिः [illegible]हेमहोत्स

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ वे॥ १६९॥ टीका॥ ज्येष्ठकापहलापखवार रविवार होयतौ पवनवक्रुत चले व
नहूटै भौमवारहोयतौविग्रहहोयदुर्भिक्षपरै॥ शनिवारहोयतौमेघ थोडाव
रषै जोसोमशुक्रबुधवार होयतौ धनधान्य उपजैसंतानकीवृद्धि होय॥ इति
ज्येष्ठप्रतिपदाफलं॥ मूलं॥ पौषमासस्यसंक्रांतौ रविवारयदाभवेत॥ धान्य
स्याद्विगुणंमौल्यंभौमवारेचतुर्गुणम्॥ त्रिगुणंशनिवारेचबुधशुक्रेसमंभवेत
गुरावार्येचसोमेचमौल्यंमर्द्धं करोतिवै॥ क्रूरेलाभंकुतोधान्येसोम्येहानिप्रदा
भवेत॥ टीका॥ जोपौषकी संक्रांत रविवार होयतौ अन्नदिगुणो मोल विकै॥ भौ
मवारहोयतौ चौगुणोमोलविकाय॥ १७०॥ बुधशुक्रवारी होयतौ साधारण
भाव विकाय॥ शनिवारीहोयतौ त्रिगुणोमोलविकाय॥ १७१॥ गुरुसोमवारीप
रैतौ आधेदाम होय॥ जोशुक्रवारपरैतौ त्रिगुणोमोलविकाय॥ १७२॥ क्रूरवारी
होयतौ नफा होय॥ १७३॥ इति पौषमासफलं॥ मूलं॥ मीनसंक्रमणे सूर्ये॰ र
वानसमीरणः॥ भौमेपीडापशून्मांचदुर्भिक्षंचशनैश्चरे॥ ...पातश्च जा...
मिथ्यासंचरतेमही॥ हिंसकायपरोलोकाःयदिवृष्टिःसमान्विते॥ १७४॥ ...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2

तौयदि मीनस्य बुधेवारे प्रजायते ॥ तत्र भंगं महामारी [illegible] नं सम चिंतकं
२७५ ॥ संक्रांतौ रविवारेच प्रजानां परमं सुखं ॥ मान्दे भौ [illegible] वारे धूपात कुंकुम
हर्षेता ॥ २७६ ॥ टीका ॥ मीनकी संक्रांति रविवार होय तौ व [illegible] घ [illegible]
पवन चले ॥ भौमवार तै पशू पीडा होय शनिवार तै दुर्भिक्ष प [illegible] ॥ २७३ ॥ मंगल [illegible]
संक्रांति होय तौ रक्तपात मिथ्यावाद हिंसा कामादरी श्राधिक होई ॥ २७४ ॥ बु
धवार होय तौ तत्र भंग होइ मरी परं शोक भय चिंता वढे ॥ २७४ ॥ सोमवार होय
तौ प्रजाकू आनंद होई ॥ रवि शनिवार होय तौ सब्द में युद्ध होय ॥ २७५ ॥ २७६ ॥
इति मीन संक्रांति फलं ॥ मूल ॥ संक्रात्साधरनक्षत्रा दाल [illegible] धिगणपते ॥
त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुनः पुन ॥ २७७ ॥ पंथा भोगो व्यथा वस्त्रं हानिश्च वि
पुलं धनं ॥ षड्भिर्भोगो फलं षट्कं मासि मासि विचारयेत् ॥ २७८ ॥ टीका ॥ संक्रांति
केसमय केन क्षत्र ते श्रपने न क्षत्र लो गनै ॥ तामें तीन लौ होई पंथा चलावै श्री
र ६ लौ भोग करावै १२ लौ व्यथा करै १८ लौ वस्त्र सुख करै फिरि २१ लौ पंथी
होई २७ लौ भोग करैं याप्रकार मास मास विचारै ॥ इति संक्रांति दिन नक्षत्र फलं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूलः ॥ रविचक्रं लिखेत्वादौ मेषसंक्रांतिभादिकं ॥ अष्टाविंशतिके तत्र लिखेन्

नत्रसंकुलं ॥ १७ ॥ संधौ द्वयं द्वयं द्व
यादन्यत्रैकैकमेव च ॥ चत्वारः सागरा
स्तत्र संधयश्चाष्टसंख्यया ॥ १८ ॥ शृंगा
णि तत्र चत्वारः तदा पृष्ठे स्थलानि च
रोहिणीपतिना [illegible] तत्र प्रसूमाप्नु
यें ॥ १९ ॥ जातो मयमेषाचंद्रस्य चक्र
मप्रिया ॥ समुद्रे कुम [illegible] स्थितः टरफि
स्य शोभने ॥ २२ ॥ [illegible] मात्रस्य
ड्वक्षिप्य संधिषु ॥ टीका ॥ अ [illegible]
निर्णय विषम [illegible] रस्य [illegible]
हिणीपतमयो [illegible] सतहे [illegible]
दशाकोठा [illegible] लिखा [illegible] जल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गामेविषैलिखियेताकी आवर्तेविषैरोहिणीचक्र॥१२८ [illegible] कोलि [illegible]
नक्षत्रदुरदुरसमृद्धनमेधरिये॥ एकएकनक्षत्रश्रुगानमें [illegible] कनं [illegible]
धिनमैघरे तहाँमेषकीसंक्रांतिजाननक्षत्रमेहोइतानक्षत्रते [illegible] रो [illegible]
समुद्रकेनजीकपरेतौवर्षोअधिकहोई॥ श्रृगानमेपरेतौव [illegible] क [illegible]
औरसंधिनमेपरेतौकहावर्षैक [illegible] विषै॥ अ
श्विनीकेउरसंक्रांतिधारियै॥ [illegible] ॥१२०॥१२१॥
१२२॥ इतिरोहिणीनिर्णयः॥ मन्ता॥ [illegible] राकारंलिखे
चक्रंसूर्ययत्रअवस्थितः॥ तन्न [illegible] र्कंकृत्वात्र
योदद्याच्चमस्तके॥१२३॥ मुखेत्र [illegible] स्कंधयोश्चद
द्यादेकैकमेवच॥ बाहुद्वयंतथैकैकं पाणौरेकै
कंमेवच॥ हृदयेपंचगुदेचैकं नाभौचैकंप्रदाप
येत्॥ जंघयोरेकमेकंच षड्ङ्घ्रि पादयोर्द्वयोः॥

भाद्दे॥ ॥ मस्तकेपट्टवंधिस्यान्सुखेमिष्टान्नभोजनं॥ १२४॥ स्कंधेग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ ऽंद्रगामी स्याद्गुह्यस्थाने च्युतो भवेत्॥ पाणौ च जायते चौरो हृदये भी(?)श्वरो
नरः॥ १९७॥ स्वल्पतोपि भवेन्नाभौ परदाररतो गुदे॥ जंघयोः परदेशी स्या
स्त्वायुष्यं च पदद्वयं॥ १९८॥ नरचक्रे सूर्येन नक्षत्रा जन्म भावाध्याय(?)पते॥ टी
का॥ अब नरचक्र कहते हैं॥ ताकी गणत चक्र में समझ लीजिये॥ और जो
सूर्य के नक्षत्र ते और जन्म नक्षत्र लो गनिये॥ जहां जो नरचक्र में नरचक्र
के जन्म नक्षत्र परे ताको फल कहते हैं॥ जो माथे में ज[illegible] नक्षत्र परे तो॥
निज कुटुंब नायक होय॥ और जो मुख में परे तो मीठे [illegible] भोजन विशेष भो
जन करे॥ कांधेन में परे तो कुटुंब का मालिक सुयशगामी होय॥ और जो बा
हुन मे परे तो जन्मभूमि छुटि जाय॥ जो हाथिन में परे तो चोरी करे जो
हृदय मे परे तो ठाकुर होय॥ ऐश्वर्य अधिक होय को [illegible] सन्मान
होय॥ और जो नाभी मे जन्म नक्षत्र परे तो थोड़े में जन्म [illegible] रहे॥ और गु
दा में स्थान परे तौ परस्त्री सों रमै॥ जंघान मे परे तो परदेशी होय॥ और च
रन मे परे तो थोरी आर्बल जिये॥ इति नरकार चक्रेन नक्षत्र [illegible] शुभाशुभ फल न
रा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६

मूल॥ग्रामेयत्रभवेद्वृत्तौतदाग्रामसुमस्तके॥ पृष्ठेसन्...शीसन्तपाद्योःस
न्नतारकाः॥ मस्तकेचधनीमानंपृष्ठेहानिश्चनिर्धनं॥ १८७॥ हृदयेऽ...
पतिःपादेपर्यटनंसदा॥ टीका॥ जिसग्राममेवसाचाहैतिसगांवकीराशिके
नक्षत्रतेजोवसाचाहैताकेनक्षत्रलोगगनियै॥ तामैतेग्रामकेनक्षत्रत्रा
दिदैकेसात७नक्षत्रग्रामकेमाथेपरदीजै औरसात७नक्षत्रपीठपरदी
जैऔर७पायनमेंदीजे॥ जोगांवकेमाथेपरवसेयाकोनक्षत्रपरेतोधन
मानहोई॥ औरगांउकेधनीसन्मानअधिककरै औरजोपीठकेनक्षत्र
मेपरेतौहानिहोय॥ जोहृदयकेनक्षत्रमेपरेतोसवकोप्रीतिकरै॥ और
जोपायनमेपरेतौभटकतफिरैग्राममेंरहनेनहिपावै॥ १८९॥ १९०॥
इतिग्रामवासफलम्॥ मूल॥ मूलेशीर्षमूलवक्त्रस्यघटिकापरिकीर्तिताः॥ लं
भस्तुघटिकात्वचेचैकादशस्मृताः॥ १९१॥ शाखायांचनवप्रोक्ताःपत्रे
प्रोक्ताचतुर्दशः॥ पुष्पेपंचफलेवेदाःशिखायांचत्रयःस्मृतं॥ मूलनाशो
हिमूलस्थंभेहानिर्धनक्षयः॥ १९३॥ त्वचेभ्रातृविभ्रंशायशाखायांमा
ना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तपीडनं॥ परिवारक्षयेपत्रेपुष्पेमंत्रीचभूपते॥ १५७॥ फलेराजाशिखायां
स्यादल्पजीवीचबालकं॥ १५८॥ टीका॥ संस्तकन दात्रमेबालक होय॥ ता

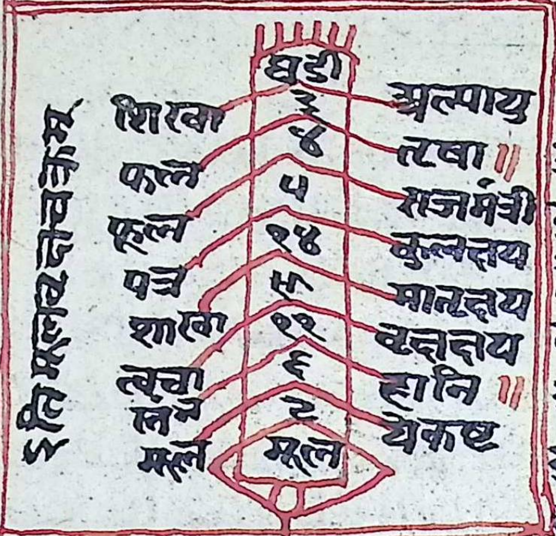

कोविचारकहतेहै॥ मूलवृक्षवनायेश्रोरऐ
रजडमेधरिये॥ औसेक्रमसेसबचक्रमेसमझली
जै॥ जोनडमेपरेतोमूलनाशकरै॥ श्रोरजहांते
डारचलतीहै तिन३घरीनमेजन्महोयतोहा
निहोय श्रोरजोजडानकी ११ [illegible] घरीनमेज
न्महोयतो माईकोविनाश[illegible] पीडाहोय॥
श्रोरशाखाकीपांचघरीमेजन्म[illegible]तो[illegible]
डाकरै श्रोरपत्रनकी १४ घरीन[illegible]
नयहोय॥ अथवाअपनेकुल[illegible]
की३तीनघडीमेहोयतो आवेलथोडी होय॥ १५९॥ १६[illegible]
लम्॥ मूल॥ रेवत्यादिमृगांतेचयावतिष्ठतिचंद्रमा॥ ता[illegible]तो बुधः[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विदद्विगोग्युभः ॥ १९५ ॥ टीका ॥ रेवतीनक्षत्रते मृगशिर [illegible] बातावे [illegible]
षकार्यशुभ मारहे ॥ तहां लोशुक्रन्रंधामहे सोतामे मन [illegible]
हीशुभहे ॥ १९५ ॥ इति शुक्रनिर्दोषविचार ॥ मूल ॥ प्रा [illegible]
पंचसप्तदिनं शिशुः ॥ १९६ ॥ विपरीतं तु वक्तव्यं तद्देवगु [illegible] ॥ १९ [illegible]
शुक्रका उदय होय पूर्वे पश्चिम तव ५ श्रीर ७ दिनमा [illegible] पूर्वे [illegible]
दिनमानियै वालकपूर्वे श्रीर दिन ७ पश्चिम शुभकार्य [illegible]
हीगुरुकोजववृद्धलहोय तव दिन ५ मात ७ पश्चिम पूर्वे [illegible] सात पूर्वो
यामानि वृहस्पतिको उदय वृद्धत्व मानियै ॥ १९६ ॥ इति शुक्रोदयास्तफ
ल ॥ मूल ॥ तृतीये दशमे षष्ठे सदास्यै शुभावह ॥ प्रथमे दशमे षष्ठे तृतीये
सप्तमे शशि ॥ शुक्लपक्षे द्वितीयात् पंचमे नवमे शुभः ॥ १९७ ॥ ताराशुभप्रदासर्वे
त्रिपंचसप्तवर्जिताः ॥ तृतीये नवमे षष्ठे सदास्यै शुभावहः ॥ १९८ ॥ प्रथमे
दशमे षष्ठे तृतीये कादशे शशी ॥ यदि स्यात्सवलः श्रेष्ठ द्वादशो [illegible] शायिनी
२०० ॥ तृतीये पंचमे ताराः सप्तमे च नृणां भवेत् ॥ जन्मभाजन्मये [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी.टी. ष्ठ त्रिजन्मावधिः॥२१॥ नवभिन्नहरेत्प्राप्तं शेषं ताराविनिर्दिशेत्॥ जन्मसंपद्विप
त्क्षेमप्रत्यरिःसाधकोवधः॥२२॥ मैत्रातिमैत्रताराःस्युःत्रियादन्यानचैव
हा॥ त्रिषष्ठे दशमे भौमे राहुः केतौ शनिः शुभः॥२३॥ षष्ठेष्टमे द्वितीये वा चतुर्थे
दशमे बुधः॥ द्वितीये पंचमे जीवे सप्तमे नवमे शुभः॥२४॥ एकादशे ग्रहाः सर्वे
सर्वकार्येषु शोभनाः॥ ग्रहा लग्नगोचरं चैव फलं विद्ये शुभाशुभं॥२५॥ टीका
शुक्लपक्ष मे २।५।८।९॥ तारा शुभ है सकल कार्यन को॥ और॥३।५।७॥ वर्जित है और
र॥३॥१०॥६॥ सर्य होय तो जन्मकाल शुभ है॥ और॥१०॥६॥ [illegible]॥ [illegible] होयतो
अशुभ है तारा क्लेश को करै और॥३॥५॥ तारा होयतो॥७॥४ होयतो कलेश ना·
होय॥ ताते ब्राह्मण जो हैं पंडित ते तारा का विचार करते हैं [illegible] नक्षत्र
दिन केन क्षत्र लो गनिये ता मे नव को भाग दिजिये जो शेष [illegible] रहै
जन्मकाल विषे आपा रत्न की विपति वा युद्ध मे विचारै [illegible] स्मृति
तीन मित्र तारा इनको ३ आवर्त विचारते है॥३॥६॥१०॥ मंगल [illegible]
होयतो शुभ है और॥२॥५॥७॥४॥१०॥ इन स्थान विषे होय तो बुध शु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु ॥ २।५ ॥ ७ ॥ शुभ है और ग्यारहै स्थान सर्व ग्रह शुभफल के दाता है [illegible] ले
कार्यन के विषै गोचर ग्रहणको फल शुभाशुभ या प्रकार [illegible]
२०५ ॥ इति गोचरग्रहाणां फलानि ॥ मूल ॥ दशम्यावधि [illegible] द [illegible] शिच
द्रमाः ॥ ततः परः क्षीण चंद्र शुभकार्ये विवर्जितः ॥ २०६ ॥ टी[illegible] ॥ शु[illegible] ७ [illegible] की
दशमी ते और पक्षकी दशमा पर्यंत चंद्रमा पूर्णवली सक[illegible] कार्यन [illegible] उत्तम
है और कृष्ण ॥ १० ॥ ते शुक्ल दशमी पर्यंत क्षीण चंद्रमा जानिये सो शुभकार्यन
मे वर्जित है ॥ २०६ ॥ इति पूर्ण क्षीण चंद्र निर्णयः ॥ मूल ॥ पुनर्वसु [illegible] द्वयं [illegible] रेश्रुतिय
ग्मं करद्वयं ॥ रेवती द्वितीयं ज्येष्ठा मृगशीर्षे च आश्लेषे ॥ २०७ ॥ दी[illegible] प्राण हरे साज्ञा
मघामैत्रं च रोहिणी ॥ उत्तरा कृत्तिका वारा ॥ भानु भौम शनिश्चरे ॥ २०८ ॥ रिक्ता षष्ठाष्ट
मी द्वैया दौर्चंद्रद्वयोनिशिः ॥ संध्या विविश्च गंडांते भोजनांते च गोरहे ॥ २
९ ॥ टीका ॥ इन नक्षत्रन मे बालन नाहिवन बाइये म॰ मं॰ शो॰ कृ॰ रवि॰ भौम॰ श
नि॰ ये वार ॥ ४ ॥ ९ ॥ १४ ॥ क्षय ॥ ३० ॥ ये तिथै वर्जित है ॥ रात्रि और संध्या दो समय
और गंडांत मूलन मे मद्रन मे और भोजन करै पर और गोसाला मे बाल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मु॰टी॰ वनवावनेवर्जितहै॥इतिनिष्क्रमणौरं॥२०७॥२०८॥२०९॥मूल॥रेवतीयुगलं॰ पुष्यो रोहिणीमृगमैत्रयोः॥श्रवणोन्त्यःशकेश्च राज्ञोपि ट्टाभिषेचनं॥२१०॥टीका॥रे॰भि॰पुष्य॰रोहिणी॰मृ॰अनु॰श्र॰उ॰३॰ज्ये॰इननक्षत्रनमे राजाका जो अभिषेचन है तिलक॥सोकरिके राज्यबैठारिये॥२११॥इतिराजाभिषेषचन॥मूल॥ रेवतीयुगलं ज्येष्ठा मैत्रहस्तत्रयो मृगः॥पुनर्वसुःपुष्य विज्ञेयाःगणानांचैस्तुवैबुधैः २१४॥वस्त्रारोपं च वाजिनं सर्वे सिद्धिश्च कारयेत्॥वाहनानि चयंत्राणि गमनं च विधीयते॥२२२॥टीका॥रे॰अश्वि॰ज्ये॰पुन॰अनु॰ह॰चि॰स्वा॰मृ॰इननक्षत्रनके तिल कै सुभहै॥२१४॥इनमें वस्त्रलगावै और वाजिन्त्र रेवती वाहनहाथी घोडा॰ और रथ यंत्र रहट बाजे नगारे॥आदिकवनावनेउत्तमहै और [illegible]का॰ चलना येवातेइननक्षत्रमें सिद्धि होय॥२२॥मूल॥पूर्वात्रयं [illegible] [illegible]षा॰ स्वाकृतिकायमः॥मूलं चाधोमुखं ह्येयं नवकोयं गणो [illegible] मूला [illegible] [illegible] यैच खननं विवरस्य च॥गुर्ह्यवाधोमुखं यच्च नतत्कार्यं कारयेद् बुधः॥२[illegible]॥टीका॥ येनक्षत्र अधोमुख है॥पूर्वा ३ म॰श्ले॰वि॰कृ॰भ॰मू॰इनमें खनिकाये [illegible] मे है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋमियामादि संबंधकार्य श्रौरशत्रुसंघात आदिक उत्तमकर्ममें जो है॥ एतले॥
गुफा बावडी तहखाना आदि जो खोदना के कर्म है सो सब सिद्ध होवे॥ १
मूल॥ उत्तरात्रितीयं पुष्यो रोहिण्यार्द्राश्रुतित्रयं॥ ऊर्ध्वव[illegible]णे होयत्र[illegible]
[illegible]णीषु च॥ २५॥ प्रासादस्तंभगेहानि प्राकारध्वजतोरणं॥ नाना[illegible]
[illegible]मश्वं च कुर्याद्धूर्ध्वमुखो गणे॥ २६॥ टीका॥ येन[illegible] ऊर्ध्वमु[illegible]हैं। उ०
३ पु० रो० आर्द्रा श्र० ध० श० इनमें ऊर्ध्वमुख कार्य कीजे शिरोपाउ पहिरे दानध
रै घर बनावै ध्वजपताका चमर बंधन द्वार बागलालका विवाह अभिषेक
घोडेकी सवारी ये कार्य सिद्धि होय॥ २६॥ इति श्रीऊर्ध्वनये[illegible]
मूल॥ पुनर्वसुद्वयं चित्रा मृगाश्वाचकरत्रयं॥ मूलश्रुतित्रयं मैत्रं तिर्यक्कर्मो
णि हलौ॥ २७॥ सोमशुक्रस्तरोज्यानां वाराः शकुनमुत्तमं॥ लग्ने मेषचापमीने
कुंभवृषाक्षालितुलाधराः॥ २८॥ टीका॥ श्री सेहादिमें श्रौषधकरिये बे तुला
ये श्रौषधवनवाइये श्रीरसायिये पुनः पुष्य रे० उ० अ० मृ० ह० चि० स्वा० मू० श्र० श०
ध०॥ २९॥ सोमशुक्रये वार धन मीन वृष तुला उत्तम सगुण होय तो श्रौषधि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

शी·टी· वनाइये श्रीरघवाइये॥२१८॥इतिमेषजन्मकर्म॥मूल॥अमावास्याष्टमीत्याज्या
पूर्णिमा च चतुर्दशी॥रविवारे वर्जनीयो गोपशूनां च निर्गमः॥२१९॥चित्रोत्त
रा रोहिणी च श्रवणोपि विवर्जयेत्॥एतेषु पशुजातीनां अशुभं निर्गमे भवेत्
२२०॥टीका॥इतिपशुनिर्गमः॥मूल॥उत्तरा च विशाखायां रोहिणी च पुनर्वे
सुः॥नवम्यां च चतुर्दश्यां स्वक्षम्यां नानयेत्पशुः॥२२१॥पूर्वो मैत्रद्वयं मूलं वा
सवरेवती करः॥पुनर्वसुद्वयं ग्राह्यं पशूनां क्रयविक्रये॥२२२॥टीका॥उ·३
चि·रो·॥म॥१४॥८॥ये तीनि तिथि नक्षत्रनमें पशू ना लीजिये॥२२१॥श्री र पू·त्री·
३ रु·ज्ये·म·घ·रे·ह·पुन·पुष्य·इनमें पशू ना लीजिये॥२२॥मूल॥पूर्वोत्तरा
द्रपदा युग्मं स्वाति श्रवणरेवती॥हस्तोत्तराम्यो मैत्र [illegible] ॥२
२३॥आस्यानि मानि चैतानि क्रयविक्रययोर्बुधैः॥चंद्र [illegible]
शाकुनमत्तमं॥२२४॥टीका॥पुष्य·पू·भा·उ·भा·वा·श्र·चित्र·ह·[illegible]
नु·रे·श्ले·ये नक्षत्र और चंद्र·व·शु·ये वार क्रयविक्रयको श्रेष्ठ है उत शा
कुन लेके॥२३॥२२४॥इतिक्रयविक्रय॥मूल॥नंदा तिथिषु [illegible] दोषप्राणां

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चतथ्यांचिके ॥ घटिकैकाशुभे त्याज्या तिथिगंडे घटीद्वयं ॥ २२५ ॥ टीका ॥ नंदाति
थिकी आदिकी घटी १ पूर्णा के अंतकी घडी १ अशुभ है : २५ ॥ इति गंडांत [illegible]
मूल ॥ ज्येष्ठाश्लेषारेवती च नामंते घटिकाद्वयं ॥ आद्यो [illegible] ग
ड घटिका द्वयं ॥ २२६ ॥ टीका ॥ ज्ये॰ श्ले॰ रे॰ इनकी अंतकी घडी २ [illegible] की
आदिकी घडी २ अशुभ है शुभकार्य मे वर्जित है ॥ २२६ ॥ [illegible] ॥ मू
ल ॥ मीन वृश्चिक कर्कांते घटिकार्द्धं परित्यजेत् ॥ आदौ मे[illegible] चापसिंह
स्य घटिकार्द्धकं ॥ २२७ ॥ टीका ॥ मीन वृश्चिक कर्क इनक[illegible] की आधी घडी
और मेष धन सिंह इनकी आदिकी आधी घडी मे शुभ कार्य कोना कीजिये: ॥
२२७ ॥ इति लग्नगंडांत ॥ मूल ॥ तिथिगंडे भगंडे च लग्नगंडे [illegible] जातकं ॥ न जीव
ति यदा जातो जीवतेच धनी भवेत् ॥ २२८ ॥ टीका ॥ तिथिगंड नक्षत्रगंड लग्न
गंडकी जो घडी कही है इनमे जो मनुष्य का जन्म होय तो जीवे नही जो कदा
चित् जीवे तो धनी होय ॥ २२८ ॥ इति गंडांतफलं ॥ मूलं ॥ सप्तम्यां च रवेर्वारो
यस्यां च तिपादिने ॥ भवती त्व सतदा योगो वर्जितव्यः सदा बुधैः ॥ २२९ ॥ टीका

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ सप्तमीरविवार श्रोरपडवाबुधवारकी होयतो ताकोंसंवर्त्तोनामयोगकहते हैं॥
सोशुभकार्यकोंवर्जेहै॥२२९॥मूल॥इतिसंवर्त्तनामयोग॥॥शुक्रेनंदाबुधेभद्रा॰
शनौरिक्ताकुजेजया॥गुरौपूर्णातिथिर्ज्ञेयासिद्धियोगःप्रदाहृतः॥२३०॥टीका॥जो
शुक्रवारकीनंदातिथिहोय श्रोरबुधवारकोभद्राहोय शनिवारकोरिक्ताहोय मं
गलकोजयातिथिः गुरुवारकोपूर्णातिथिः इनवारनको श्रोरइनतिथनकेमेल
सेंसिद्धियोगकहियै॥तामेंजोकार्यकरैसिद्धिहोय॥२३१॥इतिसिद्धियोगः॥मूल॥
विष्कुंभ प्रीति रायुष्मान् सौभाग्यशोभनस्तथा॥अतिगंडः सुकर्माच धृतिःशूल
स्तथैव च॥२३१॥गंडोवृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातोहर्षणस्तथा॥वज्रःसिद्धिर्व्यतीपातो
वरीयानपरिघःशिवः॥२३२॥सिद्धिःसाध्यःशुभःशुक्लब्रह्मैं[illegible]॥सप्तविं
शतिराख्याता नामतुल्यानिकारयेत्॥२३३॥टीका॥विष्कुंभ१ [illegible] आयुष्मा
न३ सौभाग्य४ शोभन५ अतिगंड६ सुकर्मा७ धृति८ शूल९ गंड१० [illegible] ध्रुव
१२ व्याघात१३ हर्षण१४ वज्र१५ सिद्धि१६ व्यतिपात१७ वरियान१८ [illegible]१९
शिव२० सिद्धि२१ साध्य२२ शुभ२३ शुक्ल२४ ब्रह्म२५ ऐंद्र२६ वैधृति२७ ग्रना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मतल्पफलकहतेहैं॥२३३॥इतिसप्तविंशतियोगा॥मूल॥तां[illegible]
गुणांहत्वाहीनमेकैककारयेत्॥सप्तभिस्तुहरे[illegible]
ले॥२३४॥टीका॥शुक्लप्रतिपदातेजोतिथिगतभईहै[illegible]
तिसमेतकोद्विगुणीकरकेतामेंएकघटाइयेफिर[illegible]
शेषअंकबवबैसोकरणजानिये॥अबकरणोंकेनामक[illegible]है॥मूल॥बव
श्चबालवश्चैवकौलवस्तैतिलस्तथा॥गरश्चवणिजो[illegible]समेतेकर
णानिच॥२३५॥कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांशकुनिःपश्चिमे[illegible]॥चतुष्पद
श्चनागश्चअमावस्यादलेद्वये॥२३६॥टीका॥बव१बा[illegible]२कौलव३
तैतल४गर५वणिजविष्टि७येकरणचरसंज्ञाकहिये॥२३५॥कृष्ण
पक्षकीचतुर्दशीकोपश्चिमदलकहियेअंतकीआधीतिथिमेंशकु
नीनामकरणहोतहै॥तिसकाहाथीकास्वरूपहै॥औरअमावस्याकेए
वेईकहियेपहले॥आधीतिथिलौचतुष्पदनामकर्णहोतहै॥औरअ
परार्द्धअंतकीआधीतिथिमेंनागनामकरणहोतहै॥२३६॥मूल॥ध्रु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ ल्कप्रतिपदांतेच ववाख्यकरणोभवेत् ॥ एकादशाष्टविशैयाचरास्थिर
विभागशः ॥ २३८ ॥ टीका ॥ शुक्लपक्षकीपडवाकीउतरती ३० घडीमेंव
वनामकरण होतहै ॥ ताकेनिकालवेकौप्रकारएवेंहीकेश्लोककीरीत
सैसमझलीजिये ॥ जातिथिकेगणतसोजोकरणआवे सोतिथिकेउतर
ती ३० घरीमैसमझिये औरपर्वदलमेंजाथीतिथिपर्यंतउसकोपक्ष
रीवालाकरणजानियै ॥ याक्रमसोंविष्टीनामकरण [illegible] र्द्धकी
भद्रातामेंमातौचरकरणपरेहैकेफिरभद्राकेउतीरोन [illegible] मेंववकरण
होतहै ॥ औरयामेशुक्लपक्षकीपरवातेकृष्णपक्षकी [illegible] ति
थैछिगुणाकरकैपर्वान्तचरकरणजानिकेकौप्रकारहै [illegible] करण
निर्णयः ॥ मूल ॥ रक्षोयमौनलोधाताचंद्रोरुद्रोदिति [illegible]
पितरोभगोर्यमदिवाकरः ॥ २३९ ॥ त्वष्टावायुशक्र [illegible]
प्रतिः ॥ जलविश्वेविधिर्विष्णुःवासवोवरुणस्त [illegible]
हिर्वुध्नपूषेतिकथितावुधैः ॥ अष्टाविंशतिसं [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ष्वरा:॥२४१॥टीका॥ अब अट्ठाईसनक्षत्रोंकेस्वामीदे [illegible] वक्रमेंअश्विन्यादिरेवतीपर्यंतक्रमपूर्वककलिखते [illegible] ॥ मूल श्लोक ॥ नां [illegible] नमें देवताकीपूजनप्रतिष्ठादिककरै सोताकेनक्षत्र [illegible]

४०॥२४१॥ इतिनक्षत्राधिपतिः॥ इतिश्रीकाशीनाथकृते [illegible] कातिलकनक्षत्रप्रकरणंद्वितीयं॥२॥ मूल॥ शिरोमुखे [illegible] कृतिजनः॥ सवर्णधनधान्यानीलाभन्नत्वनसंशयः॥ [illegible] टीका॥ [illegible] ईश्वरकेप्रथमएकक्षणनापनाहाथमाथपेमुखपे कानन [illegible] बाये है॥ अग्निदेवता

रे·उ·पू·श·ध·श्र·उ·पू·मू·ज्ये·अ·वि·स्वा·चि·ह·उ·पू·म·श्ले· [illegible] आ·मृ·रो·क यमदेवता

पूषादेवता अहिर्बुध्न्यदेवता अजैकपाद वरुणदेवता वसुदेवता विष्णुदेवता विश्वेदेवता जलदेवता निर्ऋतिदेवता इन्द्रदेवता मित्रदेवता इन्द्राग्निदेवता वायुदेवता त्वष्टादेवता सूर्यदेवता अर्यमादेवता भगदेवता पितृदेवता सर्पदेवता गुरुदेवता अदितिदेवता रुद्रदेवता चन्द्रदेवता ब्रह्मदेवता

वतौ धनधान्यलाभहोय कार्यसिद्धिहोय यामेसंशयनीहांहै॥२॥ मूल कंधयोर्वाकंठहस्तस्पर्शेलाभोहिदुःखिताः॥ कुचनाभिसमालाभोम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ ह्यपानादिसिध्यति॥२॥टीका॥ जो प्रश्नपूछनके समय अपनेकांधेयाकंठ याहाथसे हाथमलै तो लाभहोइकहैसे औरकोतअथवानाभिमें हाथ छुवायकै तो साधारणलाभहोय॥२॥मूल॥ जंघालिंगकटिस्पर्शेकन्यालाभस्ततोध्रुवः॥ जानुगुल्फपदस्पर्शे महाक्लेशप्रजायते॥३॥टीका॥ जो जांघलिंगकटिछूयकैपूछैतो कन्यापुत्रादिकसंतानकी उत्पतिहोय॥ औरखोटे अथवावाईछूयकैपूछैतो अथवागुल्फछूवै [illegible] महाक्लेश होय॥३॥मूल॥ केशस्पर्शेभवेन्मृत्युः फलस्पर्शेशुभंभवे[illegible]गाम कसंस्पर्शेकार्यसिद्धिर्नजायते॥४॥टीका॥ जोकेशछु[illegible] औरजोफलछुवैतोशुभहोय अतिनकावस्त्रानिछु[illegible] होय॥४॥मूल॥ काष्ठपंकपदस्पर्शे ग्रहपीडाभयंभवे[illegible] डादिस्पर्शेसिद्धिप्रजायते॥५॥टीका॥ लकडीकोंकी[illegible] ग्रहपीडाहोयभयहोय औरसांधकामचाकामाड[illegible] मसिद्धिहोय॥५॥मूल॥ श्रृमालयेश्मशानेचप्रश्नकाळे[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लग्नमस्थो धनस्थो ने प्रश्ने क्लेश एव जायते ॥ ६ ॥ टीका ॥ लग्ने घर [illegible] नां [illegible]
पर मस्थायन मिमै घायल के घर गुल्म ल ता [illegible] ॥ [illegible]
पापस्थान विषे ॥ इतनी ग्रहों बैठके प्रश्न पूछै तो महा [illegible]
देवगृहे न दातारो दश्मस्थाने शुभं भवेत् ॥ सर्वे द्वि [illegible] ॥ [illegible]
न जायते ॥ ७ ॥ टीका ॥ देवस्थान में न दाके तीर ॥ उत्तम [illegible]
के पूछै प्रश्न तो शुभ है ॥ श्री रचारो कोन श्रुद्ध दिशान के [illegible]
श्रेष्ठ है ॥ श्रीरवो दिशा मै हो के पूछै तो नेष्ट है ॥ ८ ॥ मूल ॥ [illegible] शेनादि
प्रश्न ॥ तिस्रो मीने च मेषे च घट्यः पंच श्रुतिपलं ॥ च [illegible] वृषे कुंभे प
लाश्चैव काश्च षोडश: ॥ ९ ॥ मकरे मिथुने पंच घटिका विंशत्वापलं ॥ पंच
कर्के च चापे च शशिवेदापलास्मृता: ॥ ९ ॥ कंन्या पंच तुले पंच पलाश्च
दुतथाद्भय: ॥ घटिका पंचाधिके ह्रौ हयै वेदापलास्मृता: ॥ १० ॥ एवं लग्न
प्रमाणं स्यात्कथितं पूर्व सूरिभि: ॥ टीका ॥ सब लग्नन के घटी पल कहते
है सो समझ लीजिये ॥ इति लग्न प्रमाणं ॥ मूल ॥ सूर्ये घेनश्च तासंश्च गो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मे॰	वृ॰	मि	क॰	सिं॰	कं॰	तु॰	वृ॰	ध॰	म॰	कुं॰	मी॰	[illegible]
३०	४	५	५	५	५	५	५	५	३	४	३	
१५	९२	५	४२	४२	४५	४५	४२	४२	५	१६	४५	

गोधूमारक्तचंदनं॥ चंद्रे शंखं चंदनं चव
स्त्रं चासितं तंदुलाः॥ कु
जे वस्त्रप्रदानंच्यार
नवस्त्रं गुडो रदनं॥ बुधे कर्पूरमणाश्चाव हरिवस्त्र हरिन्मणिः॥ पीतवस्त्रं द
यं जावे हरिद्रा ब्राह्मणकानिच॥ १२॥ श्वेतपुष्पं शुके सितो देयाः [illegible] धान्यानि
धानिच॥ शनौ तैलंतिलादेयाः कृष्णगोदानमुत्तमं॥ राहो चर्मा हारं [illegible] छा
गौ माषश्च तिलसर्षपाः॥ श्वजं मेषीच दानंश्चो केतौ चा [illegible]॥ १५
स्त्रर्णगोविप्रपूजाभिः सर्वे शांशांति सत्तमाः॥ टीका॥ सू [illegible] के [illegible] क
हते है सूर्यको लालगाई ताबा गेहूं रक्तचंदन॥ १४॥ चं [illegible] त
दन सेतवस्त्र चावल॥ १२॥ मंगलको लालवैल लालव [illegible]
कपूर मंगा हरावस्त्र हरीमणी पन्नाइत्यादिक हरें [illegible]
वस्त्र दालचनेकी सुवर्ण॥ १३॥ शुक्रको दानसेत श्वेत [illegible] देना [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शनिकोतेल कालीगऊ कालावस्त्र तिल लोहा [illegible] ॥ [illegible] नां [illegible]
कोसतनजा भैंसछेरी कोयला मछरी उडद तिल [illegible] ॥ [illegible]
कोसतनजा मेढा हथियार सवणे स्यामवस्त्रदीजे ॥ [illegible] केतु [illegible]
नादियेतेसकल ग्रह शांत होते है ॥ इतिग्रहदानम् ॥ [illegible] ॥ [illegible]
दंचसवाष्टिश्च सुखीनरः ॥ पद्यं ॥ वृषेगुरौ खल्पवृष्टिः [illegible] पीडा [illegible]
त्र ॥ सुनावृष्टिप्रजानाशोरोरवंमिथुनेगुरौ ॥ १ ॥ कर्के [illegible] मह [illegible] ष्टिः
[illegible] गोमहर्घता ॥ सिंहेगुरौसुभिक्षंचसुवृष्टिश्चप्रजासुख ॥ १४ ॥ [illegible]
रोरोगपीडासुभिक्षंसम्यजन्मच ॥ तलेगुरौशस्यनाश [illegible] रप्रजा
यते ॥ १५ ॥ अलेजीवेचदुर्भिक्षंराजचौरौरगाद्भयं ॥ चापेगुरौशुभावृष्टिः
शुभंशस्यमहर्घता ॥ २० ॥ दुर्भिक्षंमकरेजीवेराजयुद्धंपशुक्षयं ॥ कुंभेगु
रौचदुर्भिक्षंधातमूलमहर्घता ॥ २१ ॥ दुर्भिक्षंदक्षिणेदेशेझषेजीवेन
चान्यथे ॥ टीका ॥ जवमेषपेब्रहस्पतिआवेतोसुभिक्षहोवे वर्षाअछीहो
य मनुष्यसुखितरहै १६ वृषकेगुरुहोयतो वर्षाथोडीहोय प्रजापीडा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होय विग्रह होय॥ मिथुन गुरु होय तौ वृष्टि बहुत थोड़ी होय प्रजा बहुत
छीजै वैर बढै॥२०॥ और कर्क के उच्च के बृहस्पति होय तौ बड़ी वर्षा होय
और देश मंगल होय अन्न महंगो होई सिंह के बृहस्पति होय तौ सुभिक्ष हो
य वर्षा अधिक होय प्रजा सुखी रहै॥२२॥ कंन्या के गुरु होय तौ रोग पीड़ा
होइ सुभिक्ष होय अन्न बहुत होय॥ तुला के बृहस्पति होय तौ [illegible] की का
नास होय दूध बहुत होय॥२५॥ वृश्चिक के गुरु होय तौ [illegible] नै उपद्रै औ
र चोर भय विशेष होय धन की बृहस्पति सु मै [illegible] [illegible] तौ बहुत
फलै रस महगा होई॥२०॥ मकर के बृहस्पति होय तौ म[illegible] औ
र देशपति राजन सों युद्ध होय कुंभ के बृहस्पति होय [illegible] वर्षा [illegible] औ
र धान महंगो होय॥२१॥ और जो बृहस्पति मीन राशि मे [illegible] की [illegible]
की दिशा में दुर्भिक्ष परै और दिशा मैं नही॥२८॥ इति बृ[illegible]
गुरु शुभाशुभ यथा फलं॥ अथ संक्रांति तौ षष्ठपरी [illegible]
म फलम्॥ मूल॥ मार्ग कार्तिक संक्रांतौ वृषे शेव षेति [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नएां सोख्ये समस्तलोक सुधरा ॥ चैत्र फाल्गुणे वैशाखे [illegible] थे ॥ ना [illegible] घ
घनः ॥ यदि वर्षति सर्वत्र सुभिक्षं च प्रजा सुखं ॥ आषाढे [illegible] ॥ [illegible]
श्रावणे सुखं ॥ माद्रे च बहुधा रोगा सुखं सर्वत्र चाश्विने ॥ [illegible] ॥ [illegible]
तीव्रां दृष्टि पि सुभाष्यं ॥ २५ ॥ टीका ॥ जो ग्राहन और [illegible] नाशो ज [illegible] औ
त जो ने दिन लगे ता हा दिन वर्षा होय और रीका अधिक [illegible] कीप [illegible] से
मध्यम वर्षा होय और समा मध्यम होय ॥ २५ ॥ और प [illegible] को महीं
नेन के मास तथा वैशाख के महीने की संक्रांतिन को [illegible] ष्टि हो
यतो सर्वत्र सुभिक्ष रहै ॥ और अन्नादिक सकल पदार्थ [illegible] प्रजा आरो
ग्यता पूर्वक सुखी रहै और पाट ऋतु की संक्रांतिन को मेघ वर्षै तो प्रजा
सुखी रहै ॥ और अन्नादिक सकल उत्पति अधिक होय और चैत्र के म
हीना और फाल्गुण ॥ २३ ॥ और आषाढ की संक्रांति के दिन जल वृष्टि हो
यतो प्रजा को रोगा की अधिकता होय ॥ और जो संक्रांतिन के दिन को व
ष्टि होयतो सृष्टि को अधिक सुख होय ॥ २४ ॥ और भादों की संक्रांति को व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी·टी· ष्टिहोयतौ अनेकरोगाहोई॥ और कुवारकीसंक्रांतिकौवर्षेतौ सवहीकौवर्षे
सवहीकौ आनंदहोय॥ याप्रकारसौ इनवारहसंक्रांतिनकौशुभाशुभफल
काहियै॥ औरइनमेंकुछराशिमासकासंवंधनाहीहै चाहेतिसराशिकेसूर्यआ
वे केवलमासिकफलहै॥२५॥ इतिद्वादशसंक्रांतिवृष्टिशुभाशुभफलं॥ अ·
थमासेमासेपंचमीवायुसंवंधफलं॥ मूल॥ चैत्रमासेशुक्लपंचम्यां पूर्वेवायुर्घ
नागमं॥ आर्द्रगुणत्रयंमौल्यंरससंपांजायतेतदा॥२६॥ ज्येष्ठ [illegible] पंचम्यांव
हेपश्चिममारुतः॥ तदाचतुर्गुणंमौल्यंधान्यानांकीर्तिकेभवे [illegible] ॥ श्रावणे
शुक्लपंचम्यांवृष्टिर्वातेदिनत्रयं॥ दक्षिणेपश्चिमेशेयंदुर्भिक्षं [illegible] धान्यसंक्षयं॥२८
टीका॥ चैत्रशुक्लपक्षकीपंचमीकौ औरपूर्वौपवनचलेअ [illegible] वर्षे॥ तौमादौ
मेतिगुणौमोलविकाय रसगौरसघीव॥२६॥ औरज्येष्ठशु [illegible] क्षकीपंचमीकी
जोपवनचलैतौमेघवर्षे॥ तौकातिकमैचौगुणौमोलअन्न [illegible] ॥ [illegible] ॥ तौसा
वनकीशुक्लपक्षकीपंचमीकौ दुइदिनपवनचलैमेघ [illegible]
दिशामैधान्यकीक्षयहोय॥२८॥ इतिशुक्लपंचमीफल॥ [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

णाख्यायां श्रावणेचैववर्षेति॥ सर्वरत्नपरिस्ताज्यव [illegible] र्य॥ [illegible]
२८॥ इति॥ टीका॥ वि·खा·वि·येनतत्रचैत्रश्रावण [illegible]
कू छाडिकेयन्नकासंग्रहकरिये॥ २९॥ इतिनक्षत्र [illegible] मूल॥ आ
षाढीपूर्णिमायांचदनलोजातिनैऋतः॥ अनावृष्टि [illegible] नाशोजलकृ
पेनदृश्यते॥ ३०॥ टीका॥ आषाढीपौर्णमासीकोजोनैऋत [illegible] की पवनचले
तौलोकविषैवषोथोडोहोय॥ औरसकलअन्नादिकधान्य [illegible] थोडउत्पतिहो
य॥ नवसकासोसमाईजायतण थोडाउपजै जलकू [illegible] दीषै॥ ३०
मूल॥ आषाढपूर्णिमायांतुवायव्येयदिमारुतः॥ धर्मे [illegible] दालोके
धनधान्यगृहेगृहे॥ ३१॥ टीका॥ आषाढकीपूर्णमासीकोवायव्यदिशाकी
पवनचलेतौ लोकविशेषशीलधर्मे होई॥ ३१॥ मूल॥ आषाढपूर्णिमायांतु
ईशानेयदिमारुतः॥ सर्वनोहितदालोकाःगीतवाद्यपरायणाः॥ ३२॥ वन्हि
कोणेवन्हिभीतिःपश्चिमेचजलाश्रयं॥ अन्तरयदिवायुःस्यात्तभिदजाय
तेतदा॥ ३३॥ टीका॥ आषाढकीपूर्णमासीकोईशानदिशाकापवनचलेतौ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विशेषसुखहोय सबमनुष्य आनंदकरै ॥३२॥ और जोअग्निकोणकीपवनचले
तौजलकोभयहोय ॥३३॥ मूल ॥ सर्वमासेषु पौर्णिमायां भूमिकंपोयदा भवेत् ॥ उ
ल्कातारावज्रपातः सग्रहः शशिसूर्ययोः ॥३४॥ धूम्रकेतुः चक्रचापः ग्रहणोव
हुधातथा ॥ तदा चसर्वववत्सलं जायते च महर्घता ॥३५॥ टीका ॥ किसीमहीने
कीपौर्णिमाकोभूमिकंपहोय ॥ अथवा वादिनमे तारा टूटेका उल्कातारावज्र
पातगाजपरेतौ काचंद्रसूर्यकाग्रहणपरै काधूम्रकेतुउ[illegible] आवत्तमाहि
हुधनुषऊगै ॥ वहुतग्रहणपरैतौ सकलवस्तु महगी होई ॥३५॥ [illegible] [illegible]
उत्पातफलं ॥ मूल ॥ आषाढशुक्लपंचम्यां द्वितीयायां च व[illegible] वर्षे भवत्तः
दा व[illegible]जायते श्रावणे ध्रुवं ॥३६॥ टीका ॥ आषाढसुदि पं[illegible]कौ तौ श्रा
वणमेंवर्षा होय ॥३६॥ मूल ॥ तृतीयायां पूर्वे वायुः पूर्वे जात[illegible] ॥ यदि
भौमस्तदा भाद्रे वर्षति विपुलं जलं ॥३७॥ टीका ॥ आषाढ[illegible]
वर्षेतौ भादौ जाटे वर्षे ॥३७॥ मूल ॥ चतुर्थ्यां दक्षिणे वायुः [illegible]
श्विने च यदा मासे वृष्टिर्भवति निश्चितं ॥३८॥ टीका ॥ अ[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकीवायु पूर्वकोजायतो आश्विनमेव हूतवर्षाहोय ... ॥ संयह ॥
३८ ॥ मूल ॥ पंचम्यामुत्तरेवायुः हृश्यते चयदा बुधैः ॥ तद ... फल ...
मेवतिभयसी ॥ ३८ ॥ टीका ॥ आषाढशुदि ५ कोउतरकीप ... मूल ... तक
मेवहूतवर्षाहोय ॥ ३९ ॥ मूल ॥ चतुर्थ्येवादिवसेयदि वर्षे ... नाशो आतव
स्याचदुर्भिक्षंजायतेनात्रसंशयः ॥ ४० ॥ टीका ॥ आषाढकी ... कीपःकोमेघ
वर्षतोअतिवर्षाहोइ अन्नथोरेहोयदुर्भिक्षपरे ॥ ४० ॥ मूल ... थोडयदाजा
तोवाल दक्षिणपश्चिमे ॥ तदानश्यति धान्यानि दुर्भिक्षं च ... ॥ ४१ ॥ टीका
आषाढशुदि ॥ ५ ॥ पवनदक्षिणतेपश्चिमकोजायतोधान्य ... होय ॥ ४१ ॥
मूल ॥ तृतीयायांच पंचम्यांवायुपूर्वोतरोयदि ॥ तदाधान्यानिजायंते सर्वेकृत
युगोयमं ॥ ४२ ॥ टीका ॥ आषाढशुदि ॥ ३ ॥ ५ कोपरवाईके उतरहूसीचलेतोव
हूतअन्नहोयसतयुगकेसा ॥ ४२ ॥ मूल ॥ इत्याषाढशुक्लद्वितीयादिदिनचतुष्टय
फलं ॥ पौषमूलमसएयांतं चंद्रचारेणगर्जति ॥ आर्द्रादितोविशाखायांसप्ते...
देनवर्षति ॥ ४३ ॥ टीका ॥ जोपौषमासमेंनिनिस्यकेचांदकनक्षत्रेतेमरणालौ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इनमें ११ वा दरना होय तो आईनमें विशाखोलो ११ सर्यन न्नन नावरषे जो
इनमें बादर होय तो वैव रषे ॥४३॥ मूल ॥ यदि तिष्ठति भौमस्य दैत्र को पिंगरह
तदा ॥ षण्मासं तु घधान्यानां जायते च महर्घता ॥४४॥ टीका ॥ जो भौम के दै
त्र को ऊग्रह होय तो ६ मास लों हलका जो तास्नन महगा रहे ॥४४॥ मूल ॥ शु
क्र दैत्रे वु जे मास ह्यं यन्न्नं महर्घता ॥ चंद्रं च दिननाथे च सर्वे रोगा शुभं तदा ॥४५
टीका ॥ शुक्र केलदैत्री भौममें ६ मास महंगा रहे जो रवि चंद्र [illegible] केमें कुज
होय तो रोग होई ॥४५॥ मूल ॥ शनौ राहो सर्व धान्यं महर्घं राजविग्रह ॥ बुधे दै
त्रे रवौ चंद्रे विरोधं सर्वे भूभुजां ॥४६॥ टीका ॥ जो शुक्र लदैत्री [illegible] य औ रशनि
राहु जाय मिलें तो सकल अन्न महगो होय ॥४६॥ औरराज [illegible] में विरोध होय
औरजो बुध कन्या मिथुन में होय तिनमें सूर्य चंद्रमा दोनों [illegible] मिले तो जो ए
के राशि के होय जाय तो ह राज राजन में बडा विग्रह होय [illegible] तु
ल्य धान्यानां पंच मास प्रजायते ॥ इमिंदंच महर्घ [illegible]
४७ ॥ टीका ॥ औरपस्यौ [illegible] होयो गासो ५ मास पर्यंत अन्न की [illegible] को [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कालहोयरहेचौपायनकोचारावहुतहोय॥४८॥मूल॥गुरुदेत्रेभेवं...
चंद्रदेत्रेभगोसुतः॥पांषंडानांभवेद्वृद्धिःधाम्मानांचमह... ॥ ... ॥
जोगुरुकीराशिकेवुधचंद्रमाहोय औरचंद्रमाकीरा... पाषं
डकीवृद्धिहोय॥४८॥मूल॥बुधेदेत्रेशनौचंद्रेतप्तधान्य... महर्घता॥गुरुदे
त्रेऽरौभौमेकर्पासादिमहर्घता॥४९॥टीका॥बुधदेत्रमें ...निचंद्रमाहोय
एकत्रअन्नमहंगोहोय सातोअन्नधाटविके॥औरगुरु... त्रमेंमंगलभौम
होयतौकपासआदिकजेषटरसहेतेमहंगोहोय॥मूल॥भौमदेत्रेशनौ
राहौतामादीनांमहर्घता॥शनिदेत्रेशनौराहौसमेंदै ...भास्करे॥५०
टीका॥जोभौमकेघरमेंशनिराहुएकठेहोयतौ तांवेकूआदिलेके आ॰
ठोंधातमहंगोहोयनिश्चैहोय॥औरशनिकीराशिमेंशनिराहुएकत्रहोय
तौ जोचंद्रमासूर्येजायमिलेतौसमितहोय॥५०॥मूल॥पशुनाशोधा
न्यवृद्धिर्डादीनांमहर्घता॥गुरुदेत्रेशनौराहोरल्पवृष्टिस्तणंतयं॥५१॥
टीका॥गुरुकीराशिमेंशनिराहुहोयतौ पशुनकोनाशहोय अल्पतणंदि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वा॰टी॰ कनकीतयहोय॥५१॥मूल॥भौमेराज्ञांविरोधस्स्याद्बुधेवृष्टिश्चभूयसी॥तत्रैवविष्टः
पशूनांचसौख्यंधान्यबहुनिच॥५२॥टीका॥जोगुरुक्षेत्रभौमहोयतौराजानमें
विरोधहोय॥श्रोरजोगुरुकेक्षेत्रमेंबुधहोयतौ वर्षाअधिकहोयतत्रएवदिकवि
शेषहोय पशूनकोसुखकोयधान्यबहुतपैदाहोय॥२२॥मूल॥भौमक्षेत्रेयदा
संतिराहुभौमार्किभार्गवः॥धान्यमासंगुडसर्पोसघृतंताम्रमहर्घता॥५२॥टीका
जोमंगलकेक्षेत्रमेराहुहोयतौ अथवाभौमशुक्रहोयतौ [illegible] भौमशुक्रहो
यकासमेंहोयतौ महीनेलोंगुडकपासघृतदूधमहगाहोय॥५३॥मूल॥मंद
क्षेत्रेयदासंतिमंदराहुबुधास्तथा॥चतुष्पदानांनाशश्चवि[illegible]यते॥५४
टीका॥शनिक्षेत्रमेशनिराहुबुधहोयतौ चतुष्पदकोनाशहो[illegible]मविरो[illegible]परजो
मनुष्यहैतिनकानाशहोय॥५४॥मूल॥भौमक्षेत्रेयदासंति[illegible]मिले[illegible]करे
तदामत्तापशूनांचशंखस्यचमहर्घता॥५५॥टीका॥जोभौ[illegible]
चंद्रमाहोयतौपशूनकोनासहोय श्रोरशंखमहगोहोय॥[illegible]
मार्गवस्यधान्यानांचमहर्घता॥शनिक्षेत्रेरविश्चंद्रेवक्षा[illegible]उत्पत्तिःको[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का॥ भौमके क्षेत्रमे शुक्र जायतौ अन्नमहंगो होय॥ और राशि [illegible] शुक्र क्षेत्रमे बुध॥
वस्त्रमहंगो होई तामें विशेषकरि अन्नपीतवर्णकैवस्त्र [illegible]॥ [illegible]
मूल॥ शुक्र क्षेत्रे गुरौ भौमे प्रजापीडा च जायते॥ ग्रहराशि [illegible]
कीर्तिताः॥ ५७॥ टीका॥ जो शुक्र क्षेत्र मे भौम गुरुयोग करै [illegible] पीडा
होय॥ ऐसे ग्रहको और राशिनको योग आनि परै तौ ऐसे फल [illegible] नि चंद्र शुभ॥ ५
मूल॥ चंद्रोदये कुज क्षेत्रे लवधान्यस्य वृद्धये॥ चंद्रोदये [illegible] वृद्धि
कराणये॥ ५८॥ टीका॥ भौमके क्षेत्र चंद्रमाका उदय होय [illegible] भौम मिलै तौ
धान्यकी वृद्धि होय॥ ५८॥ मूल॥ प्रजापीडा बुध क्षेत्रे सोम [illegible] यो भवेत्॥
रविक्षेत्रे तुलावृद्धि शनि सोमस्य गोदयः॥ ५९॥ टीका॥ बुधके क्षेत्रमे चंद्र शुक्र
का उदय होय तौ प्रजाको पीडा होय॥ और सूर्यकी राशिमे शुक्रका उदय हो-
य तौ तुला जो हैं डांडी तिसकी वृद्धि होय अन्नसस्ता विकै॥ ५९॥ मूल॥ चंद्रक्षेत्रे
शुक्र चंद्र बुधेनासदयो भवेत्॥ षण्मासस्याच्च दुर्भिक्षं मानवृद्धिश्च जायते॥
६०॥ टीका॥ जो चंद्रक्षेत्रमे शुक्र चंद्र बुधके उदय होय तौ छमास पर्यंत लौ दुर्भि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰ टी॰ दाहोय महगो रहै वर्षोस्त्र अधिक होय ॥ ६० ॥ मूल ॥ उदितौ च बुधे देवे यदा रा
हु शनैश्चरे ॥ पशुक्षय प्रजापीडा धान्यानां च महर्घता ॥ ६१ ॥ टीका ॥ बुध के
देव मै राहु शनि का उदय होय तो पशु की क्षय प्रजापीडा होय अन्न महगो हो
य ॥ ६१ ॥ मूल ॥ शुक्र देवे सोम्य सूर्ये सूर्य पुत्रोदयो यदा ॥ उदयात्म महापीडा
जायते च महर्घता ॥ ६२ ॥ टीका ॥ जो शुक्र के देव मे चंद्र सूर्ये शनि का उदय
होय तो सूर्य के उदय ते मास पर्यंत पीडा होय अन्न महगो हो [illegible] ॥ मूल ॥ य
द्योदय शनि देवे भौम भास्कर योर्भवेत् ॥ घृतानां च तैला [illegible] नां च मह
र्घता ॥ ६२ ॥ मूल ॥ जो शनि देव मे सूर्य का उदय होय तो घ [illegible] होय ॥ जो
रस वस्त्र सतो होय सौभाग्य भाषित पदार्थ सब सस्ते रहै ॥ [illegible] मे
भौम होय तो हु सर्वोक्त फल होय ॥ ६३ ॥ मूल ॥ यदा सौम्य [illegible] देवे
शनैश्चरः ॥ तदा सौ तृण काष्टानां लोहानां च महर्घता [illegible] हे
जो शनि मे तृण काष्ट होय वे महगो होय ॥ ६४ ॥ इतिय [illegible]
गुरु यदा विशोवायां तेदा धान्य महर्घता ६ मंगल व [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंगलम्॥ ६५॥ टीका॥ जो विशाखाके गुरु होय तौ अन्न [illegible]
लौ सर्वमंगल विनोद रहै:॥ ६५॥ मूल॥ आर्द्रायां यदि र [illegible] ती
नवेत्॥ बुधे माहेन्द्रे च सुभिक्षं सुभिक्षं भृगुनंदने॥ ६६॥ टी[illegible] ॥
ल होय अथवा शनि होय तौ दुर्भिक्ष होय॥ और पूर्वाभाद्रपद व [illegible] दि
दुर्भिक्ष परै॥ ६६॥ शुक्र होय तौ सुभिक्ष परै॥ मूल॥ सुभिक्षं च [illegible] गयदि
कोपि ग्रहो भवेत्॥ कल्याणं च सुभिक्षं च दस्रेषायास्थिरे [illegible] ॥ टीका॥
जो अनुराधा कोई ग्रह होय तौ सुभिक्ष होय॥ और जो श्लेषाके [illegible] होय तौ यु
जाका कल्याण होय सुभिक्ष होय॥ ६७॥ मूल॥ मघायां च ह [illegible] भौमे कर्के
टपीडनं॥ बुधे तल्लाश्च माषाश्च महर्घे वर्षकालतः॥ ६८॥ सूर्ये सर्वाणि धा
न्यानि महर्घाणि भवंति च॥ शुक्रे च महती वर्षा सस्यानि सकलानि च॥ ६९॥
टीका॥ जो श्लेषाके मंगल होय तौ कपास सस्ती होय और फौजन में पीडा हो
य॥ जो बुध श्लेषाके होय तौ तिल उर्द वर्षा दिन लौ महंगे रहै॥ ६८॥ और जो
श्लेषाके सूर्य होय तौ अन्न महंगो होय श्लेषाके शुक्र होय तौ वर्षा बहुत हो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

शी॰टी॰ य अत्रसर्वकृतहोय॥ ८९॥ मूल॥ मूलेगुरौकुलस्यानांमृत्युश्चवकृधामवे
त॥ भौमेमृत्युस्यनाशस्स्यबुधेचसर्वत्रसंपदा॥ ७०॥ टीका॥ जोमूलकेगुरुहोयतो
कुथीमेंरागबहुतपैदाहोय॥ औरजोभौमहोयतोमृत्युनाशहोय औरबुधकेहो
यतोसर्वसंपदाहोय॥ ७०॥ मूल॥ पूर्वाषाढगतेभौमेपीडाचपश्चदक्षिणां॥ केतौ
महर्घतामंदेजायतेचमहर्घता॥ ७१॥ टीका॥ जोपूर्वाषाढकेभौमहोयतोप
श्चपदक्षिणाकोंपीडाहोयअधिक॥ औरकेतुहोयतोसकलव [illegible] होय
७१॥ मूल॥ उत्तराषाढकेजीवेपुडानांचमहर्घता॥ भौमेचप [illegible] जाय
तेचमहर्घता॥ ७२॥ अभिजिन्नामनक्षत्रेयदाहायास्ततो [illegible]
जायंतेमृगमिंदंचकुजेतथा॥ ७३॥ टीका॥ जोउत्तराषाढके [illegible] होयतो
गुडमहगोहोय॥ औरजोभौमहोयतोचौपायेमहगेहोय [illegible]
जितनक्षत्रकेशनिहोयतोसर्वअन्नउपजैमगिलहोय [illegible]
यदाजीवेतदास्युःसर्वसंपदा॥ बुधेराजसुतत्रासोशनै [illegible]
७४॥ कृत्तिकायांचरोहिण्यांयदाजीवोहितिष्ठति॥ मघ [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाव द्विक्ष्ममध्यमाः ॥ ७५ ॥ टीका ॥ जोश्रवणकेवृहस्प [illegible]
य बुधहोयतौराजपुत्रनकोपीडाहोय औरजोशनि [illegible] तो
तउपजे ॥ ७४ ॥ जोकृतिकारोहिणीकेगुरुहोयतौ अ [illegible] तौ
मध्यमहोय ॥ ७५ ॥ मूल ॥ आर्द्रायांमृगशीर्षेचयदावास्य [illegible]
दांस्यादनावृष्टीप्रजानांचसदाशिवं ॥ ७६ ॥ टीका ॥ जोआर्द्रा [illegible] गशिरके
गुरुहोयतौदुर्भिक्षहोयवर्षाथोडीहोय ॥ अनेकप्रकार [illegible]
औरपीडाहोय ॥ ७६ ॥ मूल ॥ फाल्गुणीद्वयहस्तेषुमघाय [illegible]
सुभिक्षंचक्षेमवृष्टिश्चप्रजानांस्यादरोगता ॥ ७७ ॥ टीका ॥ [illegible] होहस्तउत
राफल्गुकेगुरुहोयतौसुभिक्षहोय ॥ अन्नउपजेवर्षाभलीहोयरोगनाशहोय
७७ ॥ चित्रास्वातिकेगुरुहोयतौविचित्रमेघवर्षे ॥ औरकहूंकहूंविचित्रफल
फूलेअन्नअधिकउपजे ॥ मूल ॥ विशाखामैत्रयोजीवेधान्यंवर्षेचमध्यमं
ज्येष्ठामूलेमासयुग्मंवृष्टिर्मासद्वयोनच ॥ ७९ ॥ टीका ॥ विशाखाअनुरा
धाकेगुरुहोयतौवर्षेश दिनलोअन्नमध्यमरहै ज्येष्ठामूलकेगुरुहोयतौ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ मास २ पर्यंत वर्षा होय ॥ ७९ ॥ मूल ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढोः स्थितो यदि बृहस्प
ति ॥ तदारोग्यं सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च जायते ॥ ८० ॥ टीका ॥ पूर्वाषाढा उत्तराषा
ढ के गुरु होय तौ ॥ १ ॥ जा आरोग्य रहै वर्षा नीकी होय ॥ ८१ ॥ मूल ॥ अनावृष्टि
श्च दुर्भिक्षं रेवत्यां संस्थिते गुरौ ॥ धनिष्ठायां च शुक्रे पिपीडा भवति हस्तिनां
८२ ॥ टीका ॥ जो रेवती के गुरु होय तौ वर्षा थोरी होय अन्न महंगा रहै [illegible] धि
निष्ठा के शुक्र होय तौ हाथियन को पीडा होय ॥ ८२ ॥ इति न[illegible] वा २
इति श्री काशीनाथ कृतौ शीघ्रबोधे सनाभिवार्तिक तिल[illegible] प्रक
रणं तृतीयम् ॥ ३ ॥ अथ होडाचक्र लिख्यते ॥ नक्षत्रों [illegible] तेहः प
एक नक्षत्र के चार चरण होत हैं ॥ जौन चरण को जन्म हो[illegible] पैः
नाम धरिये ॥ चू चे चो ला अश्विनी १ ली लू ले लो भरणी २ [illegible] ३
ओ वा वि वु रोहिणी ४ वे वो का कि मृगशिर ५ कु घ ङ छ [illegible]
पुनर्वसु ७ हु हे हो डा पुष्य ८ डि डु डे डो अश्लेषा ९ मा मि मु मे [illegible]
र्वा फाल्गुनी ११ टे टो पा पि उत्तराफाल्गुनी १२ पु ष ण ठ हस्त [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४ रूरेरोतास्वाति ॥ १५ तितूतेतोविशाखा १६ नतिनूने [illegible]
ज्येष्ठा १८ जेजोममिमूल १९ मधापाफाढापूर्वाषाढ २० [illegible]
२१ जुजेजोषाऽभिजित् २२ खिखुखेखोश्रवण २३ गगि [illegible] प
गोशाशिशुशतभिषा २५ शेशोदादिपूर्वाभाद्रपद २६ दुप [illegible] गोश
द २० देदोचाचिरेवती २८ ॥ इति होडाचक्र ॥ अथ सपादऋ [illegible]
क्रमः ॥ अश्विनीभरणीकृत्तिकापायमेष १ ॥ कृत्तिकानां त्रयो [illegible]
गशिरार्द्धंवृष २ ॥ मृगशिरार्द्धंआर्द्रापुनर्वसुपादत्रयंमिथुन [illegible] पादमे
र्कपुष्यश्लेषांतेकर्क ४ ॥ मघाचपूर्वाफाल्गुनीउत्तरापादै [illegible] फा
ल्गुनीत्रयोपादहस्तचित्रार्द्धंकन्या ६ ॥ चित्रार्द्धंस्वातिविशाखापा [illegible] ॥ ७
विशाखापादमेकंअनुराधाज्येष्ठांतेवृश्चिक ८ ॥ मूलंचपूर्वाषाढउत्तरापाये
धन ९ ॥ उत्तराणांत्रयोपादाअभिजितश्रवणधनिष्ठार्द्धंमकर १० ॥ धनिष्ठार्द्धं
शतभिषापूर्वाभाद्रपदपादत्रयंकुंभ ११ ॥ पूर्वाभाद्रपदपादमेकंउत्तराभाद्रप
देरेवत्यंतेमीन १२ ॥ अथलग्नांकराशिः ॥ आलामेष १ उवावृष २ काछामि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ थुन ३ ढाह कर्क ४ माठा सिंह ५ पाठा कन्या ६ राता तुल ७ नोया वृश्चिक ८॥
मा धा धन ९ षा गा मकर १० गो शा कुंभ ११ दा चा मीन १२॥ इतिलघुराशि॥
मूल॥ तनु १ धनं २ भ्रातृ ३ चै ४ व सुहृत्सुत ५ पफल त्रिका ६ मरणं धर्मकर्माय
व्ययका द्दश राशयः॥ सप्तविंशति मानांच नवमिर्नव भिःपदैः॥ २॥ अश्विनी
प्रमुखानांच मेषाद्याराशयस्मृताः॥ २॥ अथतत्वादि [illegible] मानां बला
बलाविचार निर्णय तारातः शुभाशुभ फल ज्ञानार्थे ग्रहाणां [illegible] का व्याक्र
माद्दृष्टि निर्णयः॥ मूल॥ तृतीये दशमे पंच नवपंचमयो [illegible] र्पचाष्ट
मेतुर्ये सप्तमेविंशति स्तथा॥ ४॥ विश्वाल ग्रहदृष्टीनांमेष [illegible] ले॥
पंचविंशोपकंश्रोक्तं पादमेकं क्रमोच्यते॥ ५॥ आयेव्यये [illegible] केषेटो
नदृष्टयः॥ ३॥ टीका॥ पांचविश्वा दृष्टिकौ एकचरण १ क [illegible]॥
२० विश्वा लौ चारचरण जानिये आयका ह्वैये ११ व्यय [illegible]
लानकहै १ षष्टकहै ६ इन स्थानोमें काहूग्रहकी दृष्टि [illegible]
मूल॥ त्तृतीयेदशमेमंदो नवमे पंचमेगुरुः॥ विंशते वी [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेकुजः॥ ४ ॥ टीका॥ तीसरे ३ दशमे स्थान शनि श्च [illegible]
हस्पति और चौथे ४ आठवे ८ स्थान मंगल या प्रका [illegible]
सो २० विश्वा संपूर्ण हाहा कार जहां परे होत हो देषत है॥ [illegible]
कर्मविशोपकद्दोषः॥ मूल॥ रविवारे ए संयुक्ता यदा स [illegible]
यो॥ अमायां तत दा पृथ्वी रुंड मुंड च जायते॥ ५॥ टीका॥ [illegible]
की अमावस्या जो रविवारी होय तो पृथ्वी में रुंड मुंड होय॥ [illegible] अयना
त्रिगुणा मासा एक पंचाशत युताः॥ द लिता घटिका [illegible] त्रिगुण
वासराः॥ ६॥ टीका॥ मकर की अयन जो न दिन लगी होय [illegible] दिन से वर्त
मान दिन लौ जे महीने परे बीत चुके हो ते ई त्रिगुणो करत [illegible]॥ पंचास
वन और जो रहै सो अंक आधे करे जो रहै तितनी घरी जानिये॥ और म
हीनन ते अधिक जे ई दिन बढे होय॥ तिनको त्रि ३ गुनी कर के जो अंक हो
य तितने पल उन घरिन जोर कार तेही दिन को प्रमाण अर्द्ध या प्रकार
जानिये॥ और कर्क की अयन के दिन ते गनि के या ही गनित सो रात्रि प्रमान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

जानियै॥ परंतु उत्तरायण सूर्यविषै दिनवृद्धि होत है तहां दिन वनाइये॥ और द-
क्षिणायनमें रात्रिवृद्धि होत है तहां रात्रिप्रमाण वनाइये॥ ६॥ मूल॥ एकपक्षे यदा
जाताः तिथयश्च त्रयोदश॥ त्रयस्तत्र लयं यांति वाजिनो मनुजा गजाः॥ ७॥
टीका॥ जो एकपाखमें १३ तिथ होय तो मनुष्य घोडा हाथिनको नाश करे॥ ७
मूल॥ सूर्येंदुकृष्णवर्णत्वा दिनभं च त्रयं त्रयं॥ आदित्यश्च बु[illegible]शुक्रः शनिश्चं-
द्र कुजस्तथा॥ ८॥ जीवो राहुश्च केतुश्च होमं कृत्वा [illegible]चमवे॰

सू॰	बु॰	शु॰	श॰	चं॰	मं॰	बृ॰	रा॰	के॰
॰२	॰२	॰२	॰२	॰२	॰२	॰२	॰२	॰२
कृ॰	शु॰	शु॰	कृ॰	शु॰	कृ॰	शु॰	कृ॰	कृ॰
ने॰१०	श्रे॰	श्रे॰	ने॰	श्रे॰	ने॰	श्रे॰	ने॰	ने॰१०
सू॰	बु॰	शु॰	श॰	चं॰	मं॰	बृ॰	रा॰	के॰

क्रोकवधे संपतिर[illegible]॥ शुक्रेचे
वधनं प्राप्तः शनौ पी[illegible]पल॥ चंद्र
भवति वा नश्च भौमे [illegible]मवा[illegible]
गुरौश्च पर्मे कल्याणं [illegible]
राः॥ केतौश्च प्रा[illegible]
हतं॥ ९॥ टी[illegible]
होय तातन त्रतेतान तीनन तत्र सूर्यादि ग्रहको वाट[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2

केनत्तत्रलोगानियै॥ जोइहू रथग्रहके भागमे आनिपरैतोने [illegible]
होयतौशोक होयबुधके भागमे उतमसंपत्ति होय शुक्र [illegible] गते
कलामहोय शनितेपीडाहोय चंद्रतेपीडाहोय भौमते [illegible]
१०॥ गुरुतेविशेषकल्याणहोय॥ राहुते सर्वेहानिहोय केतु [illegible]
होय॥ याक्रमसैवान्हिचक्रकहाहै होमकेविचारकौ शुभ [illegible] हौल यत्र
मिलै तवहीनकरैतौकल्याकादाताहै॥ इतिहवनकेमे [illegible] मिनव
त्राणि शुभाशुभं॥ मत्ल॥ सैकातिथिर्वारयुक्तायुनाम्नाशेषेगुण [illegible] स्वान्हिवास:
सौख्यायहोमेशशियुग्मशेषेप्राणार्थनाशोदिविभूतलेच [illegible]॥ ति
थिवारजो एकत्रकीजे तामे एकऔरमिलावैफिरतीनकोभाग [illegible] जौती
नसून्यभागबचैतौपृथिवीमेजानियैसोसुखकोकरै एकबचैतौ स्वर्गविषै
जानियै सोप्राणकोसंदेहकरै॥ जोरवचैतौपातालमेजानियैतौलक्ष्मीको
नाशकरै॥ इतित्रिलोकअग्निवासफलं॥ मत्ल॥ प्रभवोविभव: शुक्ल: प्रमोदो
यप्रजापति:॥ अंगिराश्रीमुखोभावोयुवाधातातथैवच:॥ १३॥ बहुधान्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रमाथी च विक्रमो वृषभस्तथा ॥ चित्रभानुस्वभानुश्च तारकः पार्थिवो व्ययः
ब्रह्मविंशतिरित्येते सृष्टिरत्र प्रजायते ॥ टीका ॥ अब ३० संवत्सर कहते हैं प्रभ
व १ विभव २ शुक्ल ३ प्रमोद ४ प्रजापतिः ५ अंगिरा ६ श्रीमुख ७ भाव ८ जुवा
९ धाता १० ईश्वर ११ बहुधान्य १२ प्रमाथी १३ विक्रम १४ वृषभ १५ चि
त्रभानु १६ स्वभानु १७ तारण १८ पार्थिव १९ व्यय २० ये २० बीस संवत्सर ब्र
ह्मा की बीसी के हैं इनमें सृष्टि रचते हैं ॥ इति विंशतिः ब्रह्मा[illegible]॥ सर्वे
जित्सर्वधारी च विरोधी विक्रमस्तथा ॥ खरो नंदननामा च [illegible]जयस्तु जयो
[illegible] ॥ मन्मथो दुर्मुखश्चैव हेमलंबविलंबकौ ॥ १६ ॥ विकारी [illegible]प्लवश्च
शुभकृत्तथा ॥ शोभनश्च तथा क्रोधी विश्वावसुस्तथापरा[illegible]भवः क्रो
धपरो विष्णोरित्येवं विंशतिः ॥ टीका ॥ अब विष्णु की बीसी [illegible]
तू १ सर्वधारी २ विरोधी ३ विक्रमः ४ खर ५ नंदन ६ वि[illegible]
९ दुर्मुख १० हेमलंब ११ विलंब १२ विकारी १३ सर्वरी [illegible]
१६ शोभन १७ क्रोधी १८ विश्वावसु १९ पराभव २० ॥ इ[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूल॥ प्लवंगकीलकः सौम्यस्तथा साधारणोपरः॥ विरो[illegible]
परभावी प्रमाथैदः॥ आनंदो राक्षसश्चाथ नलश्चापिंग[illegible]तो
धिरोद्गारी रक्ताक्षो क्रोधनस्तथा॥ २०॥ क्षयकस्य रतश्चा[illegible]
शतिः॥ वत्सरः षष्टि राख्याता नामतुल्य फलप्रदाः॥ २१॥ टी[illegible]
वीसी कहते हैं॥ प्लवंग १ कीलक २ सौम्य ३ साधारण ४ [illegible] ५ परि
धावी ६ प्रमादी ७ आनंद ८ राक्षस ९ नल १० पिंगल ११ [illegible] सिद्धार्थ
१३ रौद्र १४ दुर्मुख १५ दुंदुभी १६ रुधिरोद्गारी १७ रक्ताक्ष १८ [illegible] धन १९ क्ष
यकृत् २०॥ इति षष्टि संवत्सर नामानि॥ मूल॥ मेषस्य वृश्चिक[illegible] शुक्रे वृष
तुलाधिपः॥ बुधः कन्यामिथुनयो कर्कस्य पति चंद्रमा॥ २१॥ स्वामी मीन धन
जीवः शनि मेकर कुंभयोः॥ सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः॥
२२॥ टीका॥ मेषराशि वृश्चिक राशि के स्वामी मीन॥ २ वृषतुला शुक्र क
न्या मिथुन के बुध कर्क के चंद्रमा मीन धन के गुरु मकर कुंभ के शनि सिंह
के स्वामी सूर्य जानिये॥ २२॥ मूल॥ कन्याराशि गृहं प्रोक्तं केतोश्च मिथुने स्मृता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टीका॥ कंन्याकेपति राकु मिथुनकाकेतु ॥इतिराशिस्वरू:॥ मूल॥ कार्त्तिका
द्विगुणामासागतास्वतिथिभिर्युता:॥ सप्तविंशतिभिर्न्नंवं विनलाद्रेकसंयुता:
२४॥टीका॥ कार्तिकके गत मासद्विगुणा कीजे पखवाते लेके तिथिजोरे॥
२० तामेको भागकीजे शेषअंकमे १ और जोरे अश्विनी से गनि नक्षत्रजाने
२४॥मूल॥ राहुनीच धनश्चैवकेतुस्तस्माच्च सप्तक:॥ २५॥[illegible]॥ धनका
राहुनीचताके सप्तमकेतु ॥मूल॥ वारेरूपतिथौ रुद्राघटी[illegible]शैवच॥
एकत्रिंशत्पलंदद्यात्सूर्यसंक्रमणो भवेत्॥ २५॥टीका॥ जो [illegible]नवनायो
चाहे तो पिछले साल की चाहिये कि सो संक्रांति के वा रके[illegible] अंक वार
को सो रतिथि मे ११ तिथ बढावे और घडिन मे १५ घरी[illegible]पलन मे:
३१ पल मिलाय के भाग पूर्वक शुद्ध करले इतो सो ही सं[illegible]
य॥ २५॥मूल॥ माघी हमी सपूर्व स्मिन् उदितो यस्मा[illegible]
सूर्य मंगले चतते व सेत्॥ २६॥ उदित:पश्चिमे भागेन[illegible]
शाहस्र येम घ्ये ल तत:चाल्तमितो भवेत्॥ २७॥ एकत्र[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जविग्रहे ॥ तीर्थयात्रा विवाहे च शुक्रदोषो न विद्यते ॥ [illegible]
हीनेमें शुक्र पूर्व दिशा में उदय होता है फिर ढाई २॥ महीने [illegible] आते
नहै फिर पूर्व दिशा उदय होत है ॥ २८ जो एक गाउं में बस [illegible]
बना मानिये अथवा म दुर्भिक्ष में राजविग्रह में विघ्न हो वि [illegible]
त्रा के विषे में शुक्र का दोष मन्मुख दाहिने का मानिये ॥ २८ [illegible] दोष
निर्णयः ॥ मूल ॥ दशार्द्रा द्याः स्त्रियस्तारा विशाखाद्या नपुंसकाः [illegible] ततश्च
मूलाद्याः पुरुषाश्चैव चतुर्दश ॥ २९ ॥ टीका ॥ आर्द्रा से १० न [illegible] की संज्ञा है
विशाखा आदि ३ नक्षत्र की नपुंसक संज्ञा है मूल आदि दे [illegible] नक्षत्र की पुरु
ष संज्ञा है ॥ २९ ॥ मूल ॥ स्त्रीपुंसयोर्महावृष्टिः स्त्रीनपुंसकयोः घ [illegible] स्त्री स्त्री
योः शीतलच्छाया योगो पुरुषयोर्न च ॥ ३० ॥ टीका ॥ आर्द्रा आदि दे ९ नक्षत्रये
वर्षा के है सो जो स्त्री पुरुष योग मिलै तो वर्षा अधिक होय ॥ और स्त्री नपुंस
क योग मिलै तो थोडी होय कहुं न वर्षे ॥ और जो स्त्री स्त्री के योग मिलै तो व
र्षा अधिक होय बादर की छांई बनी रहे ॥ ३० ॥ मूल ॥ उदयास्तगते शुक्रे बु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घश्चवृष्टिकारकः॥ जलराशिस्थिते चंद्रे पद्मांते संक्रमे तथा॥ ३१॥ टीका॥॥
जो न शुक्र उदय अस्त होय तौ वर्षा अधिक होय॥ और जो जल राशि का चंद्रमा
होय और पक्ष के अंत में संक्रांति परै तौ हू मेघ वरषै॥ ३१॥ मूल॥ चलसंगारं
को वृष्टिर्निर्धारा वृष्टिः शनैश्चरे॥ वारिपूर्णा मही कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः॥ ३२
गा टीका॥ जब मंगल की चाल हो तब मेघ वर्षै और शनि का [illegible] उदय अस्त
होय तौ जहां जहां वर्षा होय और तिन के पाछे गुरु होय [illegible] तो पृथ्वी
के विषै महा वृष्टि होय॥ ३२॥ मूल॥ बुध शुक्र समीपस्थः [illegible] कारी वी
मही॥ तयोरंतर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्॥ ३३॥ टीका [illegible] शुक्र ए
क राशि के होय तौ संपूर्ण पृथ्वी के विषें जलवृष्टि होय [illegible] एक राशि
के बीच में सूर्य परै तौ समुद्र हू को शोषै फिर वर्षा कहा [illegible]
भानोरग्रे भूमिपुत्रो जलशोषं प्रजायते॥ भानोः पश्चा [illegible]
भयप्रदः॥ ३४॥ टीका॥ जो सूर्य के आगे मंगल होय तौ [illegible]
तो सर्व शोष लेत है और सूर्य के पाछे होय तौ वर्षा [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिवर्षानद्रवा ॥ मेदाविग्रह चारफलं ॥ मूल ॥ कर्के [illegible]
चरिवाकरे ॥ पूर्वेवापश्चिमेवापिद्वारंकुर्याच्छुवेष्म [illegible] तो
कुंभ सिंह मकर इनराशिनकेसूर्यहोयतो जो घरव [illegible] के
श्च वापश्चिम द्दिशाकीजियेतोसोश्रेष्ठ है ॥ ३५ ॥ मूल [illegible] ३७ ॥
केवललेचापियदारवि: ॥ गृहद्वारंतदाकुर्यादुत्त [illegible] त्तरदक्षि
टीका ॥ जबकर्ककुंभमकरराशिनकेसूर्यहोयतो घर [illegible] वयदिमा
ला दिशाकीजैसोश्रेष्ठ है ॥ मूल ॥ धनमिथुनकेस्या [illegible] ॥ धनमि
नुमान्य ॥ नकर्तव्यंतदागेहं कृतेदुःखमवाप्नुयात् ॥ ३८ [illegible] ३८ ॥ इति
थुनकंन्यामीन इनराशिनकेसूर्यमेघ रवनावैतो दुःखहोय [illegible] ॥ शाख
ग्रहवारम्भहूर्तं ॥ मूल ॥ यदैकमासेग्रहणंजायतेशशिसूर्ययो: ॥ चंद्रस्
कोपलयंयांतितदाभयपरस्परं ॥ ३८ ॥ टीका ॥ जोएकमासविषेचंद्रसू
र्यकाग्रहणपरैतोको धतेराजाजालरिमैर: ॥ ३८ ॥ मूल ॥ यत्रोदितो
चग्रतोचधान्ममपालनाशको ॥ सर्वेग्रस्तौचंद्रसूर्यौदुर्भिक्षमरणप्रदौ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३९ ॥टीका॥ सूर्य चंद्र राहु केतु करि ग्रहण है ॥ फिर उग्रह होन लगो फिर ग्रसे
तो धान्य का अन्न राजा का नाश करै ॥ और सर्व ग्रस्त होय मनुष्यन को मृत्यु
भय होय ॥३९॥ ॥मूल॥ उपरागो यदा मेषे पीड्यंते वह्विजनाः ॥ कांबोजाश्च
किराताश्च पांचालाश्च कलिंगका ॥४०॥ ॥टीका॥ मेष राशि पै ग्रहण हो
य तो कांबोज देश अरु किरात देश पांचाल देश के कलिं[illegible] के मनु
ष्यकों पीडा होय ॥४०॥ ॥मूल॥ वृषे च ग्रहणे पीडा पशव[illegible]जनाः ॥
महांतो मनुजाश्चैव तेपी ड्यंति च सर्वदा ॥४१॥ ॥टीका॥ [illegible] ग्रह
ण परै तो पशुन को पीडा होय और पंथिन को पीडा हो[illegible] मनुष्यन
को पीडा ॥४१॥ ॥मूल॥ रवि चंद्र मसौ ग्रस्तौ मिथुने च व[illegible]
न्हिका मत्स्याज मुनातट वासिनः ॥४२॥ ॥टीका॥ मिथु[illegible]
ग्रहण परै तो देवांगना जो है तिनको पीडा होय [illegible]
शोक को प्राप्त होवै ॥ और जो वाल्हिके देश मत्स्य देश[illegible]
जनों को पीडा होय ॥४२॥ ॥मूल॥ कर्के ग्रहणे पीड[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ते॥ अंतरर्वेदवासिनां च तद्वाजस्थानिवासिनः॥ ४२॥ टी[illegible]
ण परेतौ अंतरवेदके औरस्वारदेश औरवमध्य दे[illegible]
य॥ ४२॥ मूल॥ सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिना[illegible]
नां मनुजानां च जायते॥ ४४॥ टीका॥ जो सिंहराशीका ग्र[illegible]
सिनको औरराजऔरराजपत्नमनुष्यनकोपीडाकले[illegible] च जाय
ल॥ कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुराणां च शालिनां॥ कवी[illegible] पुकरदेश
ते पीडनं तदा॥ ४५॥ टीका॥ जो कन्याराशिका ग्रहण परै[illegible]॥ मूल॥
औरध्यानको औरकवियनको औरलेखनको पीडा है[illegible] साधव
तुलायां सपरान्ते च वनश्रंते च ककाकयोः॥ कोकनं च परास्ये च प[illegible]
श्रयो॥ ४६॥ टीका॥ जो तुलाराशपरग्रहण परैतौ पश्चिमको का[illegible] दि
क औरकोकनदेश औरकायथनको साधनको सत्यवादिनको पीडा है
य॥ मूल॥ वृश्चिके ग्रहणे पीडा सर्पजातश्च जायते॥ औ[illegible]
लजोधेयकस्य च॥ ४७॥ टीका॥ वृश्चिकराशिपै ग्रहण परै तौ सर्वजातिन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सी·टी· को॥ औदुंबरदेश औरचौल देशकेमनुष्यनकोपीडाहोय॥ ४७ ॥मूल॥ य
दापरागे चापेचलदामत्स्याश्च वाजिनः॥ विदेहमल्लपांचालपीड्यंते भिषको
विदः॥ ४८ ॥टीका॥ धनराशिपरग्रहणपरेतो मत्स्यदेशको घोडनको॥
विदेहदेश मल्लदेश पांचालदेशकेवासिनको वैद्यपंडितनकोपीडाहोय
अतभयहोय विदेहदेशजनकपुर॥ ४८ ॥मूल॥ मकरेग्र [illegible] डानीचा
नांमंत्रवादिनां॥ स्थावरंजंगमानांच चित्रकूटप्रमंत [illegible] ॥टीका॥
जोमकरराशिपरग्रहणपरै नीचलोगमंत्रवादी औरस्था [illegible] जोहै व
न्नादिकजंगमजोहै पशुनकोपीडाहोय॥ अतचित्रकूटदे [illegible] कोपीडा
होय॥ ४९ ॥मूल॥ कुंभेचैवोपरागेच पश्चिमस्थेच वर्वरे [illegible]
मेतःपीड्यंतेच कृधामिदाः॥ ५० ॥टीका॥ जोकुंभराशिन [illegible]
वैत औरपश्चिमदेशकेमनुष्यनकोपीडाहोय औरवै [illegible]
औरस्वर्बुददेशकेमनुष्यनकोनानाप्रकारकाकष्टहोय [illegible]
है॥ ५१ ॥मूल॥ मीनेपरागेपीड्यंतेजलद्रव्यानि सागर [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

लोकाप्रेचपद्याप्रतिरूप्यः॥ ५१ ॥ टीका॥ मीनराशि [illegible]
जीवश्रोरजलाशयउपार्जितद्रव्यतेजिनकीसजी [illegible] आते
जननकोपीडाहोय॥ ५१ ॥ अतियहणफलं॥ मूल॥ द [illegible]
नीहारेचभयंकरः॥ विद्युत्पातोऽनिदाहेचपारिवेषश्चरो [illegible] ॥ [illegible]
र्घाहोऽग्निभयंकुर्यान्निर्घातोनृपभीतिदः॥ कुंजावा [illegible]
रभीतिप्रदायकैः॥ ५२ ॥ ग्रहयुद्धंराजयुद्धंकेतोहृश्येतथै [illegible] ॥ [illegible]णाते
महावृष्टिःसर्वदोषविनाशिनी॥ ५३ ॥ टीका॥ ग्रहदेख [illegible] कहतहै
जोआकाशतेधूरिवर्षै विनावायुके योग मकलनात [illegible] मनुष्यन
कीक्षयहोय राजनकोभयहोय॥ औरविनावारविजली [illegible] तोओ
ग्निकाभयहोय औरपरिवेषकहै सूर्यकेमंडलऊपर आवत [illegible] भासचक्र
सोदीषैतोअग्निभयहोयरोगहोय॥ ५२ ॥ जोदिग्दाहहोयतोजोदिशा
नविषैकिंचितरात्रगयेपर्यंत अग्निलागी कैसीअरुणताद्देषाइतौ॥
अथवातातारवत्ससाऊंतो अग्निभयहोय औरनिर्घातकहै सकावा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी॰टी॰ दरगर्जे तो राजानकाभयहोय॥ औरऊंडावायु चलैमहाप्रचंडशब्दजा
सौं वृक्षादिकटूटैतौ चोरनकाभयहोय॥ ५४॥ इतिधूलिवर्षा उत्पातफ
लं॥ मूल॥ श्रुतिष्विमामाद्रितेवकेतौ रुमाम्यालंकपालकं॥ मघऐंपाचकिरा
तेशकृत्तिकार्यांकलिंगकं॥ ५५॥ टीका॥ जोश्रुतिष्विपैकेतुहोयतौ लंका
केराजाकोपीडाकरै मघाणीपैउदयहोयतौ किरातदेशके [illegible]कोपी
डाकरै॥ कृतिकापैहोयतौ कलिंगदेशकेराजाकोपीडा[illegible]॥ मूल
रोहिण्यांशूरसेनेसौ म्गोकाशीनराधिपं॥ आर्द्रेजल[illegible]मके
सौपुनर्वसौ॥ ५६॥ टीका॥ रोहिणीपैकेतुहोयतौशूरसेन[illegible]कोपीडा
करै मृगशिरकेहोयतौ काशीकेराजाकोपीडाकरै॥ [illegible]होयतौ
जलकेजीवनकोपीडै॥ ५६॥ मूल॥ पुष्येचमगधा[illegible]
काधिपं॥ मघायांवंगनाथंचपूर्वायांपांडुनायकं॥ ५[illegible]
यतौमगधदेशकोपीडै॥ अश्लेषाकेहोयतौकाशीकेरा[illegible]
होयतौवंगदेशकेराजाकोपीडै॥ पूर्वाकेहोयतौपां[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पीडे ॥ ५७ ॥ मूल ॥ उत्तरायिमांत्स्यंहैतिहुत्तरापाल्गु [illegible]
पतेहस्ताचित्रायांकुलमभजां ॥ ५८ ॥ टीका ॥ उत्तरा [illegible] आतो
राजाकोपीडै ॥ हस्तमेंदंडवनकेराजाकोपीडै चित्रामे [illegible]
कोपीडै ॥ ५८ ॥ मूल ॥ स्वात्यांकाश्मीरकांबोजभूपतीना [illegible]
स्वाकुकुरदेशानांविशाखायांविनाशकः ॥ ५९ ॥ टी [illegible] के
यतो काश्मीरकांभोजदेशपतिकाविनाशकरै जोवि [illegible] होयतो के
इक्ष्वाकदेशकौरवदेशकेराजानकोनाशकरै ॥ ५९ [illegible] कवयोय
स्वनाशंचसावेभौमतथैदुकं ॥ अंधमद्रकनाथंचमूल [illegible] मत्स्यक्षि
तं ॥ ६० ॥ टीका ॥ अनुराधातेउग्रदेशकेराजानकोनाशकरै [illegible] शकेहो
यतोसर्वपृथ्वीकेपतिकोपीडै ॥ मूलके होयतौअंधमद्रकदेशकेराजा
कोपीडै ॥ ६० ॥ मूल ॥ पूर्वाषाढेकाशिराजउत्तराषाढकेतथा ॥ पौंड्रयशैव
वैदेशश्रवणेकेनायेश्वरं ॥ ६१ ॥ टीका ॥ पूर्वाषाढकेहोयतोकाशीकेरा-
जाकोपीडै उत्तराषाढकेहोयतो पौंडुदेशशैवदेश औरजनकपुरकेरा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाकोपीड़ाकरै॥ श्रावणके होयतौ कैकयदेशके राजाकोपीड़ाकरै॥ मू
ल॥ वसौ पंचनतथाधीशं वनगौसिंहलेप्ववै॥ पूर्वाभाद्रपदावंगानैमिषेशं
तथोत्तरं॥ टीका॥ धनिष्ठाके होयतौ पंचनद देशके राजाकोपीड़ै॥ श
तभिषाके होयतौ नैमिषारण्यके राजाकोपीड़ाकरै॥ तथा औरहू उत्तरदिशा
के देशपतिनकोपीड़ाकरै॥ मूल॥ रेवत्यामुदितो केतौ किरा[illegible] ॥ तिर्व
घात॥ धूम्राकारः सपुच्छस्यकेतौ विष्णुस्यपीड़कः॥ [illegible] शे
तीके केतु उदय होयतौ किरातदेशके राजाकोपीड़ै॥ औ[illegible] ॥७२॥ टी
धूम्राकाराकारपूंछसीहोय ताकोपूंछ [illegible] तौ [illegible]
पमेउदयकरैतौ समस्तविष्णुकोपीड़ाकरै॥ इतिकेतूदय[illegible]
मानभौमार्किवारेषुकार्तिकेइन्दवयोभवेत्॥ आयुष्मान्[illegible]
नाशोपशुक्षयः॥ ६४॥ टीका॥ कार्तिककीजो अमावास[illegible]
वारहोय औरत्वातिनक्षत्र आयुष्मानजोगहोयतौ [illegible]
युद्धादिक उत्पात अधिकहोय औरपशुनकोक्षयहो[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गो च मेषाद्याश्चत्वारः स्मृता निशाकरः ॥ ते विना मिथु[illegible] प्रातो-
धे: ॥ ८५ ॥ टीका ॥ धन मकर मेष वृष मिथुन कर्क इन [illegible]
है ॥ ८५ ॥ मूल ॥ शीर्षोदयाश्च चत्वारः सिंहाद्याः कु[illegible]
मीन लग्न बली रात्रौ तथा दिने ॥ तदर्द्धे द्विगुणां कृत्वा राम[illegible]
म नि मिश्रं हरेच्छागौ शेषांके चलमते फलं ॥ ८७ ॥ टीका ॥ [illegible]
रके ४ राशे औ कुंभ इन की शीर्षोदय संज्ञा है ॥ मीन [illegible] ८८ मैं रह
वान है ॥ ८८ ॥ जे हाल रन मैं जो नद्दा लगौ तिसकौ [illegible] राशि पोग
३ घटाय के फिर ७ को भाग हरिये जो शेष बचे तो फल [illegible]
मूल ॥ चंद्रे वेदे च दुर्भिक्षं सुभिक्षं युग्म बाणयोः ॥ रामे रसे च [illegible] सूक्ष्म
मल्पप्रकीर्तिता ॥ ८९ ॥ टीका ॥ जो १ ॥ ४ ॥ शेष बचे तो दुर्भिक्ष का है औ
२ ॥ ५ ॥ बचे तो सुभिक्ष होय और ॥ ३ ॥ ६ ॥ बचे तो साधारण भाव रहै और
जो शून्य ० बचे तो बजार नमें सकल वस्तु को तार है और मद्नी कम सूक्ष्म
है ॥ ८९ ॥ इति समयप्रकाश ॥ मूल ॥ अतीचारोगते सौम्ये क्रूरे वक्रत्वमागते ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाहाभूतंजगत्सर्वंरंडमुंडंचजायते॥६९॥टीका॥जोसोम्यग्रहस्वाती
चारमेंहोय औरपापग्रहवक्रीहोयतौ सर्वसंसारमेंहाहाकारहोय औरा
पुरुषतेरंडमुंडहोयगे॥६९॥इतिस्वातीचारफलम्॥मूल॥मेत्रसी
करणेचैत्रेवद्दुःखफलंप्रदा॥वैशाषेरत्नलाभस्याज्येष्टेचमरणंध्रु
वं॥७०॥टीका॥जोचैत्रमेंदीतालतौवड्दुःखहोय वैशाषमें
रत्नलाभहोय ज्येष्टमेंमरणहोय॥७०॥मूल॥आषाढे...॥श्रा...
कर्त्रेश्रावणेचप्रुभावहं॥प्रजाहानिभाद्रपदेस्वेष्टलभ...॥७१॥टी
का॥आषाढमेंदीतालेयतौभ्राताकानाशकरै॥श्रावण...तौसु...
है भादोमेंदीतालेयतौप्रजाकानाशहोय॥आश्विन...सब...
कीसुखहोय॥७१॥मूल॥कार्तिकेधनवृद्धिःस्यात्मा...
पौषेतज्ञानहानिस्यान्माघमेधानिवर्धनं॥७२...
तलेयतौधनकीवृद्धिहोय॥आगहनमेंमंत्रसुनै...
सुनैतौज्ञानहोय॥माघमेंसुनैतौज्ञानकीवृद्धिहो...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

णेमुखमेषो भाग्यं सर्वत्र परिकीर्तिता ॥ दीक्षाकर्म फ [illegible]
माशुभं ॥ ७३ ॥ टीका ॥ फाल्गुण मे दीक्षा लेय तो [illegible] [illegible] जाती
७३ ॥ मूल ॥ मासं शुक्रबुधादित्याः सार्द्धं चंद्रं दि [illegible]
पत्तजीवः वत्सार्द्धं वर्षद्वयं शनि ॥ राहुकेतु सदा भ [illegible]
७५ ॥ टीका ॥ शुक्र बुध सूर्य ये ग्रह १ मास एक रासि [illegible] ॥ [illegible]
द्रमा २॥ दिन एक राशि पै वर्षद्वयं शनि रहतहै और [illegible] मा रह
ना एक राशि पै ठहरतेहै और ब्रहस्पति १ वर्ष [illegible] शिपै रह
तहै शनिश्चर २॥ वर्ष एक राशि पै रहतहै राहु [illegible] वर्ष [illegible] स्तुते
तहै ॥ इतिग्रह राशीभुक्त फलम् ॥ मूल ॥ मघे त्रीदुसप्तमे [illegible] पनो
वरः शिरोमत्सुदं ४ वाहौ नाग [illegible] ॥ ५ ॥ मोगामजैजागमे [illegible] चु
शायेत ॥ दो २ दो २ आगामलेकल [illegible] अमंह नं तत्र दुत्ता णे ॥ [illegible] चु
ल्ला [illegible] काविचारणे लघिषणे [illegible] कंच गागोदिमि ॥ १ ॥ इतिश्रीकाशी
नाथकृतौ शीघ्रबोध भाषाटीकायां सनामिकं चतुर्थप्रकरणं ॥ ४ ॥ संव

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शी·टी· तू ॥ ९८ ॥ २० ॥ लिखितं वैस्नव मंगलदासजी ॥ व्हाद्गदावल्लुनाम ब्राम्हणनेलिखाया ॥ शुभमस्तु ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ॥ सर्वस्यत्वाक मद्येतु स्तजीसत्ता॥ कसंभव:
सर्वेन सत्य तीस्तजी॥ नस्तजीसर्वस्य ते॥१॥
चतुर्थे दण्डरागं च॥ अष्ट राग वर्पं चमे॥ षष्ठे
चतुर्थं [illegible] च ४ उपरागं च स्मृते॥ अष्ट [illegible] तं
कांतु॥ नवमे ग्रह रादूर्ध्वं॥ दश [illegible]
यांतु ७ स्तपुस्तानकमीपी॥ श्री ७गा [illegible]
सुललिते; नामे; सुधास्फुरिते; दी [illegible]
त्तासु विपुले; दजै; पंचेयने; सर्वे [illegible]
रकातया ज्ञानसमालविते इर्यं॥ [illegible]
जगति समस्तेना गाहुयं ७ शादुल [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओं श्री गणेशाय नमः विश्वम
स्य
स्य तु स्म अतुंलाभ पव रस्य नारी
जो ज्ञो भावे स्वाम दृष्टि जितो
स्य तस्य तास्याधर्व दि ची प पे र व
स्य हानी ; २ ॥ नेत्र र व अप्लु मे भावे
वर्णनुलाभ तो पुत्र पुथकानन
कार्कि स्य पत्नी चं दृष्टा ; ८ ॥ स्य नानभावानजी
को सनन मकार कं न्य यो १२ संघ स्यौन पत्नी
में ये का यंते गणो कौतम नैना २ प्लौ का एमम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

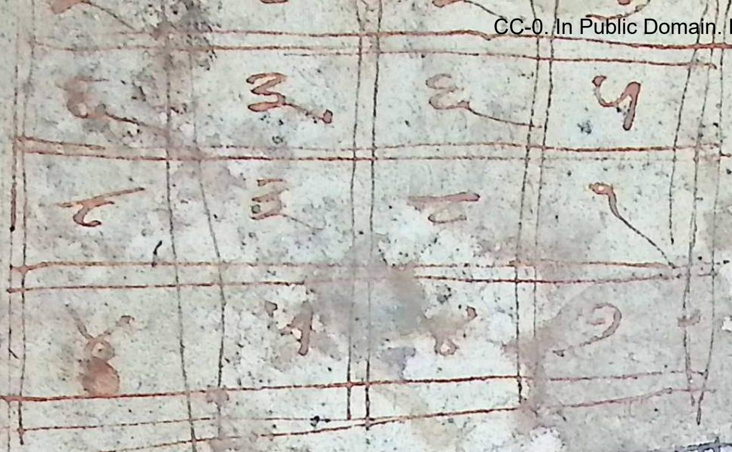

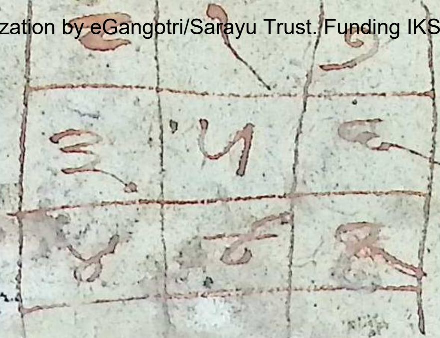

सप्तगयागािकोपतंत्रौ जानवे ।पे
तुर्तवादिता।सश्च वेदाघटिकद्दूय
वेश्रबूंद्दू यजकार्यसिद्धिः १ः २

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

जन्मेर [illegible] ॥ [illegible] पादेषु [illegible] चनवमर [illegible] श्रीस [illegible] चतुष्पादं

पादपु ॥ चतुर्थे [illegible] तिलोहा पादौ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] चैरे

तलदानी विनश्यति ; चौरैनागि [illegible] ; [illegible]

तीथ्यां [illegible] नामा [illegible] चर्णि [illegible]

[illegible] ; चलन्ति [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] संयुक्तं [illegible] शिव [illegible]

[illegible] पात्रं [illegible] गाम [illegible]

[illegible] संस्थापयेत् [illegible] नादीनन

[illegible] ; पूर्वी [illegible] ; [illegible]

[illegible] प्रथम [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh